



I SSN 2229-547X VI DEHA

रिदेह १३४ म अंक १३ सितम्बर २०१३ (वर्ष ७ मास ७९ अंक १३४)



ई अंकमे अछि:-

डूच-नीच- रैचन ठाकुर

भाषापाठ बचना-लेखन -[मानक मैथिली]



रिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SI TE

रिदेह अ-पत्रिकाक सब्छा प्रवान अंक (ब्रेल, तिवहता आ देरनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

रिदेह अ-पत्रिकाक सब्छा प्रवान अंक ब्रेल, तिवहता आ देरनागरी कपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

रिदेह अ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक





रिदेह आब.एस.एस.फीड एनीमेटेबलकें अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाउ ।





Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका बिदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानकीपिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

 र्नाग "लेखाउठ" पब "एड गाडजेस्ट" मे "ह्रीड" सेलेक्ट कए "ह्रीड यू.आर.एल." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठागप केनासँ सेहो रिदेह ह्रीड प्राप्त कए सकैत छी। गुगल रीडरमे पढ़ौ लेल <http://reader.google.com> पब जा कऽ Add a Subscription रैठन किक कक आ खारी स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट कक आ Add रैठन दौड।

 [Join official Videha facebook group.](#)

 [Join Videha google groups](#)

 रिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट सांघ

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पारि बहर छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सब पब जाड। सर्गहि रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-प्रबान अँक पढ़ू।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रँकमे ऑनलाइन देरनागरी ठागप कक, रँकसँ कॉपी कक आ रँड डॉक्यूमेन्टमे पेस्ट कए रँड फागतकेँ सेर कक। विशेष जानकारी लेल ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)



Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. रिदेहक प्रवान अंकि आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ होमपेज सभक फाइल सभ (उच्चावर्ण, रैंड स्वरु सार आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करबैक हेतु नीचाँक लिंक पर जाऊ ।

VI DEHA ARCHI VE रिदेह आर्काइव



जातिबन्धन पूर्ण महकरी रिद्यापति । भारत आ नेपालक माईमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कारहिँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शिवक पारवर्षि कारक मूर्ति, एहिमे मिथिलासभमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि । मिथिलाक भारत आ नेपालक माईमे पसबन एहि तबहक अन्याय प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र, अभिलेख आ मूर्तिकलाक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण सर्गति रिदेहक सर्च-एजेंस आ न्यूज सर्भिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसर्सागट सभक समग्र संकलनक लेल देखु रिदेह सूचना सर्पक अन्वेषण

रिदेह जानबुक्त डिस्कसन होबमपर जाऊ ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबुक्त) पर जाऊ ।



डुँच-नीच

रैचन ठाकुर

डुँच-नीच

नाटक

रैचन ठाकुर

पहिल अंक

पहिल दृश्य-

(स्थान- मंगल मल्लिकक घर । दवरैज्जापव मंगल अपन पनी पवनीक संग पविरावक स्थितिक सरिन्धमे रिचाव-रिमर्श क२ बहल छथि । दूनु गोष्ठे पथिया रीनि बहल छथि ।)

मंगल- गौ, हमर रौडक जमाना आ हमर जमानामे रौड फरक देखै छी । ओना कोनो रैसी दिन नै भेलै झगला हुनका । रौड रैसी तँ पन्द्रह रँथ भेल हेलनि । सप्रह नै ?

मवनी- ओह, पनबहे रँथ भेल हेलनि । रैसी भेल हेलनि । अँह हो, सतासीमे रौठा आएन बँह आ अठासीमे भुमकम । ओही भुमकममे नै पुरैबिया घरक भीत खसलै आ ओहीमे दरौए गेलथिन । एकोरैब शिरदरौ नै फेलथिन ।

मंगल- तबो रौड मन बँह छौ गौ । ठाँके कह छै ।

मवनी- मन नै बहत तँ । अमकथ छी तगसँ की । ओहो घटना सब लोक रिसबि जेते । हबदम पी क२ रूँच बँह छह तँ की मन बहतह । ओना आग सुषवर देखै छिथ ।

मंगल- की कवरै । तूही कह । जखनि सुगर चवरैले जाग छिथ तँ ओकरा संगे हबदम दौगते बँह छिथ आ कए गाम रौआग छी से कोनो ठेकान नै । रौड थाकि जाग छी । खकान मेष्टरैले पीथ छी आकि कोनो सथे पीथ छी । कहियो-कहियो तँ तछँ जाग छै । बुनिते हेरैही कोन रौसक दाहा होग छै ।

मवनी- से तँ ठाँके रौड भीव पड़ छै । झुदा हम कहाँ पीथ छी ।



- मंगल- तू मोगी छीही आ हम मबद छी । हमबा ओहन सँघत छै, तोबा नै छै ।
- मबनी- ओहन सँघतमे किथए बँह छुह ?
- मंगल- तँ हबदम तोरे लग बहियौ, लोक नीक कहत की ?
- मबनी- खवाप सँघतसँ रँढ़ा या हबदम हमरे सँगे बहह आ जे कह छिथ से कबह ।
- मंगल- (थिसिया क२) गै मोगी, हमब रँहू भ२ क२ हमरे सिथरै छै । गै राँडक जमामामे घैनाक-घैना ताड़ १ पीछ छेलौं दुनु राँपूत । ओग हिसारसँ अथनि नोगसो रँबरँबि नै ।
- मबनी- (प्रसन्न मन) किथए थिसियाए गेलहक ? हम कोनो अपनने कह छिथह ।
- मंगल- किथए नै थिसियरौ ? स्वगब हम अपनने जे चबरै छिथ की ?
- मबनी- नै, से तँ पूरा पविरावने । कनी अपन देहो दिस तकहक, केहेन नगै छुह पलीरँना दक पीछत-पीछत ?
- मंगल- केहेन नगै छै तोबासँ नीके । तूही नै पीछ छै तँ कहाँ मोछा क२ हाथी भ२ गेलौं ?
- मबनी- रँसी मोछेनाग सेहो खवाप होग छै । से रँमरक पहिने दूररे-पातब बही झुदा नीरोग बही । आ नीक ।
- मंगल- तूही कह, केना नीरोग बहरै ? (शान्त भ२)
- मबनी- अपन काजमे लग्न बहक । जे किछ क२-साग भगरान देखिन ओकबा भवि मन चाहक । ताड़ १-दक नै पीहक । रँसीसँ रँसी साह-सुखा बहक । नीरोग बहरै कबरँह ।
- मंगल- एते दिन तँ नै पढ़नियो । झुदा आग प्रछै छियो- तू पढ़न-लिखन छै की ?
- मबनी- नै नै, अमकथे छी ।
- मंगल- तँ एते केना रँमै छिही ?
- मबनी- देखै छहक, हम जल्दी रँबाम पढ़ छी । एक दिन स्वगब चबरैने गेलौं तँ हाग असकूनपव एगो झनसा पाँच हाथक छेलै, उ भाषामे यह सब कह छेलै । कनी कार ठाढ़ भ२ सुनलौं । रँड नीक लग्न । ओहिना कबए लगलौं । रँड फेदा रँमागए । पाँच-छह रँथ पढ़का गप छिथ । जखनि स्वगबपव पियान गेल तँ स्वगब रँड दुब चलि गेल छन । दौग क२ स्वगब लग गेलौं । भाषा छुटि गेल ।
- मंगल- आबो जे किछ कहरै से तँ मानि जेरौ । झुदा ताड़ १-दक रँना बहह नै हेतै ।



- मवनी- से किथ, ताड़ १-दाक थमृत छिई ?
- मर्गन- रानव जानथ आदी सुखाद । तू नै पीई छै तँ रैसी बुवाग छै । जखनि पीने बँह छी तखनि दुनियाँमे हमवासँ नम्वर के बँह छै । कियो नै । रँड मन नगै छै ।
- मवनी- रँड मन नगै छह तँ ओकरा तियागर नै हेतह तोबा ?
- मर्गन- ऊँह, ओग रिना हमबा बहन नै हेतौ । खल्ल-पानि रिना बहियो सकै छियौ ।
- मवनी- एगो कबह, दाक साफे छोड़ा दहक आ साँनहे-साँन एक बुछ्छी ताडीएँ पीथह । अपना सब गवीरँ छी ।
- मर्गन- हँ, रँड रैसी तँ ग चलेरँना छै । अछुमे हमबा रँड रँवदास कबए पड़त । **थैब**, ग कवरौ ।
- मवनी- तँ तौहब गज्जत डोममे जकब रँठतह । फेब रौखा दुखनक पठ ११पव सेहो पियान देरँहक किने । एक दिन बस्तामे मासूँब कँह छेरथिन- अहाँक रौखा रँड चन्सगब अछि । एकबा मनसँ पठ १६ ।
- मर्गन- से तँ ठीके कँह छै । छोड़ १ मनसँ पठत-लिखत तँ सबकाबी नोकरी अरँस हेटे । अपना सबकेँ सबकाब छुँट देने छै । झुदा आग-कान्हि पठ ११मे रँड खचा नगै छै । ओते खचा कतएँ अनरीही ?
- मवनी- हिम्वत नै हबह । नै तँ सबठाँ काज चोपठ भँ जेतह । तौहब दाकक खचासँ रौखा पठाँ नेत । दब-दुनियाँमे एगो रैँष अछि । रैँषक कोनो चिन्ते नै । उ सब अपन-अपन सोसबागबमे अछि । रौखाकेँ पठ १रँह । रँड सथ लगल अछि । रँड लोककेँ पठ १त देखे छिई ।
- मर्गन- (झुस्की दैत) एगो रात कहिँ दुखन माए ?
- मवनी- कहक नै ।
- मर्गन- गै एक दिनका भोज कोन आ एक दिनका बाजा कोन । एगो ठीका कोन, एगो रैँष कोन ।
- मवनी- से की ?
- मर्गन- मन होगए एगो आरो रैँष होगतए ।
- मवनी- छपह-छपह लोक स्नतह तँ की कहतह ? आठ गो छैहे से रिसवि गेलहक । खाली जनमेने होग छै आकि ओकर पतिपानो कबए पड़ छै । रैँष-रैँषी दुनूकेँ अपना-अपना जगहपब रँड महत छै । कियो केकवासँ कम नै छै । तोबा तँ एगो रैँष छह । केकरो किछ्छो नै बँह छै से । उ केना बँह छै ?



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मंगल- से तँ ठीके कहै छै । खैब, छोट रैषा-रैषीक नपौड़ १ । छोटकेँ मनस
पढ़ एरै आ रैडका हाकिम रैनएरै ।

मबनी- थ रै रैजनह एक नाथक गप ।

पठाक्षेप ।



दोसब दृश्य

(स्थान- मंगलक घब । मंगल कोनियाँ रीनि बहल छथि ।)

मंगल- हमब सबरैछाँ उपीमे रैडका हाकिम छै । अस.डी.ओ हँ हँ अस.डी.ओ । रीना पढ़ने भेल तेते । सोसबागब जाग छी तँ हुनकर मकान देखि कऽ चकरिदोब नगि जागए । हमरो रैछाँ पढ़ा-लिखि कऽ ओहने हाकिम रैनते ।

(दूधनक प्रवेश)

दूधन- रौड, कान्हि हर्म भरेते । कान्हि अंतिम डेष्ट छै । पाँच सए ठाका नगते ।

मंगल- (आश्चर्यसँ) रौप रे रौप, पाँच सए ठाका । पाँच सए ठाका । दु-चारि दिन पछाति भवरौही तँ नै तेते ।

दूधन- तेते तँ, झुदा हागन नगते । हागन नऽ कऽ चाबम दिन धरि हर्म भरेते । एक सए ठाका हागन नगते । दूनु मिना कऽ छह सए नगते ।

मंगल- एते पाग कहियो नै नगर छन । मैथ्रिकमे रैड खबचा नगै छै रौखा । पेष्टकेँ देखै केँ हाबम भवग देखै । **खैब**, तँ असकून जो । कनी माथकेँ पठा दिहनि ।

(दूधनक प्रस्थान)

मत तँ होगए रैछाँकेँ खुम पढ़ा-लिखा रैडका हाकिम रैनैरिते । झुदा रीना मात्रक कमार केना तेते ।

(मंगल माथपब हाथ नऽ कोनियाँ रीननाग रैन कऽ दग छथि । मबनीक प्रवेश ।)

मबनी- की कहनकह ? (मंगल कनीकार गूम बह छथि ।)

की कहनकह ?

मंगल- की कहरौ, रौखाकेँ हाबम भरेमे छह सए ठाका नगते । से किछ नै हुवागए । की कवरौही ? कहिन ईरेब छोड़ा दगले । पौक सान देखन जेते ।

मबनी- पवियास कबहक नै । नै तेते तँ रूमन जेते । घबमे छिष्टा आ कोनियाँ छै नै, ओकरे रौचि कऽ दऽ देरै । छह गो छिष्टा छै आ पाँच गो कोनियाँ छै । एक-एको सएमे छिष्टा रिकते आ तीसो-तीसोमे कोनियाँ तँ छह सए रैसै भऽ जेते ।

मंगल- खैब खैरौही की आ रौसरौनाकेँ कथा देरौही ?



- मवनी- कहूना क२ दिन-ग्रदस क२ जेनेँ आ राँसरेता मातिककेँ नेहोवा-रिनती क२ जेनेँ । कहरेनि एना-एना रात भ२ गेलै मा तिक । उ अरसस मानि जेथिन ।
- मंगल- तू रैसी बूनेँ छिही । हुनका हम चिन्ह छियनि । उ मक्खीचूसक ओगध छथिन । ताड़ १०रातीकेँ अमूका ना कहने छेलिई । पचास ठाका ओकरो भ२ गेलै ।
- मवनी- हुनको कहिक एना एना भ२ गेलै । से कनी दिन थम्ह ।
- मंगल- रैस, कहरे । गै, कोनियाँ-पथियाक कोनो गिबहत भँजियाएन छौ की ?
- मवनी- एक दिन आहए राँसरेता मा तिक कहने छेलथिन किछ कोनियाँ-पथिया दगले । जाग छिई हुनके द२ देरनि ।
- मंगल- जो, मातिकसँ पठेतो की नै पठेतो ।
- मवनी- किछ नै पठेतै । अपने पसारी छथिन । नख-छह कए क२ द२ देरनि ।
- मंगल- राँसक पाग काँटि लेखुन तर की कवरिही ?
- मवनी- पएव-दावही पकड़रनि जे ईरेव नै लेखुन । रौआकेँ हावम भरैले पाग देरौक छै । कनी-मनी नगाए क२ देखुन सपाए देरनि ।
- मंगल- जो, सर द२ जो । नै तेतो तँ ओम्हरेसँ ओम्हरे हँष्टिया चलि जगहै । आकि हमहुँ चलियो ?
- मवनी- तू कथाने जेरैह । एक आदमीक काजमे दु आदमी किछ रैवदेरैह । फेब सगरौ चबरेले जागक छह नै ।
- मंगल- हँ से तँ ठीके । देवी नै कब सर द२ जो ।
- मवनी- रैस, जाग छिथ । (प्रस्थान)
- मंगल- जग दिनसँ दक पीनाग छोड़ा देनौ तग दिनसँ कोनो काजमे मन नै नगैए । कहूना-कहूना काज-उदम करै छी । लोक सबकेँ पीरित देखै छिई तँ मन चष्टपष्ट कब नगैए । झुदा पढ़ागक आतिव हम एते मजबूब छी । के की न२ क२ आधत आ की न२ क२ जाधत । खेनहा-पीनहा नै संग जाधत आरो कथी । जदी अपना नग पाग बहितए तँ आग कनी देखतीरि दक दिस । एक्काँ कोनियाँ रीकि जैते तँ दक जोग भ२ जैते । ई रीचमे कोनो साब गौहकी नै नै आधत । भगरानो हमबाने अथनि रँड दूब गेलथिन है । कहिया एथिन कहिया नै । दाकरता साब तेहन खच्चब छि से एक्का ठाका उधारी नै देत ।
- (कोनियाँ नगले बुधनक प्रवेश ।)



- बूधन- (प्रसन्न भन्) की हो मंगल कक्षा, एगो कोनियाँ लेरौक छेत्त। छै अपना नग ?
- मंगल- हाथेरौता द२ देरैह । कनीए बहि गेलौ । रँटा यामँ रीनि दग छिथ ।
- बूधन- पाग केते लेरौक ?
- मंगल- कोनो हाथी-घोड़ क दाम नगतह ? पचासे ठाँका द२ दिहक ।
- बूधन- रँड रैसी कह छुहक । उहो दिन हठियापव ईसँ नम्हव आ डिजेनगव रीस ठाँकामे रिकाग छेलौ । पाग नै बहए नै लेलौ । सोचलौ गामपव अपन डोमसँ लेरै तँ सस्तामे रहत । झुदा तूँ रँड महग कह छुहक ।
- मंगल- की कवरै मातक महगाग केते रँटा गेलौ । रौसो महगामे कनीए पड'ए । खेव मेहनतो रँड नगौ छै । नारैह नै जे देरैक से । तूँ हमव पसावी छिथ नै ।
- बूधन- (रीस ठाँकी निकालि क२) लेह, हम एतरे देरैह ।
- मंगल- (रीस ठाँका न२ क२ प्रसन्न मन) गरु एगो पलीक पाग नै ? दसो गो आरौ दहक मातक ।
- बूधन- आ नै हेतह । देरैक तँ दहक नै तँ जाग छी हठियापव कीनि लेरै ।
- मंगल- से तँ नै हेतह मातक । हमरा तोबापव दारी छिथ । आरै पाग दहक की नै दहक । झुदा घुमि क२ नै जाए देरैह । (गिड़गिड़ गत) हे हे, कक्कारै अपना दिससँ थाग पीछे पाँचो ठाँका दहक मातक ।
- बूधन- जा तूही जीतनह । पाँच गो थाग पीछे दग छिथ । (पाँचैकही बूधन मंगलकेँ देनथिन आ उ पाग न२ कोनियाँ हुनका देननि । बूधनक प्रस्थान)
- मंगल- (प्रसन्न मन) भगवान रँड ठाँ छथिन । सरैक जोगाव नगरै छथिन । आग एगो पली पीरैठ कवरै । जे हेते से हेते ।

पछाँप ।



तेसब दृश्य-

- (स्थान- चन्द्रशे न्याक हरेली । अपन दानपब कबसीपब रैस सिकरेष्ट पारै छथि । दानपब चाबि-पाँचठा कबसी आ एगो छैरून नगर छन्हि ।)
- चन्द्रशे- (सिकरेष्ट मीमा क२ बथि थिसियागत) ओग डोमीनियाँके कहने छेनिई छिष्टा-कोनियाँ देरौक नैर । कहक नैने आधरँ माँ नक । से आग धरि अरिते अछि । धान सब बाग-छिन्नी होगत बँहए । गोरब-कबसी जतए-ततए पड़न अछि । सबठा रबसातेमे दूँष्ट-ठाँष्ट गेल । आरँ ओग डोमीनियाँके देखै तहन ओकरा सिथेरै जे कोन रँसक दाहा होग छै ।
- (फेब थूँडी रौड़ १ नगा क२ पारँ नगै छथि । तखने पाँचठा छिष्टा आ पाँचठा कोनियाँ न२ क२ मबनीक प्रवेश । चन्द्रशे रौड़ १ मीमा क२ बथि नग छथि ।)
- मबनी- (दानपब कोनियाँ-पथिया बथेत दुरेसँ) गोब नगै छी माँ नक ।
- चन्द्रशे- (थिसिया क२ की गोब नगै छै । कहिया कहियौ छिष्टा-कोनियाँ द२ जागने से आग एनैहै । सबठा समान बाग-छिन्नी भ२ जाएत तँ न२ क२ की कबरँ । जे तूकपब नै से कथीदुपब ।
- मबनी- की कबरँ माँनक, दुखना रौड़केँ मन खबाप भ२ गेल छेलै । तँए देवी भ२ गेलनि ।
- चन्द्रशे- हमरा सीथेरै छै, हमरा ठके छै । कही नै, दाक पीरँसँ कबसत नै भेलै ।
- मबनी- नै माँनक, आरँ कहाँ पीरँ छै दाक । खाली साँनेष्टामे एक रौतन ताड़ १ पारै छै । (चन्द्रशे हँसि दग छथि ।)
- चन्द्रशे- रिनग केतौ रैषणो भेलै । **थैब**, दाक छोड़ा देनको से तँ रँड नीक केनको । ताड़ १ ओतेक खतबनाक नै छै आ पागओ कम नगै छै । अछ्छा होड़ ग गप-सप । कह कएगो कोनियाँ आ कएगो पथिया छै ?
- मबनी- पाँच गौ कोनियाँ आ पाँच गौ पथिया छन्हि ।
- चन्द्रशे- सबठारँ कएगो पाग भेलै ?
- मबनी- डेट सए ठके पथिया आ पचास ठके कोनियाँ जोड़ा देखून ।
- चन्द्रशे- रँड मरुग कह छिनी ।
- मबनी- की कबरँ माँनक, रँस रँड मरुग भ२ गेलै । हिनकेमे सँ रँस-पच्छीस ठके कष्टे छेलियनि । झुदा अथनि गरुए सौँसे नमबी न२ नग छथिन ।



- तेपवसँ मेहनतो रँड गँगे छै । से कोनो ग नै रूँवो छथिन । देखुन ने दस ठाका कमे ।
- चन्द्रशे- (तृष्ठी सिकरेष्ट गंगा क२ पीरत) हम मोलाग-तोलाग नै करै छिँ । हम एक्क रैब कहै छिँ । देरौक हेतो तँ दिहै, नै तँ न२ जगहै ।
- मवनी- कहियौ मानिक । कनी सोचि क२ कहथुन । हमछँ खलीपव छी नै ।
- चन्द्रशे- पचास ठाँके छिँष्टा आ रीस ठाँके कोनियाँ । सब्ठाँ मिला क२ साबहे तीन स२ ठाँका भेलौ ।
- मवनी- रँड कम्भ भेलौ मानिक । हँष्ट्यापव रँचरँ तँ रँड कम्भ हेते तँ आठ स२ । ग साते स२ द२ देखुन ।
- चन्द्रशे- (थिसिया क२) कहनियौ ने हम एक्करैब रँजे छिँ । देरौक छौ तँ दही नै तँ न२ जो अपन कोनियाँ-पथिया ।
- मवनी- ओते नै थिसियाथुन । एकरैब गहो रँजथुन ।
- चन्द्रशे- पचास ठाँका आरो देरौ । देरौक छौ तँ दही नै तँ न२ जो ।
- मवनी- रँड आशिसँ हिनका आधन बहियनि जे मानिक छिँड गंगा क२ देखिन । रँष्टाँकेँ मैष्टिकक हावम भरैक छै । झुदा ग उचितोमे रँड कम्भ दग छथिन ।
- चन्द्रशे- रँष्टाँ मैष्टिकक हार्म भवतो । (आश्चर्यसँ)
- मवनी- हँ मानिक । छौड । छह स२ ठाँका मँगे छै । आथिबी छुओ स२ ठाँका द२ देखुन ।
- चन्द्रशे- (थिसिया क२) भगलौ की नै एतएसँ । कप्पाव आगले एनौहँ जो, न२ जो, अपन रँचि निहँ । अथनि तुवन्त भाग । नै तँ हमब नवसँ तेज हेतो तँ रँपसँ भँष्ट कवाँ देरौ ।
- मवनी- कोनो हिनका बाजमे रँसर छियनि जे हमबा रँपसँ भँष्ट करेता । कोनो कवजा नै माँग आधन छियनि जे हमबा रँपसँ भँष्ट करेता । कोनो एक- रँवकेँ दु-रँव नै मँगे छियनि जे एहेन कथा कहता । अपन लिवहत जानि क२ एते थेथनियाँ करै छेलियनि ।
- चन्द्रशे- तँ कवजा ना नेलौ तँ अथनि रँसक एक स२ ठाँका निकार नै तँ एतएसँ ससब नै देरौ । (सिकरेष्ट गंगा पीर छथि ।)
- मवनी- मानिककेँ एहेन रूँपि होग छन्ति जे गवीर-गचावकेँ मजरूबीक होदा उठारी । अथनि जग दथु । गहँ कोनियाँ-पथिया रँचि क२ हिनका पाग द२ जेरनि । अथनि हम कतएसँ पाग देरनि ।



- चन्द्रशे- हम तँ किछो ने बूने छिई । हमरा पाग चाही अखनि । ने तँ ससवि ने सके छै ।
(मवनी कोनियाँ-पथिया माथपव उठा जाइ छित झुदा चन्द्रशे कबसीपव सँ उठि रौत देखरैए ।)
एक्का डेग तँ ससवि कइ देख गही । की दशा होग छौ ।
(मवनी डबसँ ने ससवि बहरी अछि ।)
- मवनी- (कनेत-कनेत) ने पाग छेलै तँ झुड मिचकथा किअ रौस नेनके ।
भुखने बहिनो तँ सुतने बहिनो । ओगने हमरा रैज्जति करैए । जेरै घबपव सातो प्रबथाकेँ डकछरै सबधुआकेँ । रैज्जव खसौना ने हमरा एते रौत-कथा सुनरैए ।
- चन्द्रशे- एतए गाबि देरही तँ अखनि रौतसँ ससवि देरौ । (मारने उठगथि ।)
(चन्द्रशेक एकनौती रैछै चन्द्रप्रभाक प्रेरणे । अरिते अपन पितारकेँ भवि पाँज पकड़ा मवनीकेँ रौचोननि ।)
- चन्द्रप्रभा- गौ डेमिनियाँ, एते गाबि किनको दूपाव किअ दग छिही अ नीक रौत ने भेलौ । जो रौठमे गाबि पढ़ा है जेते मन हेतौ तेते ।
- मवनी- हम अपन घबरारकेँ गाबि दग छिई । आनकेँ तँ ने दग छिई ।
- चन्द्रप्रभा- से तँ हम अन्दरसँ सुनगियौ । झुदा एतए गाबि ने दही घबपव दिहनि । जो एतएसँ । तँ सब ने ने सुनवरै ।
- मवनी- हमरा सबधुआ थातिव अहाँक रौरु हमरा ने जाइ दग छथि ।
- चन्द्रप्रभा- की भेलौ से ? कोनो काबण हेते ने ?
- मवनी- की काबण बहते । अहए जे हमरा रैछारकेँ मैथीकक हावम भरैक छै । छह सए ठाका गगते । कहनिई कोनियाँ-पथिया रैछि कइ दइ देरै ।
मारिको कहने छैनथिन दइ जागने । नइ कइ एनौ तँ मारिक रौड कम दाम गँगोनथिन । हमरा पड़ता ने पड़न । कहनियनि कनी आरो देखुन ।
अपन-अपन नहला तँ ने चाह छै । कम-सँ-कम रैछाक हावम भवाग छह सए देखुन । तहीपव थिसिया गेनथिन आ कहनथिन जे रौसक पाग एक सए ठाका अखनि बाथ तर जगहै ।
- चन्द्रप्रभा- दूखन अहीक रैछै छी ?
- मवनी- हँ, हमरे रैछै छी ।
- चन्द्रप्रभा- रौड तेज अछि रैछै । खूँ मनसँ पढ़ा ।
- मवनी- गवीरँ बूते पढ़ा एन हेते ? हावम भरैक पाग ने जुमे छै ।



- चन्द्रप्रभा- (प्रसन्न मन) पापा, अहाँ डोमीनकेँ छह सभ ठाँका दियन आ कोनियाँ-पथिया बथि नियन । काबम भरेक सरौत छै । एमे मदति कबरौक चाही । अपने गामक मानिक छेए ।
- चन्द्रशे- (थिसिया क२) जाड, मन्सीसँ आनि क२ द२ दियन ।
(चन्द्रप्रभा अन्दर जा क२ मन्सीसँ छह सभ ठाँका आनि क२ मबनीकेँ देली ।)
- चन्द्रप्रभा- डोमीन, कोनियाँ-पथिया अन्दर द२ दियौ तहन जाधर ।
- मबनी- रैस, द२ दग छिई ।
(मबनी कोनियाँ-पथिया अन्दर द२ एली ।)
जाग छी रूचछी ।
- चन्द्रप्रभा- रैस जाड ।
(मबनीक प्रस्थान)
(चन्द्रशे तामसे रितावे छथि । उ चन्द्रप्रभापव आँखि नार-पीखर क२ बहन छथि ।)
पापा, डोमीन चलि गेली । आरिँ पुरे छी, एन किछ अ केकरो हाथ उठा नग छिई ? उ जतए-ततए रँजते । अहीक प्रतिष्ठापव पड़त किने ?
- चन्द्रशे- (थिसिया क२) हमर प्रतिष्ठाकेँ अहाँ किछ सोछे छी ? हमरासँ किनको रैसी प्रतिष्ठा छन्हि ई परोपङ्गामे ?
- चन्द्रप्रभा- पापा, उ घमंडक रात भेल । घमंड बारणोकेँ नै छोड़नेके ।
- चन्द्रशे- (ठहका मारि क२) हा हा हा हा हा हा... । बारणक रात करै छै । अथनि तू रँचछा छै । नै रूमरिनी । ओकबामे रँड बहस्य छेलै ।
- चन्द्रप्रभा- बहस्य किछ होन्हि पापा । झुदा उ घमंडक काबण मारन गेली ।
- चन्द्रशे- आग जौ तू हमर रैषी नै बहिले त तोरौ रिन रौत देने नै बहिलियौ । झुदा करी त करी की ? जुग जमाना नीक नै छै । एक्छा छै तँ गम आ नग छी ।
- चन्द्रप्रभा- (किचुकैत) जुगे-जमानाकेँ देखैत हम कहलौ पापा ।
- चन्द्रशे- जुग जमाना हमरा झुगमे छै झुगमे । जे चाहै जथनि चाहै से हेतै । कान थोति क२ सुनि नही आ तौ अथनि हमरा सामनेसँ हटि जौ । तौ हमरा डोमीनियाँ नग रँड रँकुन रँनेलै ।
(चन्द्रप्रभाक प्रस्थान)
केना-केना पाग रँठकबलौ आ आग पागरना कहलै छी । से हमरीछा रूने छी । चन्द्रप्रभा मम्मी, चन्द्रप्रभा मम्मी, चन्द्रप्रभा मम्मी ।



- मनीषा- (अनन्दबर्मा) हगए एलौं। हगए एलौं।
(चन्द्रशेखर पत्नी मनीषाक प्रवेश।)
की कहलौं।
- चन्द्रशे- की कहलें ? अहाँक रैषी ओग डोमिनियाँक काबणें हमबा बूबरक रँना देलक।
डाँष्टेने नै चाहतिँ झुदा डाँष्टे पड़ल।
- मनीषा- हँ देखिनिँ मन रिपूखएन आ किचुकैत। की भेलै से ?
- चन्द्रशे- की हेतै ? ओग कोनियाँ-पथियामे हमबा नै कम तँ दु सए ठाँका रँचितए।
से आरि कइ पँचैती कबए लगली। उ कतए जैगते ? जे कहितिँ से
कबिते। मजबूर छेलै। ओकबा रैषीकें हावम भरिक छेलै, तगसँ अहाँ
रैषीकें कोन मतलब ? ओकब रैषी रँड तेज छै, तगसँ अहाँ रैषीकें कोन
मतलब ? उ जे दु सए ठाँका रँचिते, से अपने सबकें नै नखला
होगते।
- मनीषा- **खै**, छोड़ू, गप-सप। पिया-प्रता छेलै। उ सब ओते नख-ढुख नै
बूने छै।
- चन्द्रशे- अहाँ कह छी पिया-प्रता छै। मैथिलिकमे पढ़ए आ पिए-प्रता अछि।
- मनीषा- माए-रूपक नजरिमे उ केतरो नम्र भइ जाएत तँ पिए-प्रता बहत।
- चन्द्रशे- से तँ ठीके। झुदा हम जे किछु रँचाएँ ओकरेने नै रँचाएँ। हमबा आन
के छै ? हम चाह छी ओकबा पढ़ १-लिखा कइ रँडका डाकूब रँनारी। रीना
पागए हएत ? बून-बूनसँ तरारि भरी छै। हम एगो सिकरैष्ट पाँच रँब
पीछि छी। लोक सब देखि कइ हँसत हएत। कपड़ १-लगा केहेन पहिरी
छी से देखिते छी। भगवान हमबा ओते नै देने छथि जे हम स्टैंडव
जिनगी जीरी। अछूँ सबकें ओते नीक कपड़ १-लगा नै दग छी।
थेनाग-पीनाग एकदम साधारण आग छी। किअ से बूने छिँ ?
- मनीषा- कहिओ नै ? हम ओते नै बूने छिँ।
- चन्द्रशे- एक्कठा गप छै- रैषीकें रँडका डाकूब रँनेनाग आ ओकब पागक जोगाव
केनाग। डाकूब रँना ओकब रिखाह जातिमे बाजा घबमे कबर। दुनियाँ
देखत आ स्नत तँ सोचमे पड़ि जाएत। जतए-ततए चर्चा हएत जे
चन्द्रशे रौं एतेक रँडका लोक छथि। रीना छै कठने रा पेंछ कठने
रैसी सम्पति नै भइ सकै छै। से बूमि नियो चन्द्रप्रभा मम्मी।
- मनीषा- तँ २ २ एहनो नै नीक जे सब सवापिते बहए।



- चन्द्रशे- कौथा सवापने रेंग ने मरे डै । अहां एकव चिन्ता ने कक । अपना-
अपनाले सभ हवान डै । सारमे एकरेव रौराधाम अरैस् जग छी । से
केना ? तँ स्रतानगजमे उतवराहिनी गंगामे स्नान कइ गजजल भवि
कामव सजा रौर-रैम करैत-करैत पौर-पैदर । ओ रैड पैघ पुष्यक
काज छी । सभ्रु पाप रौरा हरे छथिन ।
- मनीषा- एकव माने ओ भेल चन्द्रप्रभा रौरु जे केतरौ पाप करी आ कामव नइ कइ
रौराधाम पएरे छति जाग तँ रौरा सभ पाप हवि पुष्य भवि देता ।
- चन्द्रशे- सएह रैम् । ओ सभ रात केतौ रैजरे ने । हमव पनौ छी तँ अपन
दिरक रात कहि देलौ । झुदा डोमीनियॉके जे दु सए ठाका रैसी नहि
गेन । तगसँ हमवा कथनो-कथनो रैड आहि अरैए । जाड अछि ने
सम्भावलौ ।
(चिन्तित झुदामे रैस सौंसका सिकरेष्ट पवा पीअए नहि छथि ।)

पठाम्फेप ।



चाबिम दृश्य-

(स्थान- मंगलक घब । मंगल चंगेवा रीने छथि ।)

मंगल- कथनि गेल मोगी कोनियाँ-पथिया नऽ कऽ । से अथनि धरि नै आएन ।
नगैए हठिया चलि गेल रहत । स्वगरोकेँ छोड़ि आएन छिई गाछीमे । उ
कथनो एकठाम बह छै । हबदम छन-छन करैत बहै । कनी जन्दी
अरिते तँ देखतिई केमहब गेलै केमहब नै । लोक सरहक राबी-माड़ ीमे
चलि जाग छै तँ उ सब मारि की कहाँ रजैए नगै छै ।

(मंगलक पितियोत भाए बरीयाक प्रवेश ।)

बरीया- भैया, भैया, तोहब स्वगब कतए छै ?

मंगल- की भेलै से ? रँड हबरी देथे छियो ।

बरीया- भैया बड, पथिया रैचि कऽ अरैत बहिई नै तँ एगो डोमराकेँ देखनिई
रँड रेशिमे स्वगब भगौने जागत । नागत जे तोर स्वगब छै । हम तँ
पडेर सान रैचि गेलौ । कनी पीछेओक मन छन, नै पीछे दोगल एलौ ।

से देखतिह गऽ ?

मंगल- कनी तूछ चन तँ । दूखन दूखन दूखन ।

दूखन- (अनदबस) हँ राड, रहत एलौ ।

मंगल- जन्दी आ । रँड जकरी छै ।

(दूखनक प्रवेश)

दूखन- की राड ?

मंगल- कनी तू एते रैस आ चंगेवा रीनर हेलौ तँ रीनि ।

दूखन- नै हेलौ ।

मंगल- कोशि कबह । कना कोनो रैकाब नै होए छै । हम जाग छियो स्वगब
देथेने । चन बरीया दूनु भाँग ।

(मंगल आ बरीयाक प्रस्थान)

दूखन- हम तँ कहियो ए काज केनिई नै । तँ हेलै केना ? हमर खनदानी काज
छी । कबरै तँ जन्दी सीथि जमै । दूदा एक्क-दूगए दिन केने तँ नै
सीथर । पठ १गमे पठखा जमै तँ सबजी मारता । देखत जेते
पछाति । अथनि पठ १गपब पियान देरौक अछि ।

(मवनीक प्रवेश ।)

मवनी- (थिसिया कऽ) आ गेलौ कतए ?



- दूधन- स्वगवमे गेलौ । किथए थिसियाएन छै माए ?
- मबनी- तौवापव नै, ओकवपव । ओकव चानिपव ।
- दूधन- का भेलौ से ?
- मबनी- का हेते ? तौहव रौप चन्द्रशि मानिकसँ उधारी एगो रौस न२ लेनके ।
तगने हमवा येव नने छेनए । तगपवसँ रौतो देखरौ छेनए । धनि ओकव
रौंछी कहाँदुन तौरे किनासमे पठ' छै, से रौंचेनक आ कोनियाँ-पथिया न२
माएसँ छह सए ठाका आनि क२ देनक । अछदा तू असकून जो हम भनसा
करैने जाग छी ।
(दुनूक प्रस्थान)
- मंगन- (प्रवेशे क२) हीर्ब ब ब ब२ । हीर्ब ब ब ब२ । हीर्ब ब ब ब२ ।
भैया, कहाँ केतौ देखे छिई । नगैए उहए साव डोमरौ न२ गेलौ ।
सावकेँ चिन्हरौ नै केनिई । पकड़रौ सावकेँ तँ ओकवा माएसँ रिखाह क२
लेरौ ।
- मंगन- हमरौ नगै छौ, आरँ स्वगवसँ हाथ धूथ पड़त । उहए साव अही गाछीमे सँ
हाँकि क२ भागि गेलौ । आग जे साव भेष्ट जगते तँ अही कातीसँ भेष्टी
निकारि लेतिई ।
- बरीया- भैया बाड, चन नै सावकेँ देखिई कतए गेलौ ? भेष्टते तँ ओकवा माएसँ
हम रिहा क२ लेरँ आ रँहिनसँ तू क२ निहँ । दुनू सावछ ओते बहि
जाएरँ । नरका सोसवागवमे मानो-दान थूम होग छै ।
- मंगन- टोवरौ साव पकड़ए देतौ । गामेपव चन । आरँ सँतोथे कवए पड़त ।
चन केते दिनसँ किछ नै भेलै । आग हेते । तौरौ सगमे किछ मान-
पानी हेरँ कवतौ आ किछ हमरौ सगमे छेहे । मन रँड चष्ट-पष्ट करैए
दाकने । दाक पीना रँड दिन भ२ गेल ।
- बरीया- जे गति तौरौ से गति मोरौ, बामा हो बामा । चन भेलका आग हेते
भवि मन दाक ।
- मंगन- आग थाकनौ रँड छी । साव स्वगरौ नै भेष्टन आ हवानौ रँड भेलौ दुनू
भाँग । एगो आशि छेनए जे अग्गी-अग्गीमे स्वगव रौंछि क२ काम कवरँ,
सेहो हवा गेल । **खैब**, चन, सँतोथे गाछमे मेरौ रुड़' छै । भगमान
रँड ठी छै ।
- बरीया- छोड़ भैया, अ थिससा पिहानी । दाकने मन रँड चष्टपष्ट करै छौ ।
- मंगन- चन । रुदा बरीया, एगो रात कहियौ ?



- बरीया- कही ने भैया ।
- मंगल- दुखना माए थिसियाएत तँ । उ मनाही केनेए ।
- बरीया- एगो रात कह तँ भैया । तू ओकर रहु आकि उ तोहब रहु ?
- मंगल- उ हमब रहु ।
- बरीया- तरँ उ तोबापब शीसन कबतौ । जे जे कहतौ से से कवरिही ? धुब साब, ईस रहुत याँ एक चुक्क पानिमे डुमि क२ मवि जो । हम अपना रहुकेँ जे कहरेँ जखनि कहरेँ से कबते । ने तँ हाथ-पएब रान्हि सँकास पाँती-पाँती दाहि देरै आ दगि ते बह छिई ।
- मंगल- तँ ने दुनु पबानीमे हबदम थँपठ होग बह छौ । मिना क२ चवरिही तँ किछो अपना ने हेतौ । हमबा घबमे देखे छिही कहियो हन्ना-गन्ना । घबक नम्मी रहु होग छै । उ भंगठतौ तँ बुमही नम्मी रगदि गेलौ ।
- बरीया- ओकरापब चवरँ तँ उ झूमे जारीए नगा देत ।
- मंगल- ने, से केतौ करै । मिन-जुनि क२ बहरिही तँ उहो बुमते अ हमब घबरना छी आ पबिराबने हवान बह छै ।
- बरीया- अछ्छा चन भैया, आगष्टा पीने । आन दिन ने पीहै ।
- मंगल- तँ, रजिहै ने भोजी नग । ने तँ उ हमबा फज्जति कबत ।
- बरीया- ने रजरै, चन ने तू । हगए दक दोकान आरिह गेलौ । (पर्दा हठैए आ दक दोकान देखागए । काउन्सलरपब शिषिकात रैसन छथि ।)
- जो भैया तूही जो ।
- मंगल- तूही जो बरीया । पाग ने ।
- बरीया- तूही जो भैया । पाग न२ ने । हमबापब साब थिसियाएन बहए । एक-दिन कहा-कही भ२ बहए । रैसी पाग ले छेनए ।
- मंगल- अछ्छा ना, हमही जाग छी ।
- (मंगल बरीयासँ पाग न२ क२ दक काउन्सलरपब दुगो पौलीथिन नेन पहुँचन । बरीया राहब ठठठ अछि ।)
- मानिक, दुगो पौलीथिन दहक ।
- शिषिकात- की हो मंगल, रहुत दिनपब एनह तेन ?
- मंगल- हम छोड़ा देनिथ मानिक । साँवकेँ एक रौतन ताड़ एँठा पीछ छी । आरँ रहु पबहेजमे बह छिथ ।
- शिषिकात- एकराँगी एना रँदनि गेनहक ? किछु तेनह से ?



- मर्गन- नै, किछो भेल नै । हमर घबनी रँड थिसिआगए । रैथै मैथ्रिकमे पढाए । ओकर पाग नै जुमेए । तहीने ।
- शिशिकांत- ठूनिन पढा छु से केतो ?
- मर्गन- नै, ठूनिन कहाँ पढा छै केतो । कितार-कोपीमे रँड पाग नगै छै हो । अछु रीचमे हावम भवाग कहलक छु सए नगते ।
- शिशिकांत- रँडि याँ रात । खुम मनसँ रैथैके पढा रह । तोबा सबकेँ आवस्य छु । केतो-ने-केतो नोकरी भैए जेतह । ओना नोकरी भैथै रा नै भैथै, अपना तेल पढनाग सबकेँ पवमारशिक छै ।
- बरीया- भैया, भैया बड, जँ कष्टेने गेलै तँ सतुआगन केने एरै की ? जे तूकपव नै, से किदिनपव । नै होग छै तँ छोडा ए दही ।
- मर्गन- एते केतो लोक पठपठएन हन ? एहन छोक नीक नै ।
- बरीया- से तँ बुमिमे हेरही । आनरै तँ आन, नै तँ चनरियो । (बरीया जग नगैए ।)
- मर्गन- कक, कक, कक । हगए एनौ । मानिक दियो । जन्दीसन दियो । रँडि कातसँ ठाढ़ छी । निथ पाग ।
- शिशिकांत- (पाग न२ क२) पाग तँ कम्मे छु । आरो दहक ।
- मर्गन- रँडि गेलै दाम से ।
- शिशिकांत- हँ, एगोपव पाँच ठाँका ।
- मर्गन- किथ रँड १ देलक ?
- शिशिकांत- हम रँडरै छिँ से ? सबकारे रँड १ देलकै ।
- मर्गन- सबकारे रँडह भ२ गेलै । एते केतो महगी होग । गरीरहा नै जीखत । भने हम दक छोडा देलौ । ताड़िमे पागओ कम आ कोनो खापीओ नै । अछा दैह मानिक, दस ठाँका दोसब दिन न२ निथ ।
- शिशिकांत- बरीया, दस गो आरो दही । दाम रँडि गेलै ।
- बरीया- आ न२ जो । (मर्गन बरीया नग जा क२ दस ठाँका आनि शिशिकांतकेँ द२ दूठा पोनिथान न२ क२ ओते पीएने रैस गेल । दूनु पी बहन अछि ।)
- मर्गन- की बरीया ? आरँ सतोथ भेलौ नै ?
- बरीया- हँ भैया आरँ मन शीत भेलौ । आ तोबा ?
- मर्गन- हम तँ रैसी दिनपव पीए छी से केनादन नगैए ।
- बरीया- दु-चाबि दिन पीरही नै, तँ खेब नीक लागए नगतौ ।



- मर्गन- हमरा दारु नै पीरौक अछि । हम ताड़ ईष्टा पीथर । उना आगष्टा पी ले
छी । हो हो, जन्दी हो । जन्दी सभा । गामपव काज रहुते छै ।
(दुनु गोष्टे दारु सधेनक आ उठि कऽ रिदा भेल) ।
बरीया, नष्टे छै हमरा नागि गेलौ ।
- बरीया- भैया, हमरो नष्टे छै नागि गेलौ ।
(दुनु नुमेत-नामेत जा बहन अछि ।)
साव आग दस कपैया रैसी नऽ गिया । जाएगा थानापव आ कहेंगा
प्रसिद्धाकेँ आ दारुना गरीर सभसे रैसी पैसा किछ अ नऽ जेतो ह । अपने
साव बुनेगा केहेन महिम होतो ह ।
- मर्गन- हमरा तँ रहुक चिन्ता नागर ह । उ जे हमरा देखेंगा दारु पीने तँ हमरा
रठनीसँ नाष्टेगा । रैकावमे पीया । उअ उअ उअ । उठेओ नै होतो ह ।
जे दारु निकलि जाएगा तँ निसाँ दुष्टि जाएगा । रहुसँ रैचि जाएगा ।
- बरीया- भैया, तोरा रहुसँ एते डब होतो ह । ओहेन रहुकेँ गोली मारि देगा ।
- मर्गन- रहु मारि जाएगा तँ केकरा नऽके बहेगा ?
- बरीया- साव भैया, ओहो नै बुझता ह । दुनियाँमे रहु का कोनो कमी नाय ।
जेकरेसँ चाहेगा तेकरेसँ रिखार कऽ लेगा । मारि ब आगले आ जेहन
जागले रैष्टे तैयार ह । लेकिन एकष्टा रात कान थोनि कऽ सुनि जौ
भैया कान्हि पहिले अपने गोली मारि लेगा तँ ओग दारुनाकेँ मारेगा ।
सबराकेँ जिन्दा नै छोड़गो ।
- मर्गन- बरीया, एगो रात होगा हम कनियाँकेँ कहेंगा जे बरीया जखनदस्ता हमरा
पीया दिया । तैसँ हम रैचि जाएगा ।
- बरीया- तू गारि काहे देतो ह साव ? (दुनु थिसिया जागए ।)
- बरीया- अथनि घबपव जाएगा तँ तोरा रहुकेँ नऽ बहेगा ।
- मर्गन- हमरा से कहेंगा तँ हमरुँ कहेंगा हम तोरा रहुकेँ नऽके बहेगा ।
- बरीया- राज नै होतो ह साव भारो नऽके बहेगा । एक्क थापव मारेगा न कि सर
दारु निकलि जाएगा ।
- मर्गन- हमरा छेष्टे भऽके मारेगा तँ हमरुँ नै छोड़गो । तोरा माए दुध पीयाया ह
आ हमरा नै पीयाया ह । मारि कऽ देखो ।
(बरीया मर्गनकेँ एक थापव नगरैत अछि । मर्गनो एक थापव बरीयाकेँ
नगौनक । दुनुमे नगड़ १ हँसि गेल । दुनु हाथपाग कऽ बहन अछि ।
फेब दुनुमे उठा-पठक भऽ बहन अछि ।)



- बरीया- (छातीपब चढा) साब भैया खुन पी लेगा । आरै राजो कोन राप काज देगा ।
- मंगल- हम तबमे है ते दुआरे । नै तँ तोबा देखा देता । तैयो कहि देता है आग नै कान्हि तोरो खुन पी लेगा ।
(मबनीक प्रेशी । बरीया देखिते मातब पड़ । जागए । मंगल उठि कइ रैसए ।
- मबनी- की भेलौ दुखन राउ ? तँ, दुनु भाँग एना किथए केनह एना तँ कहियो नै करै छैनह ।
- मंगल- (कनी भँसिआगत) स्वगब तकेले गेलौ दुनु भाँग । हुनो नै भैठैन ।
कतए-कतए नै रौएलौ । कोनो था-पता नै । बस्तामे बरीया नै मानक दक पीया देकक आ अपनो पीकक साब । निसाँमे गाबि दिख लगल ।
कहनिई तँ माबि-पीछै शुक कइ देकक ।
- मबनी- एकब माने तूँह दक पीकक । जँ तँ हमब कहल नै केनह तँ हमबा तोबा कोनो नाता नै । आरै हम तोबा घबपब घुमि कइ नै जेरैह । तोरे तकेले आएन छेनिख । जाग छिख जतए मन हएत ततए ।
(थिसिया कइ पड़ एत जा बहन थडि । पाछु-पाछु मंगल सेनो जा बहन थडि ।)
- मंगल- घुमि जो दुखन माए घुमि जो । आरै तोहब कहल कबरै ।
- मबनी- से कबितह तँ एह दशा होगतए । जा, हमबा-तोबा कोनो मतनरै नै ।
- मंगल- हे हे एना नै कबरी । केतौ भइ कइ नै बहरै । दुगो बहिनतए तँ छोड़ा ओ दैतिण ।
- मबनी- जा, दोसब कइ निहह ।
- मंगल- से तँ नै हेते । तोबा रीना हम नै बहि सके छियो । हे हे दुखन माए घुमि जो । आरै गनती नै हेते ।
(भवि-भवि पाँज कइ मंगल मबनीके पकड़ैए । मूदा छहनि-छहनि भागि जागए ।)
- रैषा दुखन केना पढ़ते ? हमबा रूते नै हेतौ ।
- मबनी- तोहब रैषा छिख । जे मन हेतह से कबिख ।
- मंगल- हे हे तोबा दुखनक सपपत, घुमि जो ।
(मबनी ठाढ़ भइ जागए ।)
- मबनी- तूँह दुखनक सपपत था जे एहेन गनती नै कबरै ।



- मर्गन- हे हे एहेन सप्पत खागने नै कह । दब-दुनियाँमे एक्कगो रैछै छौ ।
कान पकड़ा उठि-रैस दग छियौ ।
- मवनी- रैसी नै पाँचे रैब ।
- मर्गन- से जाएरैब कहरौं ताए रैब ।
- मवनी- दूगए रैब ।
(मर्गन दुरैब कान पकड़ा उठि-रैस देलक । मवनी नज्माए गेली ।)
- मर्गन- आरि की कह छै, कह ।
- मवनी- निसाँ दुष्टनह पहिने ?
- मर्गन- हँ आरि ठीक छियौ ।
- मवनी- बरीया जे उना केनकह, से थानापब जगहह ?
- मर्गन- नै जो । निसाँमे दूनु भाँग छेनिर्ष तँ उना भऽ गेलौ । हमरे मदति करिने गेल छेलए । दिनक दोख छेलौ भऽ गेलौ । रैसी धवरीही तँ रात रँटि जेते । रँबरँबि नगड़ होग बहतौ । से देखही एना कहाँ कहियौ होग छेलौ । कहियौ देखिहँ नीक मनमे तँ बुझाए-समझाए दिहनि । आच्छा चन आरि घब ।
(आगु-आगु मवनी आ पाछु-पाछु मर्गन जा बहन छटि ।)
- मवनी- एगो कहह जे चन्द्रशे मानिककेँ राँस उधावी किछए नेनहक जे उ हमबा ओते फज्मति केनक ।
- मर्गन- उधावी दूधारे नै केने हेतौ । कम-सँ-कम पागमे मर्गने हेतौ तँ ओते कम नै केने हेरही । तहीपब उकठा-पैटी केने हेतौ । तोबा पहिने कहने छेलियौ उ कँजुशिक ओग छै । पथिया-कोनियाँ नेनको की नै, से कह ।
- मवनी- नेनकेँ तँ, झुदा छुआ सए ठाँका देनके । डुहो ओकर रैछै उ नै ।
- मर्गन- खैब, डोड़ । कहना नेनकेँ नै । काजैसँ काज छै ।
(अनदबमे दूधन पठा बहन छै । पर्दा उठै छै ।)
- दूधन- कतए जाग गेल छेलही ?
- मवनी- राँए, सुगब हवा कऽ एनौ हेल । जेहो आशि छन सेहो चलि गेल ।
भगमानेकेँ गरीरहा देखन छै ।
- दूधन- पाग दही नै असकून जेरै । सब हाबम भवि नेनकेँ । हमहीठा रँचन छी ।
- मर्गन- दऽ दही, जल्दी चलि जेते ।
(मवनी छह सए ठाँका दूधनकेँ देलक ।)



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पारिषदिक ई पत्रिका विदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मवनी- रौंथा, ठीकसँ पाग बथिहै, हवाड ले । भगमानक ना नह कह हावम
भविहह । मासहब सहरँ सभकेँ गोब सेहो नागि निहक ।
दूधन- रैस ।
(दूधन माता-पिताकेँ पएव छुरि गोब नागि सकुन गेल । दून् माथपव हाथ
दह असीबराद देलकनि ।)

पठाम्फेस ।



पाँचम दृश्य-

(चन्द्रशे ब्याक हरेली । चन्द्रशे मनुआएन रैसन छथि । कनीकान पछाति ठूँही
सिकरेष्टे नगा क२ पी बहन छथि ।)

चन्द्रशे- ओह । रैकारे अपन डोमिनियाँक चक्करमे पड़लौं । आनसँ नगतौं तँ रैसी
पाग नै नगिताए । तछपब सँ हमब रैष्टी आबो छौक देतक । मजरूब भ२
क२ हमबा हमब दाममे कोनियाँ-पथिया द२ क२ जगताए । ओह । दू स२
ठाँका चलि गेल पानिमे । दू स२ ठाँका कमागमे केते भीड़ पैड़ छै से
हमही बूने छी ।

(माथपब हाथ बथि चिन्तामग्न भ२ जाग छथि)

(चन्द्रप्रभाक प्रवेश ।)

चन्द्रप्रभा- पापा, खेनाग रैनि गेल छै । चनु खा लिख ।

(चन्द्रशे किछ नै रैजै छथि ।)

चनु ने, खेनाग सवा जाएत । हमरो असकुर जेरौक अछि ।

चन्द्रशे- जो ने, तोबा हम मनाह करै छथ्यौ । अपन खगहँ आ जगहँ तोरे बाज
छियौ तँ हमब कोन मोजब ।

चन्द्रप्रभा- (आश्चर्यसँ) हमब बाज छिँ । नै बूमलौं पापा एकब माने ।

चन्द्रशे- अथनि रैछा छै । तँ नै बूमरिनी । जो मम्मीकेँ पठा दिहनि ।

(चन्द्रप्रभाक प्रस्थान)

एक्का बत्ती नै सोहाए छौड़ । कहने केना आएन छेतए, पापा, खेनाग
खा लिख । सवा जाएत । जेकबाने हम एते करै छी, से हमबापब शीसन
कबत । हमब मालिक ।

(मनीषाक प्रवेश)

मनीषा- की भेल ? किअ नै गेलिँ आगले ? मन रैड़ उदास देखै छी ।

(चन्द्रशे ग्लम छथि ।)

किछ होए ? आकि बूछा किछ उम्मट रात राजि देतक ?

चन्द्रशे- (थिसिया क२) ओग दिनसँ हमबा अन्न-पानि नै नीक नैए ।

मनीषा- कग दिनसँ ?

चन्द्रशे- जग दिनसँ डोमिनियाँ दू स२ ठाँका रैसी द२ देतक ।

मनीषा- उ गप अथनि पबि धेनहि छी । हम ओही दिन रिसबि गेलौं ।



- चन्द्रशे- गुडक माबि धकवा जने छै । रौनव जानए आदी सुआद । अहाँकेँ कमाए पढ़ा तए तहन ने बुझितीएँ, कोन रौसकेँ दाहा होए छै ।
- मनीषा- पिआ-पुता छै । जदी एकठा हुमि गेलौ तगले एते आमीन पीने छी । ए रौत आन कोए सुनत तँ कियो नीक ने कहत ।
- चन्द्रशे- लोक नीक कहै रा अपरा । अपने नीक तँ सँसार नीक ।
- मनीषा- अच्छा जे भेलौ से भेलौ आरै ने हेते । हम ओकरा बुझा-समझा देरौ । अहाँ चवू खागले । हुनो असकुर जेतै । हमरो भुख लगत छै । बातिमे ने खेलौ । मन ने नीक बहए ।
- चन्द्रशे- जाड अहाँ सब खाए-पीएँ जाड । हम रौदमे खा जेरौ ।
- मनीषा- जदी अहाँ घबपव छिँ तँ से केना हेते ?
- चन्द्रशे- जदी हमवा खाएक मन ने होए तहन ?
- मनीषा- गप-सपसँ मन बुझा जाए छै ने । छोड़ू नष्टावम, चवू खागले । बूछा आरै गतती ने कबते । सएह ने ?
- चन्द्रशे- हँ सएह । अच्छा चवू अरौ छी । एक आदमी कानि पाए दगले गुनका छैम देने बहए ।
- मनीषा- कनी जदी एरौ । (मनीषाक प्रस्थान)
- चन्द्रशे- भुखे हमवा जान जाए बहन छै । झुदा ई रीचमे जदी सीताराम पाए दगले आरि जाएत तहन हमवा ने पारि घुमि जाएत । हेब पाएमे आना-कानी कबत । रौड ि नमबिया छै । खाए कानमे हम जेनी-देनी कबिते ने छी ।
- (सीतारामक प्रवेश)
- सीताराम- (कब जोड़ा) मानिक प्रणाम ।)
- चन्द्रशे- खुशी बह । दनदनागत बह । अहिना हमवासँ जेन-देन करैत बह ।
- सीताराम- मानिक, तनी हियार देखतिँ । ती-तेना भेलौ ?
- चन्द्रशे- (दायबी निकारि देखि क२) दु हजाव आठ सए अष्टारन ठाका सुदि-झुबि नगा क२ भेलौ ।
- सीताराम- रौप ले रौप, रौड भ२ देलौ । ओते तेना भेलौ मानिक ?
- चन्द्रशे- आठ सए झुबि छेलौ । कही हँ ।
- सीताराम- थीके छेलौ ।
- चन्द्रशे- दस ठाके चाबि अने सैकड़ सुदि छेलौ । कही हँ ।
- सीताराम- छेलौ, थीके छिँ ।



- चन्द्रशे- पच्छीस महिना तीन दिन भेलै । कही ह ।
- सीताबाम- (कनीकान ग्म पड़ा) ओते नै भेल हेते । थीकसँ देखियौ मा निक ।
- चन्द्रशे- देखलै देखल डै । ओना हम एकरेव होव देख नग छिई ।
(डायबी देखि जोड़ा -जोड़ा क२) देखही सीताबाम, निथतनक आगु रक्तन
कोनो काज नै करै डै । हमबा डायबीमे अहए निथन छौ आ ओहो रूमि
नही हम गनती नै निथरौ । केकवा संगे के एलै आ के जेते ।
- सीताबाम- तँ हेते । हम गबीर छी । हमबा तेते थोड़ा देरै ।
- चन्द्रशे- छोड़-छाड़क ना नै जे । ओते नगरै कबतौ । कनी तँ अप्पन थैनी
दही ।
- सीताबाम- हमरो तहाँ थैनी हेते । तेयो देखे थिई ।
(सीताबाम थैनीक डिर्री निकानि) तनी थेलै, निथ ।
- चन्द्रशे- तँही चूना । तोहव हाथक रँढ़ा याँ होग डै ।
- सीताबाम- थैनीओ रँद महद भ२ देलै । मा निक । एत तका ते देरौ नै तरे थै ।
- चन्द्रशे- चूना नै, कते गप छुँटै डै ।
(सीताबाम डिर्रीसँ थैनी निकानि चूनरैए ।)
- सीताबाम- निथ मा निक थैनी । (दू आदमी थैनी थेलथि ।)
- चन्द्रशे- आरै ना पाग ।
(सीताबाम काँठसँ तीन हजार ठाका निकानथि ।)
तीनु हजारिया डै ।
(तीनु हजार ठाका सीताबाम चन्द्रशेकेँ देलनि ।)
कतएसँ आमदनी एलौ हेल । तीनु कड़करोए छौ ।
- सीताबाम- मा निक, रैता डिर्रीसँ भेदलकै ।
(मनीषाक प्रेरेश)
- मनीषा- आगक रैव नै भेलै हेल । कथनि कहनिई हगए अरै छी से अरिते छी ।
भेलै नै रूचिओक असकुर कामे भ२ गेलै ।
- चन्द्रशे- की कविई, हमछँ कोनो रैसन-सूतन छी ? काजे करै छी नै ? अही
पागले दुनियाँ रौप-रौप करै डै । चनु, तबत एलौ ।
- मनीषा- पेष्टमे बँह डै तहन पागओ नीक नगै डै ।
- चन्द्रशे- झुदा पाग अरैत बँह डै तँ भुथे हवा जाग डै । ओना पेष्ट तँ पेष्टे
डै । जगले दुनियाँ हवान डै । अहाँ रँढ़, हम अरै छी ।
(मनीषाक प्रस्थान)



सीताबाम- रँड कान भइ देनै मातिक । घबपव ताजो छै ।
चन्द्रशे- हउए जे सीताबाम, अपना किवता पाग । (पाग किरौननि ।)
सीताबाम- तेते हेबनिई मातिक ?
चन्द्रशे- जे तोहव किवतो ।
सीताबाम- मातिक, गरीर आदमीपव किछो दया-माया नै ?
चन्द्रशे- हम की दया कवरौ । दया तँ भगरान करै छथिन ।
सीताबाम- एगो खैनीक पुरिओक पाग दियौ मातिक ।
चन्द्रशे- आरँ किछ नै हेतो । रँकावमे रँकव-रँकव रँकै छै । उन्स पाग छोड़ा ए
देने छियो । उल्लस पागकेँ महत तँ कम बुनै छिहँ । रँसी ज़िद कवरिहँ
तँ एक ठाँका आरो दिखए पड़तो । कावण पाग आरँ नै चले छै ।
सीताबाम- तइ २ २, नउए निख एकठाँका । किख मन नागर बहत उल्लस पागले ।
चन्द्रशे- हम तँ छोड़ा देने छेनिओ झुदा तोवा मन छै तँ ना ।
सीताबाम- नइ निख मातिक ।
(सीताबाम एक ठाँका चन्द्रशेकेँ देननि । ओ सहर्ष नइ लेननि । सीताबामक
आँखमे नोव आरँ गेल ।)
पनि छी मातिक । पनि छी मातिक ।

पठाम्फेस ।



छथम दृश्य-

(स्थान- मंगलक घब मंगल पथिया रीनि बहन छथि । मबनी कोनियाँ रीनि बहन छथि ।)

मंगल- गग दूखन माथ, पहिने हम जे जनितो, पठ १०मे एते खचा होग छै तँ दूखनकेँ ने पठ-रितो ।

मबनी- देखलक, पठन-लिखलक जुग एतेथ । सब पठते आ उ ने पठते तँ डुहोले रौखा जिनगी भवि अरजमे दैत बहत । कम-सँ-कम मैथुनिको कवा दलक तेकर रौद छोड़ा दिहल । ओना हमब रिचाव छल जे जापवि रौखा पठत तापवि दूखो-तकलीफ काष्टि पएव पाछु ने कबर । रैसी पठते तँ आरो ना हेतह । पठ १० सड़-रना चीजो ने छिई जे सड़ जाएत ।

मंगल- मैथुनिक परीक्षा कहिया हेते ?

मबनी- एक दिन रौखा रजत छेलै, अही रीचमे होगरना छै । से पागक ओवियान कबही । पछुनिई केते तँ कहलक दु सए ।

मंगल- घबमे छै ने पाग ?

मबनी- छै साबहे तीन सए ।

मंगल- आरो पाग की केनही ? ई रीचमे तँ रहुते कोनियाँ-पथिया रीकनो ?

मबनी- से हम कहाँ कह छी ने । छह सए रौखाकेँ हावम भरेले दैनिई आ तीन सए किवाना दोकानरनाकेँ दैनिई । पाग थागरना थागरना जीत तँ ने छै जे आ गेनिई ।

मंगल- से हमबा तोबापव रिसरास छल । तोबा सनक घबरानी भगमान सबकेँ दै । तह २२ ओहीमे सँ रौखाकेँ दह दिहनि आ डेढ़ सए ठाका घब-रैद बहए दिहनि ।

मबनी- ने, एक सए ठाका चन्द्रशे माँ तलकेँ रौसरना दह दलक आ पचास ठाका ताड़ रानीकेँ । रैसी नमूनब बखरलक तँ तुकपव समान ने भेटैतह । (दूखनक प्रवेश ।)

दूखन- माथ, आगए जेरै परीक्षा दगले । हमब एगो सर्गी डेवा भुँजिया आएन छै । डुहो आगए जाग छै । परीक्षा कान्ति सँ छिई ।

मबनी- केते पाग नेरही ?

दूखन- दु सए दही ।



- मंगल- दही जे कह छै से । तू जे दूखन, अपन सामन सब ओबिखाने ।
(मबनी खन्दबसँ साठे तीन सए ठाका खनयि । दू माग-पूतक प्रस्थान ।)
(पीठेपव दूखन एगो मोबामे सब समान सँत कइ खनयक ।)
- मबनी- जे रौखा, दू सए ठाका ।
(दूखन दू सए ठाका जेनक । माता-पिताकेँ पएव छुरि प्रणाम करैए आ ओ
दू आदमी खसीबराद दगए ।)
रौखा, ठीकसँ जगहह । ठीसँ परीक्षा दिहक । उचका छौड़ । सब सँगे
एम्हव-ओम्हव नै घुमिहह । मधमलीमे रँड गाड़ । चले छै । काते-काते
अपन सागडसँ अरिहह-जगहह ।
- मंगल- माए ठीके कह छै । ओबिया कइ सब काज करिहँ आ अक्कव-अक्कव रौख
नै खेगहँ सपावनीए खेनाग खेगहँ ।
- दूखन- सह कवरै रौड ।
(दूखनक प्रस्थान ।)
- मबनी- हो, दूखन रौड, तू आ डेठ सए ठाका नइ लेह आ चन्द्रशे मातिककेँ एक सए
ठाका आ ताड़ रानीकेँ पचास ठाका दइ आरहक ।
- मंगल- ना दइ अरै छिई ।
(मंगल डेठ सए ठाका नइ प्रस्थान ।)
तू अँगना जे । हम दगए अरै छिई ।
(मबनीक प्रस्थान ।)
(खन्दबमे चन्द्रशे अपन दानपव रैसत छथि । पर्दा तुरंत हटैए आ होव
नगि जागए ।)
प्रणाम माँ नक ।
- चन्द्रशे- अथनि जे । दू चाबि दिनक पछाति अरिहँ । अथनि उधारी-पुधारी नै
हेतो । पछिना पाग रौकी छै ।
- मंगल- आग रौस नगने नै एनौं हन । पछिना पाग दगने एनौं हन ।
- चन्द्रशे- तहन तू रँड नीक लोक छै । गैहँकी एहने हेरौक चाही जे रौ तगेदे
पाग दइ दिगए ।
- मंगल- अहाँ तँ ओग दिन कहाँदू दूखन माँकेँ पागने फन्मति कइ देनिई
माँनक ।



- चन्द्रशे- ओग दिन अपन-अपन नख्खक मारि बह । ओना हमर रैथी तारे कनियाँके जीता देनको । हमरा हिसारसँ दु सए ठाका रैसी नगि गेल । **थेब**, केतो खानठाँ गेलै, अपन घबमे गेलै ।
- मंगल- मानिक, अहाँ हमरा घबकेँ अपन घब बुँमनिई । तगसँ छाती सुप जकाँ भ२ गेल । पाग लिख माँ निक ।
(चन्द्रशे मंगलसँ एक सए ठाका लेननि ।)
- चन्द्रशे- मंगल, रँड रेंगवतापव तूँ ग पाग देनै । कान्हिसँ हमरा रैथीकेँ मैथ्रिकक परीक्षा छी । ई रौचमे हाथ साहे खाली बहए । ओना रैकसँ खानए पड़ि तए । डेरी एते-जेते, तगले पाग चाही ने आ ओकरा संगोमे किछु चाही । खाजे किछु खाग-पैरक मन होग ।
- मंगल- रैस मानिक, आरँ हम जाग छी । ताड़ रीरानीकेँ सेहो पाग देरौक छै ।
- चन्द्रशे- खाग खाली पागए रौष्टि बहन छै । की खाग-कान्हि रैसी आमदनी भेलै हैन ?
- चन्द्रशे- नै मानिक । सिबिह साबहे तीन सएक कोनियाँ-पथिया हठियापव रिकले । ओगमे सँ दु सए ठाका रैथीकेँ देनौ । उँ खाग मैथ्रिककेँ परीक्षा दगले मधमली गेल । एक सए अहाँकेँ देनौ आ पचास गो ताड़ रीरानीकेँ देरै ।
- चन्द्रशे- आ घब-रैद ?
- मंगल- घब-रैद किछु नै । दूखन माए कहलक, रैसी निम्नव बखरँक तँ तूकपव समान नै भेलैतह ।
- चन्द्रशे- एकदम ठीक कहलको । रँड बुँधियावि आ चानू-पुर्जा छै । खेब रौसक खगता हेतो तँ न२ जगहै ।
- मंगल- रैस मानिक, जाग छी, प्रणाम ।
(पर्दा खसै । चन्द्रशेक प्रस्थान । मंगल ताड़ रीरानी शीला ओगठाम जा बहन अछि । अन्दरमे शीला अपन ताड़ री दोकान लगा उपस्थित अछि । तीनटा गैठकी सेहो ताड़ री पी बहन अछि । देरँन, स्क्रवाती आ डडू गैठकी अछि । पर्दा उठै ।)
- मंगल- की भौजी, की हार-चार ?
- शीला- ठीक छै । पछिना पागकेँ रिसवि गेलिई । केतो दिन भ२ गेल । हमरो तँ महाजनकेँ दगक छै । अहाँ कोना नै बुँने छिई जे हमरूँ पैकाबसँ ताड़ री न२ क२ रैछै छी । भैया हबदम तामे-जूखामे हवान बहए । कहुना-कहुना हम डह आदमीक परिवार चनरै छी ।



- देरैन- ठीके कह छह भाय । भोजी रँड खगत छै । ए तँ गहए छै जे अपन
झुहँ-छोरे ताड़ १ रैचि क२ पविराव चनरैए आ पियो-प्रतोके पठरैए ।
- मंगन- गवीरँ ने गवीरँक दूध बूने छै । हम सब्ठा बूने छी । तँ ने आग पाग
दगले एनिई हैन ।
- स्वकवाती- भैया, तँ रैकारमे एते रात स्ननरहक ।
- मंगन- स्वकवाती, रात कोनो रैकाव ने होग छै । खाली ओकव अमर कबरँक
चाही । हम सह करै छेलौं । भोजी, पछिना पचास ठंका लिख ।
(शीला मंगनसँ पचास ठंका न२ क२ बखनथि ।)
- शीला- अहाँ ठीके कह छिई मंगन रौखा, गवीरँ गवीरँक दूध बूने छै । उपावी नगले
कोनो रात ने छै । उपावी-नगद दुनिये छै । खाली पियानमे बहए जे
रैरस्था खवारँ ने होग । पीरै-तीरै तँ पी लिख, तरँ जाधरँ रौखा ।
- मंगन- अथनि ने पीखरँ भोजी । हमब छैम ने भेलै हैन । साँममे आधरँ ।
- डुडू- धु, मंगन भाय, तूछु केहेन लोक छह जे एकरैब आधर आ एकरैब एरँ
ग२ । समैक महत दहक ।
- मंगन- हम तोरे जकाँ थोबहे करै छी जे जखनि देखु तखनि ताड़ १ दोकानमे
ने तँ दक दोकानमे निश्चिते । ओना पहिने हमछु तोरे जकाँ छेलौं ।
झुदा हमब योगीक किवपा जे अथनि रँड पवहेजमे छी । मन होगए जे
साफे छोड़ दिई । भोजी, हम जाग छी । साँममे आधरँ ।
- शीला- रैस जाड । साँममे जकब आधरँ ।
(मंगनक प्रस्थान)
- देरैन- स्वकवाती भाय, एगो गप बूनरहक की ?
- स्वकवाती- ने भाय, की भेलै हैन कतए ?
- देरैन- उ दिनरीरँना गप ।
- स्वकवाती- ओह ने, छोड़ १-छोड़ १रँना । जगमे छोड़ १ मवि गेल ।
- देरैन- हँ हँ, ओहएरँना ।
- स्वकवाती- उ गप तँ प्रवान भ२ गेल । भोजी, अहाँ ए गप बूनरिई की ?
- शीला- हँ, पोपबमे निकरन छेलै । सौसे दुनियाँ अनघोर भ२ गेल बँह ।
- स्वकवाती- अहाँके केहेन नगन ?
- शीला- केहेन नगत, रँड खवाप । ईसँ घिनसँरँना गप ओरो की भ२ सकै छै ।
ईसँ रँटा याँ तँ ए होगते जे उ छोड़ १ सब अपन माए-रँहिन-रैरँक सँग
ओना-ओना कबितए ।



छुट्टी- भौजी, हम जे सबकाव हवितर्ष तँ ओग सभल्लो छोट १ खासि मवदारारके पकड़ा सौसे देहक चमड़ १ घाच ओगमे भूसा भवि रीचन टोकपव ठाँगि दैतिर्ष जेतथ ७ सभ एहेन काम केनक । झुदा एतुका निथमे-कानून हद छै । हमबा तँ मन होगए जे हमव रँशि चलिटे तँ सभ छोट १-मवदारारके मवरा ओकव माए-रौपके सेहो मवरा दैतिर्ष जे हेव एहेन पिया-पुता नै जानिमिटे ।

पठाक्षेप ।



दोसब थ्रक पहिल दृश्य-

(स्थान- मिश्रबक चाह दोकान । री.ए. पास मिश्रब नीक चाह दोकान चला बहल थ्रक ।)

मिश्रब- राप रे री, महगाथ एते चबम सीमा पाब केने जा बहल थ्रक जे चारक दाम रँठ १ दी । हमरूँ की कवरै ? हमरो तँ समान महग कीन पड़ि छै । झुदा हमरी केना आगू रँठ छै ? कमपीछीनिक मनोर छै । सोचि क२ नै चरै, तबीकासँ नै चरै तँ हँका सकै छी । ओना सोदा ठीक बहते आ पाथ कनी रैसीओ नगते तँ गैहकी अरैरे कबते । हमर दोकान गाम-घबक दोकान छी । एतुका आदमीकेँ शिबक अपेक्षा कम आमदनी होग छै । तही हिसारसँ हमरा चरक चाही । की कवरै, एक ठोका आगसँ रँठरै छिई । मात्र चारिसँ पाँच क२ दग छिई ।

(संजीता, हबीश आ भोवुक प्रवेश)

संजीत- की हल-चल छै काका ?

मिश्रब- रँठ खवाप ।

संजीत- से की ? पहिले सब दिन नीक कह छेलौं ।

मिश्रब- गह छे चारक दाम चारिसँ पाँच भ२ गेल आगसँ ।

संजीत- जा कोन खवाप रात भेलै । महगाथ रँठते तँ सब समानक दाम रँठते । जा तँ स्रभारिक छै ।

हबीश- तूँ रैसी बूने छिनी संजीत । तीस दिनमे एक सँममे तीन ठोका रैसी नगते आ दुनु सँममे साठ ठोका । एकवा तूँ कम बूने छिनी ।

भोवु- रैसी बूमाथ छौ तँ चाह साहे नै पी, हबीश । नीक समान कीनरिहिन तँ नीक पाथ नगरे कबते । हिनकर चारक जोड़ १ ई एबियामे केते छै, से कह तँ ?

हबीश- से तँ नै छै आ नै हेते ।

भोवु- तहन रँकरास रँल कब । यौ मिश्रब काका, तीन्ठा चाह दियौ रँटा यासँ ।

मिश्रब- एकव चिन्ता तूँ सब नै कब । हमरूँ कोनो अमकथ नै छी ।

(मिश्रब चाह रँना बहल छथि ।)

संजीत- हबीश, अपना सरक बिजल कहिया एते ?

हबीश- अही रीचमे अरैरँना छै । बिजलक पछाति तूँ की कवरिहिन ?



- संजीत- परीक्षा तँ खुम रँटा याँ गेल छै । दोरीओ रँड चले छेलै । निथ नै सकै छेलौं । जौं पास कवर तँ पापा जेतए कहथि पढ़ा जेतए पढ़ै । नै तँ हम दिवली भागि जाएँ । आ तोहरी की प्रार्थना छै ?
- हबीश- हमर प्रार्थना एहए छै जे हम पढ़ा सके छोट्टा देसौं । काबू हम हाथर हेरै कवरौं । से किथए तँ बुझनिह नम चाबि दिन एककोठा कोपीमे बोलै नमरव नै निथनि ।
- संजीत- से एना किथए केनही ?
- हबीश- से कोनो जानि कइ केनि । धोखासँ छुटै गेलै । परीक्षा दगले जाग छेलै तँ बस्तामे सब दिन भागि आ नग छेलै । नगै ओही दुखारे छुटै जाग छेलै । की कवरौं भागि हमर प्रिय अमर छी । ओग रिना हम कानो काज नै कइ सकै छी । नै हेतै तँ बिजलक राद हमरुं भांगैक दोकान खोलै । भावै भाय, तँ किछो नै रजै छह ।
- भोव- तँ सब रजिते छह तँ हम की राजी ?
- संजीत- किछो तँ राजह अपन प्रार्थना ?
- भोव- हम तँ गेल्ले घब छिह । तेते ठाँग परीक्षा भेलै से जुनि पुछह । सब चर्चा गडि हमरे कममे बह छेलै । पढ़ा मे हम गार्जनकै हम रँड ठकनि । हमर गार्जन पढ़ा क कोनो खर्चमे कोताही नै केथि । हमही कनी एमर-ओमर रैसी करै छेलै । कोनो नै कोनो गरे हम सिनेमा रँवरवि देखै छेलै । परीक्षामे सिनेमा मारि दग छेलै ।
- संजीत- तहन तँ तनु गोष्टे एक बग । दोब-दोब मसियोत भाय । नै हेतै नै तँ तनु गोष्टे बिजलक पछाति दिवली भागि जाएँ । नै तँ गामपर लोक सब रँड थिदोस कबत । यो मिश्रव काका, आग अहाँक चाह, पाग रँटने रँज्जव नै तँ भइ गेल ?
- मिश्रव- नै रौखा सब, रँज्जव नै भेल, तैयाव अछि । आग भिड़ नै छेलै आ तोवासरक गप सुनेमे नीक नगै छेलै । तँ अना कइ सुने देलौं । पहिने तँ सब चाह नैह । तकर पछाति हमरुं किछ अपन रिचाव देरह । (मिश्रव चाह छानि कइ तनुकेँ देखक । तनु चाह पी बहल अछि ।) कइ जाग रौखा सब ?
- संजीत- हँ काका, अरुस कहियो ।
- मिश्रव- केते छोट्टा । सबकेँ देखै छि कथनो तशि जेति देखक । नै पढ़ा समए बुनै छै आ नै थेलै-कदैक । अठमे जा-जा कइ मोरांगनपर



कनहूसुकी करैत बहै छै । गेल असकून आ बहन सिनेमा हाँनमे रा गाढी-
रिबद्धी रौआगत बहन । तूही सब कहत ७ सब जिनगीमे नीक बिजनेस
आँखि कहियो देख सकत ?

हबीशि-

अपने लगती कहलै काका ।

मिथुब-

हमबा आबो जकाँ जौं तोबा सबकेँ परीक्षा कबगब होगतो तँ रँडका
झंगरा रँझा खजापब दुष्ट झंगरा नरैब अरितो । सबकारक रैरसथे तेहन
भ२ गेलो जे पढ़ आकेँ कम नरैब आ एम्हब-ओम्हब करैरनाकेँ रैसी नम्रैब
अरै छै ।

भोनु-

तहन हमबा सबकेँ रैसी नम्रैब एरौक चाही ?

मिथुब-

आरि सकेँ छै । कोनो भारी रात नै ।

भोनु-

काका, जदी हमबा सब एरैब पासो क२ गेलो तँ अहाँकेँ बसगन्यास
दहारौब क२ देर । अहाँक झंठमे अमृत रसए ।

मिथुब-

हमबा एहेन बसगन्या नै चाही । हम तँ भगवानसँ मनैरै जे एहेन रिद्यार्थी
कम-सँ-कम एरैब जकब फहर क२ जाए ।

संजीत-

काका, एहेन असीबराद देरै तँ हम सब अहाँक दोकन छोड़ि देर ।

मिथुब-

हम कोनो सिद्ध प्रकथ छी जे हमब असीबराद काज कबत । तखनि एते तँ
अरसुस कहरो जे तू सब रँड नापवराही रँवतनही तँ ओकब फर भैठक
चाही आ ठोकब लगत चाही । ठोकब लगने रुपि रँट छै । रुपि रँटने
सतर्कता अरै छै । आ सतर्कतासँ सफलता भैठै छै ।

हबीशि-

रात तँ ठीके कह छिई काका । अपनैक एकौठा रात कटैरना नै अछि ।
(तीनु गोष्ठा चाह पीर क२ गिलास बखनक ।)

मिथुब-

हम अपन अनुभव कह जाग छियो । खवाप लगतो तँ आपस क२ दिहै ।
तू सब रँजे छैनही जे फहर भेनापब तीनु गोष्ठा दिवनी भाषि जाधर ।
आ तँ नीक रात नै भेलो । जिनगी हारि-जीतक छिई । एक दिन हारमे
तँ दोसब दिन जीतो सकेँ छिई जदी मेहनति कबरै तहन । दुपरेमे
अकुथा नै फड़ छै । देखही, असफलते सफलताक जननी छिई ।
असफलतासँ घरैरौक नै चाही । रंझि सफलता नैन अथक प्रयास कबक
चाही । हमब रातपब तू सब अमर कबरै तँ २ जिनगी सफल बहतो ।
आरि छोड़ आ गप-सप्प । चाहक पाग ना आ जाग जो अपन-अपन काज
कब ।



- (तीनु गोठे अपन-अपन चाहक पाग मिश्रवके देलक । तखने पेपवरना गौरीक प्रवेशे ।)
- गौरी- पेपव, पेपव, ई पेपव, आजुक ठैका समाचाव । मैथिलिक विजय, विजयक रौछाव, विजयक रौछाव ।
- संजीत- यौ पेपवरना, एगो पेपव दिथ ।
(गौरी पाग नः कः पेपव देलक । संजीत पेपव नः माथसँ सँकेलक । तीनु विजय देथे ।)
- गौरी- पेपव, पेपव, ई पेपव, आजुक ठैका समाचाव । मैथिलिक विजय, विजयक रौछाव, विजयक रौछाव ।
(गौरीक प्रस्थान ।)
- संजीत- असकलक नाँ तँ देथे छि । हम अपन रौत नम्रव कहाँ देथे छि । नगे छुट गेल हेते ।
- हरी- दोस, हम अपनो रौत नम्रव नै देथे छि । पेन्डिगोमे नै देथे छि ।
- भोनु- दोस, नगे छोटिया बुझौ । हमरो रौत नम्रव नै छै ।
- मिश्र- की रौखा सभ, सम्हनौ की बुझौ ?
- भोनु- तीनु गोठिक रौत नम्रव नै छै आ असकलक नाँ छै । एकव की माने भेलौ काका ?
- मिश्र- एकव माने हेब मैथिलिक तैयारी केनाग भेल । यानी सभ हलल । हेब मेहनति करै जाग जाड ।
- संजीत- की हरी ? की भोनु ? मन नै होग छै जे माथ-रौपके झूठ देखारी । एम्हरे-सँ-एम्हरे चलै जाग जेमे दिवनी ?
- हरी- एकरेव माथके कहि देति ।
- संजीत- माथ कहि सके छै जे भागि जावे ?
- भोनु- धुव साव सभ, चलै चल एम्हरे-सँ-एम्हरे । झूठा भाड । कतएसँ खनरिनी ?
- संजीत- साव दोस, एहो नै बुझौ छिनी । अपना सरहक देवा डारपव बह छै । रूढ़ रैसी तँ छै, पकड़ि लेते तँ जहनेमे बहरँ आरो की ?
- भोनु- नै हेते नै तँ छै, गप-सप दैत गैपव जावरँ आ मौका पारि चलती गाड़ सँ राहव छै देरै । लेत बहत साव, छक छै आ छक पाग । छक छक घुस नः नः साव सभ पेठ नमरौने बह ।



- हवीशि- आ जदी चिक्कन जकाँ हँसि गेलौ, छेलैक मोक्या नै भेलेँ, तहन की कवरिनी ?
- संजीत- ओते मोचरिनी त२२२ नै जाधर हेतौ । चलैक छौँ तँ चर, देखर जेते जे हेते से हेते । बाम भरोसे हिन्दु हेष्टर ।
(एकठा ग्रामीण बाम प्रवेशिक प्रवेश ।)
- बामप्रवेश- (खुद) एहेन सुन्दर बिजलै रँहूँ दिनपर भेलै । दु सए रिद्यार्थीमे तीन गो फेर । पास भेलहामे मंगलाक रैष्टी असकुरमे सँडूड बसूँ आ चन्द्रशि रौरूक रैष्टी सँडूड सकुण्ड । एगो चाह दहक मिश्रव भाय ।
(संजीत, हवीशि आ भोवक प्रस्थान ।)
- मिश्रव- दग छिख भाय । कोन मंगला रैष्टी द२ कहलक ?
- बामप्रवेश- डोमरा मंगला । कहाँदुन ओकर रैष्टी रँड चन्सगव छै । सौसे सकुरमे सबकेँ पछाबि देलक ।
(मिश्रव बामप्रवेशकेँ चाह देलक । उ चाह पीरैए ।)
- मिश्रव- उ तीनू छौड १ रैकारू छर । सब दुर्गसाँ भवर छर । तँ तीनू गेर बसातलमे । तीनू भने काधर भ२ गेर ।
- बामप्रवेश- रएह तीनू छर फेरहा ?
- मिश्रव- हँ रएह छर ।
- बामप्रवेश- सौसे सकुरमे तीन्हे फेर भेल । सेहो रएह तीनू कबमजकथा छर ।
देखियौ भाय, चन्द्रशि रौरूक रैष्टी सौसे सकुरमे नाँउ केलक । ओहो रँड चन्सगव छै ।
- मिश्रव- जौँ ओकरा सबकेँ मनसँ पठ १एर जाध तँ अरसुसे नाँउ कबत ।
(चाहक पाग द२ बामप्रवेशिक प्रस्थान ।)
- चन्द्रशि रौरू तँ अपना रैष्टीकेँ पठ १ सकै छथि । झुदा मंगला रूते नै हेते अपना रैष्टीकेँ पठ १एर ।

पठाम्फेस ।



दोसब दृश्य-

(स्थान- चन्द्रशेखर हरेली। मैथिलीक विज्ञानक खुशीक माहौल छै। चन्द्रशेखर आ मनीषा रैली चन्द्रप्रभाक नीक विज्ञानक सन्ध्यामे चर्चा करै छथि तथा ओकर अगिला पढ़ाईक सन्ध्यामे सोचै छथि।)

- चन्द्रशे- चन्द्रप्रभा मम्मी, हमबा आनि नै छत्र जे हमब रैली एते रैली याँ विज्ञान आनि सकत। फर्स्ट डिग्रीजन आ अपन असह्यमे सुँड सकै। हमब पाग बली-बली ओसना गेल। हम आग रैली खुश छी आ अहाँ?
- मनीषा- हम अहाँसँ रैली खुश छी।
- चन्द्रशे- रैली नै भुके छी आ रैली खुश छी।
- मनीषा- हम रैलीबगरीनी तँ नै छी जे छत्री चीब कइ देखा दिथ। एतरेँ बुझियौ जे रैली माथेकेँ होग छै।
- चन्द्रशे- एकब माने रैली रापकेँ होग छै आ हमबा रैली भेल नै तहिन रैलीक उपतनिमे मेहनति अछि सह नै?
- मनीषा- धुब जाऊ, अहाँ जडाँ धइ लेनिथ।
- चन्द्रशे- अहाँ राते सह रैलीनौ तँ धरै नै।
- मनीषा- धुब, अहाँसँ के जीतत। रैली अहाँकेँ छी।
- चन्द्रशे- अदहा भेल, पूरा नै भेल। कहियौ रैली दूनुकेँ छी।
- मनीषा- रैली दूनुकेँ छी।
- चन्द्रशे- हँ, अहाँ पूरा भेल। रैलीक विज्ञानक खुशीमे किछ कछार।
- मनीषा- खाली हमरैली कछेरै, अहाँ नै। अदहा अहाँकेँ लगत।
- चन्द्रशे- कहियौ नै, अहाँकेँ पूरा लगत। काका, अहाँ तँ हमरे माथा-हाथ देर।
- मनीषा- सब गप तँ अहाँ बुझियौ छिथ। की थाएर, राजू?
- चन्द्रशे- की राजू, सबकेँ अपन-अपन पसीन होग छन्हि। तगमे हमब पसीन गबम-गबम पातब-पातब जिनैरी अछि। आ अहाँकेँ?
- मनीषा- अहाँकेँ जे पसीन, से हमबा अहाँसँ रैली पसीन।
- चन्द्रशे- आ रूच्यकेँ?
- मनीषा- रूच्यरैली रात हम केना कहौ? उ तँ उ नै रैलीते।
- चन्द्रशे- तहिन रैलीरैली रूच्यकेँ। पछै छिथ।
- मनीषा- रूच्य, रूच्य, चन्द्रप्रभा, चन्द्रप्रभा। चन्द्रप्रभा।



हस्रबागत चन्द्रप्रभाक प्ररेश)

की मम्मी ?

मनीषा- किथए नै रँजे छेलौं ?

चन्द्रप्रभा- एगो हमब रँहना आरि गेल छेली हमबा रँगा दगले । हुनके सँग गपमे लगल बही । नै सुनि सकलौं । सुनलौं तँ दौगलौं । की मम्मी, हमबापब थिसिखाएल छी की ?

मनीषा- (हस्रबागत) थिसिखाएल किथए बहरँ ? खुशी छी, रँड खुशी । तँग रँजेलौं, की थाएरँ ? थागमे अहाँकेँ कोन चीज पसीन अछि ?

चन्द्रप्रभा- हमब मम्मी पापाक खुशी हमब खुशी छी । ओगमे आगू थागक सब चीज त्रुछ छि । पापा थिसिखाएल छथिन की ?

मनीषा- से हमबासँ पढे छी, की पापासँ पढरँनि ?

चन्द्रप्रभा- किथए नै पढरँनि पापासँ । अरँस पढरँनि । पापा, पापा । किथए नै किछ रँजे छी ?

(प्रेमसँ दाढ़ी पकड़ि) पापा, पापा । हमबापब थिसिखाएल छिँ की ?

चन्द्रशे- (हस्रबागत) दु सए ठाँका तँ डोमीनियाँकेँ रँसी लग देलौं तँगसँ हमबा तकलीफ छल । हदा तोबा बिजलँसँ हम अपन तकलीफकेँ आगसँ रिसवि बहर छी आ तोबापब रँड प्रसन्न छियौ । राज तँ, बिजलँक खुशीमे की थेमै ?

चन्द्रप्रभा- पापा, अहाँ हमब लगतीकेँ माफ क२ हमबापब प्रसन्न छी । ओगसँ पैघ ओरो की भ२ सकैए ? ओही प्रसन्नतासँ हमब मन गदगद अछि । आरँ हमबा किछ खेरक अछि नै अछि ।

चन्द्रशे- (प्रसन्न मने) हमब रँष्टी, आउ हमबा लग ।

(चन्द्रप्रभा अपन पापा लग आरि गेली । प्रेमसँ चन्द्रशे चन्द्रप्रभाकेँ सहना दूताब क२ बहर छथि ।)

मनीषा- (हस्रबागत) हे, एहेन रात जुनि राजू जे हमब रँष्टी । नै तँ केब नगड भ२ जअत । से रूनि लिख ।

चन्द्रशे- अहाँकेँ जे कबरक हथए से कक । हदा हम अपन रँष्टीकेँ नै डोडर । ओगक रँदनामे आ जुबमानामे हम अहाँकेँ गबम-गबम आ पातब-पातब जिनैरी द२ दग छी ।

मनीषा- सेहो जल्दी नाउ नै । तहन माफ क२ देर ।



- चन्द्रशे- तहिन जाड, नेने खाड ओग छैरूनपव पोरिथिनमे बाखन हेते माँपि क२ ।
विजयूँ सुनिते मातव आनने छेलौं ।
- मनीषा- हम नै जाधरँ । अहीकेँ जाध पड़त । तखने मानरँ ।
- चन्द्रशे- हे हे, गोब नागध दग छी, नेने खाड ।
- मनीषा- जहन गोब नागि नेलौं तँ जाध छी । देखलौं गोब नगेलौं ।
(चन्द्रप्रभा झुसकिया बहन अछि । मनीषा अन्दवसँ जिनैरीक पोरिथिन
अनरनि ।)
- निथ । आरँ कछु, के हावने ?
- चन्द्रशे- रैष्टीकेँ पड़ियौ, के हावने ?
- मनीषा- रैष्टी, उचित रजिहँ, के हावने ?
- चन्द्रप्रभा- तूँ ।
- मनीषा- से केना ?
- चन्द्रप्रभा- पापा कहनखुन गोब नागध दग छी, नै की गोब नगै छी ।
- मनीषा- जे, तोहव पापा चनाको कम नै छुन । हमरा कहियो उँ जीतए देखुन ।
तहन जिनैरीओ कहन रैष्टिथिन ।
- चन्द्रशे- से हम रैष्टिथि नै देरँ अपितु झूठमे खुआ देरँ । ओ भ२ सकैए ।
(एक-दोसबाक झूठमे जिनैरी खुआ बहन छथि । अत्र्यत खुशीक माहौल
अछि ।)
- रूँछी, आरँ कछु अहाँक जिनगीक उँदेस की अछि ?
- चन्द्रप्रभा- हमव जिनगीक उँदेस अछि- डाकूँव रैननाग ।
- चन्द्रशे- डाकूँव रैनैक कावण ?
- चन्द्रप्रभा- कावण अहए जे डाकूँवक स्थान भगरानक ठीक निछाँ होगत अछि । ओ
अस्मन समाजसेरक होग छथि ।
- चन्द्रशे- रूँछी, अहाँक उँदेस नीक अछि । ओगमे रिद्यार्थी आ अतिभारक दूनुकेँ तन-
मन-धनक आरक्षिकता छै । हम तन-मन-धन अरँस्स नगाधरँ । झूदा अहाँ
नगा पधरँ की नै ?
- चन्द्रप्रभा- पापा, हम अपन कर्तव्यमे कখনो तिरौष्ट नै कवरँ । हम दारा तँ नै क२
सकै छी । झूदा रिसरास दिया सकै छी जे अहाँक तन-मन-धनकेँ रैकाव नै
जाध देरँ । ओ निश्चित छै जे काजक झूतारिक जदी मेहनति कएन जाध
तँ उँ काज अरँस्स सिद्ध हेते ।



- चन्द्रशि- एक दिन सब किससमे रँजे छैनखिन जे रिशेष पठ १०क रैरस्था ग्रामीण
स्केत्रमे नै देखै छिई । अगले राहरे ठीक । जेना, दबलंगा, पठना,
दिग्ली आदि । ईमे अहाँक जेहेन रिचाव ।
- चन्द्रशि- दिग्ली दूब छै । पठना नग छै । दबलंगा अ १०सँ नग छै । हमब रिचाव
दबलंगा बहए दियो । एतए हमरो सबकेँ आन-जान बहत । एगो
मोरांगन द२ देरँ आ कोनो तबहक अस्त्रिषा हएत तँ होन कबरँ, हम चलि
आवरँ ।
- चन्द्रप्रभा- पापा, बहरँ केतए ?
- चन्द्रशि- कतए बहरँ, नङा कीक छत्रासमे बहरँ । एक-पब-एक रैरस्था छै । हम
चलि क२ आग.एस.सी.मे नाँउ लिखा देरँ आ नीक छत्रपासमे बथराँ देरँ ।
सएह नै ?
- चन्द्रप्रभा- हँ सएह ।
- चन्द्रशि- चन्द्रप्रभा मम्मी, अहाँ गम्मी छी, किछ नै राजि बहन छी । अहाँक की
रिचाव ? अहाँ तँ बूछीक माए छिई ।
- मनीषा- हमब रिचाव पछै छी तँ हम अहए कहरँ जे बूछी केतो नै जेते, गामेमे
पठते । पठ-रँना केतो पठि सकैए । जूग-जमाना नीक नै छै । दोसब
दब-दुनियाँमे एक्लै अछि । हुनो चलि जाएत तँ नीक नगत ?
- चन्द्रशि- एगो कहरी छै, आप भना तो जग भना । हमब रैष्टी कोनो आन तबहक
नै अछि । एकब नगन आ वस्त्रा नीक देखै छिई । अ कोनो तबहक
गडरँब-सडरँब नै क२ सकैए । एकबापब हमबा पूर्ण रिसवास अछि ।
- मनीषा- बूछी, कनी चाह रँनेने आउ ।
- चन्द्रप्रभा- रैस, तबन्त गेलौं-एलौं ।
(चन्द्रप्रभाक प्रस्थान)
- मनीषा- अखनि उ सब तबहँ नीक नगैए । ओतए गेलोक पछाति ओकबा केहेन
माहोर भैष्टे केहेन नै । नीक भैष्टे तँ नीको भ२ सकैए आ जदी
खबाप भैष्टे तहन की हेते ?
- चन्द्रशि- खबारँ माहोरमे देरँ नै कबरँ । चिक्कन जकाँ बुमि-सुमि क२ देरँ ।
- मनीषा- अखनि उ क्मावि छै, देखनस छै । किछ भ२ सकैए किछ क२ सकैए । मने
छिई । ई मनक कोनो ठेकान नै जे कखनि केहेन हएत ।
- चन्द्रशि- (थिसिया क२) एते कियो लोक सोचए । रैसी बुझिसँ रियाषि भ२ जाग
छै ।



- मनीषा- सएह बूमियौ ने । हमरूँ सएह कहे छी ।
- चन्द्रशे- अहाँ अनावक रेंग छी रेंग । बूमौ छिई एतरेँठा दुनियाँ छे । दुनियाँ रँड ठी छे । किछु परैले किछु गमरए पड़ छे । हम चाहे छी एकबा पढ़ १-लिखा क२ एकठा जगहपर पढ़ा नाँ कबी आ जातिमे तेहेन घबमे रिखाह कबी जे लोक दंग बहि जाएत । कहे छे नामी मबए नामने आ पेढ़ू मबए पेठने ।
- मनीषा- नाम नीकोकेँ होग छे आ खवापोकेँ । जाड अहाँकेँ अपना जे बुरेए से कक । हम किछु नै राजै ।
- चन्द्रशे- (गंभीर मने) हमरूँ नग बूमौ छिई नीक-अपना । अपने नाँ करैले हम एते परेशान छिई ? से अहाँ नै बूमौ छिई ।
- मनीषा- से हम बूमि क२ की करै ? अहाँक मन जे कहए से कक । (चन्द्रप्रभाकेँ चाह न२ क२ प्रवेशे । चन्द्रशे आ मनीषा चाह पीई छथि ।)
- चन्द्रशे- बूँछी, अहाँक एडमिशन दबिभंगामे करा दग छी । आते रँडि याँसँ पढ़र- लिखर आ अपन काजसँ मतनर बथर ।
- चन्द्रप्रभा- रैस पापा ।

पठाम्फेप ।



तेसर दृश्य-

(स्थान- मंगलक घब । मंगल, मबनी आ दूधन खगिला पठ १०क सरनधमे रिचाव क२ बहरन छि । दूध पबानी भुगयाँपव रैसन छि दूधन ठाठ छि ।)

मंगल- रौखा, तोहब बिजल्लसँ आग हमब मन रँड हबथित छि । झुदा आरँ आगु पठरैक हिम्रत एक्कावती नै छै ।

(दूधनक आँखि नोकसँ ठरँठरौ जागए ।)

मबनी- मन तँ हमरो रँड हबथित छर रौखा । झुदा खगिला पठ १०मे आरो खबचा नगते । एतरेमे केना-केना प्ररलौँ से तूँ जनिते छरक । हमब रिचाव छि जे आरँ तूँ पठ १० छोछि दरक । रौडुँ रूँठ भेरन । आरँ हुनो नै सकै छर । कमरैक नै तँ हमरुँ सभ केना जीखरँ ?

दूधन- (कानि क२) माए-रौरू छै । तूँ सभ जे कररिही सहर कबए पड़ते । झुदा, झुदा, झुदा२२२ ।

मंगल- झुदा की रौज नै ?

दूधन- झुदा झुदा झुदा२२२ । मन होगए आरो पठि तौ ।

मंगल- तूँही कर, हमबा रूँते हेते प्रबाएन । एगो आशि छर सुग्गब सेहो हबा गेर । खतो-पथाव नै छि । देखेमे देखे छियौ माएकेँ एगो होसनी आ दू कष्टा रौसडीह । ईसँ भ२ जेतौ तँ रैचि क२ पठ । तँ बहरै केतए से सोचि जे ।

(दूधन आरो कनए नगैए ।)

दूधन- रौड, नै हेते तँ तारे होसनी रँनरक बथि नाँ लिखा नग छी । ठूँन भँजियरै छी । भ२ जेतौ तँ ओही पागसँ पठरँ आ बसे-बसे होसनी छोड १ जेर ।

मबनी- आ जौँ ठूँन नै हेते तँ हाथे तबक गेर आ नातो बरसँ चलि जाधत । नै होसनी हम नै देरौ । हमबा माए-रौपक गहएँ निशानी छि । पगत छर, नाकमे छर गुँठा छर । सभरौ रँनरकीमे रूँडि गेर । आरँ एहन काज नै करँ ।

दूधन- (कनेत) माए तूँ कठोव भ२ गेलौँ हमबाने । कनी सेचही माए । तूँ जे किछ रँचेरौ से हमरे हेते । खथि ओगसँ हमबा काज हेते, जिनगी रँनते । ओगसँ तारो सभकेँ नै सुथ हेतौ ।



(मबनी कनए नगौए ।)

मबनी- पानिमे मडुबी आ नख-नख कष्टिया रँखवा । होसिनी रूडत की बहत, से के जनेए ?

दूखन- माए, जदी ई रैष्टक प्रति कनियोँ ममता छै तँ एकब गप आ जिदपव अमर कबरी । नै तँ ई रैष्टसँ हाथ धोए । हमरा जेतए मन हएत तेतए चलि जाएँ आ ओतए पढ़रँ धरि अरँस्स ।

(मबनी आरो कानए नगौए ।)

माए, की कह छै ? हँ रा नै कह ।

(मबनी हँ रा नै किछ नै कहि बहर अछि । आरी कानि बहर अछि ।)

राँड, अहाँ की कह छी ?

(मँगल गूम अछि ।)

किअ नै किछ कह छी ?

मँगल- (थिसिया क२) तोबा ओते जिद किअ नगर छै ? जे सकनियोँ से पढ़नियोँ, आरँ अपन जोगाव कब ।

(दूखन आरो कनए नगौए)

दूखन- दूनु जने एक्क बंग । **खैब**, अहाँ सब अपन होसिनी बखु । हम चरना ।
(दूखनक प्रस्थान)

मबनी- कनी देखक नै, केतए गेलै ?

मँगल- हम नै जेरै, तूही जो ।

मबनी- जाहक नै । आखिब रैष्ट छिअ नै ?

मँगल- आ तोहब दूखन छियो ।

मबनी- हमरा नै ग्वदानते ।

मँगल- हमरो नै ग्वदानते । हम नै जेरौ ।

मबनी- एहेन कठोब राप केतौ नै देखनौ ।

मँगल- तोरे रँड ममता छेलौ तँ उ किअ भगनौ ? रैष्ट चलि जाए तँ चलि जाए झुदा होसिनी नै जाए । हे भगमान, एहेन कठोब माए केकरो नै दिहक । रँड छी, की करितौ ? हमरो कठोब रँख पड़ल ।

मबनी- (अपने आप डुपव ताकि) हे भगमान, एहेन कठोब माए केकरो नै दिहक । हे भगमान, एहेन कठोब माए केकरो नै दिहक । हे भगमान, एहेन कठोब माए केकरो नै दिहक ।

(कनेत-कनेत मबनी दूखनकेँ घुमारँ जाए । खैब मँगल सेहो मबनीक पाछ-पाछ जाए ।)



रौंथा, रौंथा । केतए गेलै रौंथा ? रौंथा रौ रौंथा ।

(गामक एकठा प्रतिष्ठाित रेकती मणिकांत दामक प्ररेशि घुमेत-हिरैत ।)

मानिक, हमबा रैठाकेँ भागत जागत देखनिई ?

मणिकांत- हँ, देखनिई एगो छोट १ कनेत-कनेत भागत जाग छेलै । ७ तौहब रैठा छेलै की नै, से हमबा नै बुझत अछि । नम्रह छेलै । की भेलै से ?

मंगल- केते दुब गेल हेते ७ ?

मणिकांत- कनियेँ दुब गेल हेते । भेलै की से ?

मंगल- तूँ देखही ग२ । हम पीठेपव अरै छियौ । कनी मानिककेँ रता दग छिई ।

(मवनी मठकि क२ जा बहत अछि । रौंथा रौंथा टिछिआगए ।)

माँ नक की कहरै । छोवा रँड जिन्दी छै । अही रीचमे मैथ्रिक पास केनक हेल । हमबा कहए, हम पठरै आरू । हम दुनु पवानी कह छिई, नै पठ १गमे रँड खचा नगै छै ।

मणिकांत- तौँ सभ बुबरक छह जे पठ-रना रैठाकेँ नै पठरै छौ छह । लोक सभ रैठा-रैठाकेँ पठरैले हवान बहए । हो, सुननिई ई हाग सुकनमे एगो डोमक रैठा सट्टुड फसट केनकेँ, ओह छह की ?

मंगल- हँ मानिक ।

मणिकांत- तौँ सभ साह खतम छह । एहेन रिद्यार्थीकेँ तौँ सभ पठ १ग मनाही करै छहक, जूझम करै छहक । रिद्यार्थी हेलहार छह । तौवा सभकेँ सबकार आबक्कशो देने छह । जौँ पठ-निथि जेतह तँ केतौ-ने-केतौ अरैस्स सबकारी नोकरी पारि जेतह । तौँ सभ तबि जेरैह ।

मंगल- मानिक, अगिला पठ १गमे रँड पाग नगते । केतए से पुररै ? सुग्गरा हवा गेल । पहिले जकाँ कोनियेँ-पथिया नै रिकै छै । पसाविओ सभ हट्टियेपव जा क२ कीनि नग छै । हम केते डोमकेँ मनाही कवरै आ गावि-फन्मति देरै जे हमबा पसावी हाथे नै रैच, हमही देरै ।

मणिकांत- से तँ ठीके कह छह । झुदा तूँझ किअ नै ठट्टियेपव चलि जाग छह ?

मंगल- मानिक, आरि हट्टियोपव बस नै छै । छेलै हमबा राँडक समेमे बस । तँ नै राँड डेठ कण्ठा डीह कीनरकेँ । झुदा आरि हट्टियोपव तेते डोम अरै छै जे केतेकेँ रौंहाणिओपव आहत । अपन-अपन समान रैचमे मावि क२ नग जागए आ कमेमे रैच नग जागए ।



- मणिकांत- जा, रौपरीना जमीनो रैचि क२ रैछैके पढ़ा रहि ।
- मंगल- से तँ हमब घबनीके एगो होसनीओ छै । रैछै कह छेलै, होसनी रँनक बधि हमबा नाँउ लिखा दैह । हम छुशीनो क२ क२ पढ़र । ओकर मागए नै गछनके । रँड जिन्द केनके मागके । झुदा नै गछनके । तही दुखारे थिसिया क२ भांगि गेलै आ कहनके हमबा जेतए मन रहत तेतए चलि जाएर आ पढ़र अरँस ।
- मणिकांत- जा जा, चुपचाप चलि जा । रैछैके पढ़ा रहि । नशीरके तेज छह जे एहेन होनहार रैछै भगवान देनकह । हम जाग छिथ । छैठ भ२ बहनए । (मणिकांतक प्रस्थान)
- (अनन्दबसे मवनी आ दुखनमे गप-सप भ२ बहन अछि ।)
- (मंचपर सँ मंगल अनन्दबक गप-सपके अकानि बहन अछि ।)
- मवनी- चर नै, चर नै । किछ ओते हवान करै छै । हमबा ओते दम नै अछि जे घाँचर रहत आकि उठाएर रहत । चकैठरा जे कहनके पीछेपव अरै छी तँ चर, से अरिते अछि । चर नै रौखा, चर नै । चर, जे जेना कहरीही से हम देरौ ।
- दुखन- से दैतही तँ एना हेरै करितो ? तोबा रैछै थोबहे प्रिय छै, होसनी प्रिय छै । जो, हम नै जेरौ । जो होसनीके धोख-धोख चष्ट ग२ । तोबा रैछैसँ कोन मतनर छै ? दुखन रैछैके घबसँ भांगि गेनाग नीक । सबके शान्ति भेटैते ।
- (मवनी रौम पाड़ा क२ कनए नगैए ।)
- मवनी- झुड़ मिचकआ कथनि कहनके, चर अरै छी पीछेपव से अरिते छै । रँड गपकड़ भ२ गेल हन । चर नै, चर नै ।
- दुखन- हम नै जेरौ । नै जेरौ । माएक हिवदे एहेन कठोब होख छै ? लोक स्नत तँ हँसत ।
- (मवनी हिचकि-हिचकि कनए नगैए ।)
- मवनी- तँ नै जेरै तँ हमझ जेतए मन रहत तेतए चलि जाएर । मवि जाएर, कष्ट जाएर ।
- (मंगल बेसमे चलि दुनु माए-रैछै नग पछन ।)
- मंगल- चर नै रौखा । किछ एना कने-खिजे जाग छै ?
- (पर्दा हटै । तीनु गोष्टे दर्शकक सोना आखन ।)



- दूखन- राँड, तूझ रबह छह, माएक पठनपव चलेरैना । तू ताड़ १-दाकमे जेते पाग देने हेरैक, ओगमे हमब पठ १ग रैदा याँ जकाँ भ२ जेते ।
तोहब रैष्टा छिखह । कहरै तँ तकरीफ हेतह । तँए झँहमे ताना नगेने छी ।
- मगन- आरै तोरे दूआरे ताड़ १ग पाँच छी, दाक छोट्टा देल्लै ।
- दूखन- डूहो दिन दूनु भाँग दाक पी क२ उठा-पठक केले । ओहो जे किछु रैजलौं गनती भेल ।
(हाथ जोड़ा क२)
राँड गनती माह कक ।
- मगन- रौआ, हमबा मणिकाँत मानिकसँ अथनि तोरे सरिन्धमे रैहूत बास गप भेल ।
रैहूत ज्ञानरैना गप कहलथिन । हम सोचि लेलौं जे कोनो धवानी तोबा पठे रौक छै । चाहे जे भ२ जाए । होसली रिकौ, डीह रिकौ आकि हम दूनु पवानी रिकी । की गौ, तोहब की रिचाव ?
- मगन- हमरो अहए रिचाव छह । आरै हमझँ अहए अरिधावि लेलौं हेल ।
- मगन- रौआ, गामपव चल । तू जे जेना कहरीही सएह हेते । रैडकीष्टा हाथी होग छै, डूहो कहियो छुकि जाग छै ।
- दूखन- माए-राप छी । रैष्टाक कहनपव अमन कबियो । जदी गनती कह छी आ करै छी तँ डाँटै नै कक, पीहू । हम एक्का रैब किछु कहरै तँ कए रापक रैष्टा नै ।
- मगन- हमबा तोबापव रिसरास अछि । तू अथना नै क२ सकै छै । चल गामपव चल । तोहब पठ १गक सब रैरस्था हेते ।
- दूखन- चरू ।
(सरैक प्रस्थान ।)

पठाफेस ।



चाबि दूश- चाबि दूश-

- (चन्द्रशेक हरेली । समथ सौमका । चन्द्रशे आ मनीषा चन्द्रप्रभाक सँनधमे आपसी गप-सप्प क२ बहल अछि । यूँही सिकरेष्ट वगा क२ पीरै छथि ।)
- चन्द्रशे- चन्द्रप्रभा नामी-गामी ढावारासमे बहि बहली हेल । ढावारासक मानिक एतेक ठाँठ छथिन जे जूनि पछ । एकेछाँ एम्हब-ओम्हब नै क२ सकैए । सबकेँ दैनिक कष्टन रँनल छै । ओहीक अनुसाब सबकेँ चलैक छै । नै तँ गार्जनकेँ रँजा हुनके सँग वगा देल जाय ।
- मनीषा- रँरसथा तँ रँड नीक छै । झुदा जूग-जमाना खराप छै ।
- चन्द्रशे- अहाँकेँ जग रातक डब होय, ओ अपना सरहक अथितियाबक नै छै । ओ रूँछाएक अथितियाबक छै । ओ गप ओकरे चबिपव निर्भर करै छै । एगो गप रूँचै छि ?
- मनीषा- की, कहियौ नै ?
- चन्द्रशे- ओकर मन जदी एम्हब-ओम्हब करैक हेतै तँ हम-अहाँ झूठ तकिते बहि जायँ आ से केतौ भ२ सकैए । ओना एहेन चबिपवतारैला घटना किनको सँगे नै होन्हि से प्रार्थना हम सदिखन भगरतीसँ करैत बह छियनि । (होसली न२ क२ मबनीक प्रवेश ।)
- मबनी- मानिक, हिनके वग एतियनि हेल ।
- चन्द्रशे- की रात छियौ जे एतेक झनहबि सँममे एलै हेल ?
- चन्द्रशे- हे, हम जाग छी । रँड सँम भ२ गेलै । सँमो-राती नै देखि छै हेल । गप-सप्पमे वगल बही । तहन जाग छी तँ ?
- चन्द्रशे- रँस जाड ।
- (मनीषाक प्रस्थान । मँचपव अनुहाव अछि । डिर्बिया न२ क२ मनीषाक प्रवेश ।)
- नै नै । डिर्बियाक जकबी नै अछि । गप-सप्प अनुहारोमे भ२ सकै छै । रँकावमे मँष्टया तेर किथ जवते ? जाड, डिर्बिया नेने जाड । (डिर्बिया न२ क२ मनीषाक प्रस्थान ।)
- आरँ तौ कह, केतए एलै हेल ?
- (मबनी चन्द्रशेक वग जाय चाहै ।)
- हाँ हाँ हाँ हाँ, ओम्हरे बह । ओतैसँ राज ।



- मवनी- (ठांमहि कक्ति) एगो होसनी न२ क२ एनियनि हैन । रौथाके नाँ लिथेरौक डै ।
- चन्द्रशे- रैचरिही आकि रैन्हक बथरिही ?
- मवनी- रैच नैरै तँ आशि खतम भ२ जेते आ रैन्हकी बथरै तँ हेल छोड़ । सकै छिई ।
- चन्द्रशे- रैन्हकमे रैड कम पाग हेतो आ रैचनामे रैसी पाग हेतो । हमरा रिचावसँ रैचीए जे आ ओग पागसँ रैष्टाके स्वग्गव कीनि दही । ओगमे रैड नख्खा डै । रैठा याँसँ परिवारो चनतो ।
- मवनी- रौथा, कह डै हम पठर । ओग दुखारे ड कसि क२ भागिओ गेल छेलै । दू पवानी कहना-कहना ओकवा घुमा क२ गामपव खनलौ ।
- चन्द्रशे- सन, पठ १ग आरँ ओते समता नै बहि गेलै । रैड खचा नगै डै । तहमे मैथ्रिकसँ डूपव तँ आरो रैसी । तँ रैष्टाके पठरैक चक्रवमे नै पड़ । गरीर आदमी डै । रीको जेरै तेयो पार नै लगतो । नीक कह छियौ ।
- मवनी- मानिक, अपने ठाँके कह छिई । आगपव तँ आफद अछि आ रैष्टाके पठरैले ओते पाग केतएसँ खनर । कनी ककौथू घवपव सँ पड़ने अरै छी ।
- चन्द्रशे- जो, से के कहतो नै । कोनो काज रिचावि क२ कबी तँ रैठा याँ रात । (मवनीक प्रस्थान ।)
- अपन-अपन जोगावमे सभ बहै । स्वतवि गेलै तँ रैड नीक आ नै तँ घाँठा खोवहे नगए देरै । जानमे माँड हँसन तँ छैहे । ओगरेव रहन दू सए ठाँका रैसी न२ गेल बहै । (मनीषाक प्रवेश ।)
- मनीषा- की रात छेलै जे एते साँममे डोमीनियाँ आधन बहै ?
- चन्द्रशे- (ह्रस्ववागत) रैष्टाके नाँ लिथरैले होसनी रैन्हक बाथए आधन छेली । कहनिई तोँ ई हेलीमे नै पड़ । रैचि क२ स्वग्गव कीनि दही । रैड नख्खा हेतो । सएह बुझए गामपव गेली ।
- मनीषा- रैचैक डै उमेद की ?
- चन्द्रशे- उमेद तँ पूरा नगै डै । तहन तँ ओकव अप्पन रिचाव । जरदसती करैरना जुग तँ आरँ नै डै । जहिया छन तहिया कम नै स्वाबलौ । तँ नै आग मानिक कहरै छी ।
- मनीषा- हे भगरती, आ होसनी भ२ जेते तँ एगावह ठाँकाक मधुव चढ़े रह ।



- चन्द्रशे- कখনो-कখনो अछि हूँ जाग छी । भगरती लोभी नै होग छथिन ।
एगावह ठेकाक काज एकोमे भऽ सकैए । भगरती कोनो एस.डी.ओ. थोबहे
छथिन ।
(मबनीक प्रवेश ।)
- मबनी- मानिक, रैचैक रिचाव नै भेलै । रैन्हेके बथरै । रौथा कहलकै, हम
पठरैछा कवरै ।
- मनीषा- हम जाग छी । भानस-भानक जोगाव कवरौक अछि ।
- चन्द्रशे- रैस, जाड ।
(मनीषाक प्रस्थान ।)
तहन तू अपन समान देखा ।
(मबनी हौसली निकालि कऽ देखैले देली ।)
रौज केते पाग नैरै ?
- मबनी- केते पाग नैरै मानिक ? कम्मे नैरै जगसँ रौथाक नाँउ लिखा जाग ।
- चन्द्रशे- से तँ तूनी नै रैजरी ? आकि हम रैजरी ?
- मबनी- से तँ हमनी रैजरी । कम्मे देखून, दुगए हजाव । कितारौ सभ कानैक
छै ।
- चन्द्रशे- पहिने कहलै खाली नाँउ लिखैले नैरै आ आर कत छै कितारौ सभ
कानैक छै ।
- मबनी- की कवरै मानिक, जे जकरी छै से तँ लिहे पड़ते । आथिब ओही दुआरे
तँ रैन्हेके बथै छि । पेष्ट तँ कोनियाँ -पथियाँ कहुना चला नैरै ।
दुगए जहाव देखून ।
- चन्द्रशे- दु हजाव नै हेतौ पाँच सए हेतौ ।
- मबनी- ओगसँ काज नै हेतै । डेढ १ हजाव देखून ।
- चन्द्रशे- डेढ हजाव तँ नै देरौ । रैड कवरै तँ दु सए आरो देरौ । रैसी नैरै ?
तँ सुदिओ नै रैसी नगतौ ।
- मबनी- की कवरै मानिक, जे नगते से नगते । पहिने तँ हम जकरीकेँ
देखरै ।
- चन्द्रशे- देखरै, सात सए धरि नैरै तँ तीन ठेके सैकड़ नगतौ, एक हजाव धरि
नैरै तँ चारि ठेके सैकड़ डेढ हजाव धरि पाँच ठेके सैकड़ आ दु हजाव
धरि छह ठेके सैकड़ नगतौ । हुनो समानपव । नै तँ उन्हाक रैष्ट आरो
रैसी छै ।
- मबनी- हमरा डेबहे हजाव दथु ।



- चन्द्रशे- ठीक छै डेबहे हज्जब जे । झुदा तौबा कनी आरो सुदि नगतौ ।
- मवनी- किथए मातिक ? हम गबीर छी तँ ?
- चन्द्रशे- नै नै, से रात नै छै । तँ हमबासँ कोनियाँ-पथियामे दू सए ठाका रैसी न२ नेने छै, तँ ?
- मवनी- नै मातिक रैसी नै जेनौ । पसाबी जानि उचितोसँ कम जेनौ । खुसि नै कह छी मातिक । हिनके सपपत कह छियनि ।
- चन्द्रशे- हमब सपपत थेमै तँ आरो सुदि रठ १ देरौ ।
- मवनी- अपन रैष्ट सपपत कह छी, रैसी नै जेनियनि । कममे जेनियनि ।
- चन्द्रशे- केतारौ किछु कबमै तँ हमबा झूठसँ जे निकलि गेलौ से नगरै कबतौ । डेठ हज्जब जेरै तँ छह ठके सैकड़ नगतौ ।
- मवनी- मातिक, अथनिते कहने छेरि पाँच ठके आ तुबन्ते छह ठके क२ देरि ?
- चन्द्रशे- रैसी रज्जरे तँ आरो रठ १ देरौ । जेरैक छै तँ जे नै तँ जे ।
- मवनी- मातिक, अपना गामे रैन्करैना काज कोण नै करै छथिन । खाली अहण्टा करै छथिन । तँ ने मनमाना करै छथिन ?
- चन्द्रशे- (थिसिया क२) आरो झूठमे ताना नगा नै तँ फेब रठ १ देरौ । चूपचाप पागले आ जे ।
- मवनी- गतती भेलौ मातिक । आरो किछु ने राजरै । देखुन पाग (चन्द्रशे अन्दर जा क२ पाग आ डायबी अनरनि । पहिने डायबीपब पाग लिखनि । तेकब पछाति मवनीकेँ डेठ हज्जब ठाका हौसरी न२ क२ देरनि ।)
- जग छियनि मातिक । जदी हौसरी रैचैक रिचाब हेते तँ हिनके देरनि ।
- चन्द्रशे- ठीक छै अतिहै । नगा देरौ रैसीए । गबीर आदमी छै । मजबूब छै । हमब डोमीन सेहो छै । (मवनीक प्रस्थान ।)

पठाम्फेप ।



पाँचम दृश्य-

- (स्थान- मंगलक घब । मंगल कोनियाँ रीनि बहल थडि ।)
- मंगल- साँने गेल, से अथनि धबि ने आएल । पकड़ा तँ ने नेलके रँभना ?
केते बाति भइ गेल । खेब कथनि भानस-भात हएत ।
(दूधनक प्रवेश ।)
- दूधन- रौं, माए ने एले की ? कान्तिअष्टा अंतिम डेष्ट थडि । सेहो नेष्ट हागन
नइ कइ । केते बाति भइ गेल । कनी देखिणु गइ ?
- मंगल- देखही । (दूधनक प्रस्थान ।)
नगैए, उ रँभना हिज्जो करैत हेते । एहेन कज्जु देखल ने । एगो
सिकरैष्ट छह महिना चले छै आकि नख महिना से ने कहि ।
(दूधन आ मवनीक प्रवेश ।)
(थिसिया कइ)
- मवनी- तोबा एते देवी किअ भेलौ ? रँभना पकड़ा नेने छेलौ की ?
रँड सस्ता छै जे पकड़ा नेत । थापड़ा सँ झूह भसका देरै । रँड
पागरा थडि तँ अपना जगहपब ।
- मंगल- एते देवी किअ भेलौ से रौंज ने ?
- मवनी- मानिक रँड हिज्जो करै छेलौ । एतरे देरौ, एतरे ने, एतेमे एते सुदि,
ओते नेरही तँ ओते सुदि । गहए सभमे रँसी छैम गलि गेल ।
- मंगल- खेब, छोट ग प-सप । पाग केते देलकौ ?
- मवनी- डेठ हजाव डूहो छह ठके सँकवपब ।
- मंगल- तोबा नाथ । लिखा केते नगतौ ?
- दूधन- रौं, सबके एक हजाव नगै छै । झुदा हमबा सबके कनी छुष्ट छै । नेष्ट
हागन नगा कइ नख सए ।
- मंगल- दइ दही नख सए ठका । कान्हि नाँ लिखा नेत । आब पाग तँ अपने
नग रँटि याँ राख ।
(मवनी नख सए ठका दूधनके देलक ।)
- दूधन- रौं, कितारौ कीनरै । ओहमे पाँच सए नगते ।
- मवनी- पाँच सए आरो नइ ने । भेलौ ने ? (पाँच सए आरो देलक)
- दूधन- कहाँ भेलौ ? कोपी-कतम सेहो ने कीनरै । सभै सदन छै ।



- मर्गन- डुहो दए दही । ने तँ बमा-थैनेला हेल देथेतो । रौखा हम तँ छियो कबिया अछुद्वर भैस रँवरँवि । अपन नीकसँ पढ़-लिखि । पाग रँवरँद ने कबिहँ । केना प्रवरँ छियो से बुमिने छिही ।
- मवनी- ई ने ने कहए पढ़त एकवा । आ अपने बुझिबाव छै ।
- मर्गन- रैथै केतरो बुझिबाव बहते तँ राप नग रैथै बहते आ राप ओकवा उचित-अनुचित कहलै कबते ।
- दुखन- राँड, ई ने तँ निहिकीर बहह । ओना तँ अपन कबतरँ कबिते छलक आ कवरँको चाही । माए, भूख नगि गेलौ । कनी ओम्हरो देखही ।
- मवनी- रैस, हम जाग छी भनसा-भात करैले । आ एक सए ठंका न२ ने । (मवनी एक सए ठंका आरो देलक दुखनकँ । आ उ चलि गेली ।)
- मर्गन- (ह्रस्ववागत) रौखा, एगो रात पढ़े छियो । आरो ओते पाग ने ने नगते ।
- दुखन- नागगो सकै छै । ओना कनी-मनी तँ नगिते बहत ।
- मर्गन- से केतएसँ अनरै ?
- दुखन- ओगतलक ने । बसे-बसे सभलै हेते । हमरँ पबियासमे नगर छी जे केतो धुनि पकड़ि लेरँ अपना जेगावसँ ने हेते तँ कोनो दोकानमे नोकरी क२ लेरँ ।
- मर्गन- तँ तँ अपने बुमनक छै । जगसँ साँपो मवि जाए आ नाठीओ ने छुँए । से काज कबिहँ । (मर्गनक साव ओपीनदवक प्रवेश ।)
- ओपीनदव- पहना गोड़ नगै छी । (दाक पीरँ क२ नुमेत)
- मर्गन- रौखा, मामा एलौ । पानि नेने आ । माएकेँ कहि दिहनि । (दुखन ओपीनदवकेँ गोड़ नगि अनदव जा क२ पानि अनलक ।)
- ओपीनदव- भगिना खुम दनदनागत बह । रँड ठं भ२ गेलही । आरो भोज खाया । ने तँ दाकए पीखा ।
- मर्गन- एते बातिमे केतए सँ ?
- ओपीनदव- चनलौ पहना दुपहर । कहनिई एक कोस पएरे जागमे केते कान नगते । बस्तामे कनी दाक पीख नगलौ । तरीमे देवी नगि गेल । चनलो ने होग छल । कहुना-कहुना खसत-पड़त एलौ । (नुमेत) पहना, दाकक जेगाव कनी आरो नगाड ।



- मर्गन- अथनि साव, अ सभ छोट । रँड बाति भऽ गेलै । थागक ठैम भऽ गेलै ।
- उपनिदव- साव पटना, गहो नै बुनै छिनी, दाक भऽ जेते तँ थागक कोन काज । साव अमकथ अछि । रँकावमे एकवार्स रँहिनक रिखाह केनौ । पितीउत रँहिन अछि तँ छोटि दग छियो । नै तँ कहुँमेती छोट । नैतिथो । साव पटना, तँ कहियो नै सुधवमे ।
- मर्गन- साव, छुँनी सुधव । हमवा नै सुधवराक अछि । एनै केतएसँ से नै कह साव ? एते बातिमे कोन जकबी भेलौ ?
- उपनिदव- कथा-कहुँमेती नै एनियो, साव पटना । हम भगिनाक रिखाह कवरै अपन सागवर्स । केते दिनसँ तँग केने अछि साव सम्भव । थाग छुँनी भेल तँ एनौ । दाकक खचा ओकरे छै । साव सम्भव रँड धनीक अछि । जे कहरै से देते । (मुमि बहन अछि) (दुखनक प्रस्थान । पवनीक प्रवेश ।)
- मवनी- (रुस्रवागत) भैया, गोव नगै छिथ ।
- उपनिदव- खुरँ नीके बह दाय । आँव हान-चान रँटाँ याँ छै नै ?
- मवनी- हँ भैया, रँड रँटाँ याँ छै । बाति रँड भऽ गेलै । पहिने था नग जाग जा । तरँ कोनो गप-सप्प कबिहै ।
- उपनिदव- दाय, चन, अरै छी । (मवनीक प्रस्थान ।)
- साव पटना, थागले जाही नै ?
- मर्गन- किअ तँ नै जेरँनी से ?
- उपनिदव- नै, हमवा थागक मन नै छुँते । कनी भऽ जेते तँ दाक भऽ जगते ।
- मर्गन- एते बातिमे दाक केतएसँ ओते ? अथनि छोट, कान्हि देखन जेते । जग काजसँ एनै, से काज कव ।
- उपनिदव- तँ सएह रात कव । आ थागले नै जेरँनी ? नै तँ एते मगा नै । थेरौ कबिहै आ गपो-सपो हेते ।
- मर्गन- ठीके कह छै । दुखन माए, दुखन माए ।
- मवनी- (अनुदवर्स) की कह छै ?
- मर्गन- थेनाग एते नेने आ ।
- मवनी- किअ घब-अँगना नै छै ?
- मर्गन- उपनिदव कह छै एते थागले आ गप-सप्प करेले ।
- मवनी- अछटा, नेन अरै छिथ ।



- मर्गत- जल्दी नैन आ ।
(थेनाग न२ क२ मबनीक प्रवेश ।)
थो साव ।
- उपीनदव- नै थागक मन छै । तूही थो ।
- मर्गत- रँहिन दवरँज्जापव जे किछ कण-साग भेटै ओकरा अरँस्स कनियो-ने-
कनियो ५ गवहाज कबक चाही ।
- उपीनदव- तू तेहेन गप कह छै जे थाग पड़त । एगो चीज देख दे । जेरीमे
बखने छेनि ? छै की नै ?
(जेरीमे हाथ द२) छै छै । हमबा होग छेनि केतो खसि पड़लै ।
(जेरीसँ पत्नी निकालि) साव पत्नी, एतकार कह छेनियो तू थगपाग छेलै ।
आरँ भेलै न । देखनिही, हमबा केते पामव छै ?
- मर्गत- थेनागउ सवाग छै । थेरौ कव । गवम थेनाग सुखदगव होग छै ।
- उपीनदव- एगो गप बुझि नही साव पत्नी, दाक सड़नो थेनागके नीमन रँना दग छै ।
- मर्गत- छोट नरँव-नरँव केनाग । जे कबमै से कव ।
(उपीनदव दाक पीनाग आ थेनाग दू काज क२ बहन अछि ।)
- उपीनदव- साव पत्नी, तू अपन रँष्टाक रिखाह हमबा सागवसँ कवरँही की नै ?
- मर्गत- अथनि नै । कावण ओकर पियान पढ़'पव रँड छै । रँड ससगव छै ।
- उपीनदव- तगसँ की ? चसगव आदमीके रिखाह नै होग छै आनि नै करै ? तू
सब रँड भेलै । रँड सब पाकर आम होग छै । कथनि खसत कथनि
नै । कोनो ठेकान नै । अपन जीता-जिनगीमे पुतोहूके देख जे आ नैन
जुड़ । जे ।
- मर्गत- हमबा मनो हेतो तू तेहब भगिना नै मानतो ।
- उपीनदव- किछ, यवमे तेहब जूति नै चलै छै की ?
- मर्गत- जूति तू हमरे चलै छै । झुदा रँष्टा नम्वर भेलै । ओकरो कहन कब
पढ़' छै । नै करै छिई तू भागव नगै । की कवरँ एगो रँष्टा अछि ।
माया येव नगै । भगिनेके प्रहृही ।
- उपीनदव- भागीन, भागीन ।
- दूखन- (अनदवसँ) हगै अरँ छी मामा । (दूखनक प्रवेश)
की मामा, की कहवहक ?
- उपीनदव- सुनै छिखह, तू रँड चसगव छह । सल्लग गप बुझिते हेरहक । रँछो नै
छह । जूथान भ२ गेहह । माथ-रँप रँड भेलह । हमब रिचाव छह जे तू



रिंखाह क२ नए । हमब सागब रँड सुल्लवि डै । हेमामागीन आ हमब
सागबकेँ एकठाम ठाढ़ क२ दग तँ हेमामागीन हागत भ२ जेते ।

(मंगल आ ओपीनदब था-पी क२ हाथ-झूँह धोतनि ।)

दूधन- ग रात राँडकेँ प्छहक । हम किछु नै कहरह । गाबजियब रएह छथिन ।

ओपीनदब- की रैह पहुना, डिवहावा थेले जाग छै । ओकरा प्छहक तँ ओकरा
प्छहक । हँ की नै कह ?

मंगल- अथनि नहियेँ रूमनी । अथनि पढ़ए दही भागिनकेँ । दु-चाबि रँथमे देखल
जेते ।

ओपीनदब- जौँ रात नै मानलें साब, तँ जाग छी ।

(ऊँठि क२ जागले तैयाब होगत ।) झुदा एगो गप रूमि ले जे तूकपब
नै, से कथीदूनपब । अँ रौ साब, तोबा रैष्टाकेँ डमेबमे हमबा चाबि गो
पिया-पुता बहए । अथनि अठावह गो छै । तँ अपन रैष्टाकेँ रूठ ाड़ि मे
रिंखाह कबिहँ आ कष्टहब नीहँ ।

मंगल- मामा भ२ क२ तँ एहेन रात नै कही, साब ?

ओपीनदब- आरँ हम ओहिना कहरौ साब । नै हेते न, तँ हमही क२ नैरै । ओब
की ? सागबसँ हमबा लोभ अगछे । साब ससुब-सासु रूमिमे अछि । कोनो
चाबो क२ लोभ भेल छै ? नै । देखा क२ । एगो रँछो भेल छेलै ।
नाज दूआरे धाबमे हम अपने फेक एलौ । हमबा कम रूमि छिनी साब ।
हम रँड पछुतल फकीब छिई ।

मंगल- राह साब, पिनौना काज करैमे पछुतल फकीब छै । ग आदत रँड खाप
छै ।

ओपीनदब- हमबा एहिना बहए दे । हमब रात नै माने जाग गेलें तँ तूँ छु घब आ
हमछुँ घब । हमबा तोबा कोनो मतनरँ नै, कोनो सरनष नै । आगसँ
रुईमैती खतम । चतनियो ।

(ओपीनदबक प्रस्थान ।)

पठाम्फेस ।



छथम दृश्य-

(स्थान- चन्द्रशेक ठरैली । चन्द्रशे ठूँही सिकरैछै पीछे छथि । चन्द्रशे आ मनीषा चन्द्रप्रभाक रिश्ताक सँरन्धमे गप-सप क२ बहल छथि ।)

मनीषा- आरै अपन चन्द्रप्रभाक डमेव अछाहब भेल अरैछै । कन्यादानक सँरन्धमे की सोछै छिछै ?

चन्द्रशे- की सोचरै अछनि ? सोचलाह गप कथनो भैयो जाग छै आ कथनो नहिछै होग छै । भगरतीक जे अछछा हेते सधह हेते । अगले अथनेसँ हमबालोकनि किअ अरुसियाँत होग ?

मनीषा- से तँ ठीके । झुदा कन्यादान रँड पौघ जग छी । रँहुत पहिनेसँ एकव ओबियान-रात कब पड छै ।

चन्द्रशे- अहो रात कियो नै कछैत ।
(चन्द्रशेक पड सी आ शुभचिन्तक ज्ञानानंदक प्रवेश ।)

ज्ञानानंद- भैया, गोब नगै छी ।

चन्द्रशे- जीरू, जागू आ दनदनागत बह । आग केलेव सुकज उगले हेल ?

ज्ञानानंद- सुकज तँ सब दिन अक्क बग उगै-डूमे छै कबीर कबीर । झुदा कबरै की ? हूबसतिक रँड अभाब बह छै । तशिक खेलाड १ जकाँ भवि दिन ओहीमे लगल बहनाग नीक नै लगैछै । अपन दुख-धामे लागल बहलौ । अ हो जे आग एलौ से पेपबमे एगो रँड खबार रात पठनिछै ।

चन्द्रशे- की यो ? की पठलौ यो ?

ज्ञानानंद- की पठर भैया ? देखै आ सुनै छी तँ रँड छुगन्ता लगैछै । छौड १- छौड १ सब तेतेक उड १ तँ भ२ गेलैछै पठि ते-पठि ते दूनु फवाड । दविभंगेक एगो कोनदीन छात्राससँ एगो छौड १क सँग फवाड भ२ गेलैछै । जित्तासा भेल जे अछूक पत्नी तँ दविभंगेमे पठि बहली हेल ।

चन्द्रशे- ज्ञानानंद, हमबा पूर्ण रिसरास अछि जे हमब रैछै एना नै क२ सकैछै ।

ज्ञानानंद- से तँ हमरो रिसरास अछि । झुदा छिछै मने । एकव कोनो ठेकान नै । कथनि की कबत की नै । जथनि पेपबमे पठ छी तँ छुगन्तामे पड जाग छी जे दुनियाँ केते रैशर्म भ२ गेलै । कछ तँ पचास रँथक रूठरा केतो आठ रँथक छौड १ सँग बह । कहू तँ हाथी आ चूँकी मेर केहेन हेते ?



- मनीषा- अहाँ सभ खाली अन्कब गल्ला-मील्ला करै छी । अपना-अपनापब बियान दियौ । चन्द्रप्रभा पापा, कनी फोनसँ छ्वात्रासक मातृकसँ प्रुडियन् जे अपन रूचक की केना हल-चल छै । आ ले तँ एक वपकन चलि जाड ।
- चन्द्रशे- जागमे तँ रैसी पाग खचा हेते आ फोनसँ कम्मे । पहिने फोनसँ बुनै छिई । तहन देखल जेते ।
- मनीषा- त२२ सहै जल्दी कर ।
(चन्द्रशे मोरौगतसँ छ्वात्रासक मातृकसँ गप करै छथि ।)
- चन्द्रशे- हेरनो नम्मा भाय ?
- नम्मा- (नेपथ्यसँ) हेरनो चन्द्रशे भाय । कहल जाड की रात ?
- चन्द्रशे- भाय कहनौ जे हमब रैषी चन्द्रप्रभा कप नं. 15 ठीक-ठाक अछि किने ?
- नम्मा- एकदम ठीक अछि । जखने पाँच मिनट पहिने छ्वात्रासँ घुमि-घुमि क२ एनौ हँ ।
- चन्द्रशे- भाय, पेपबमे देखलिई गडरैड सबरैडरना रात । हुनो दबिभंगेक छ्वात्राससँ । ठीके रात छिई की ?
- नम्मा- रात तँ ठीके छिई भाय । झुदा हमब छ्वात्रासक रात-रैरस्था किछ आँव अछि । चिन्ताक कोनो रात नै ।
- चन्द्रशे- हमबा तँ कोनो चिन्ता नै । झुदा चन्द्रप्रभाक मम्मीकेँ भ२ गेल छैननि हन । ओना आँ नै हतनि हुनको ।
- नम्मा- अपने सभ निश्चित बहियौ, नाहिकिब बहियौ । भाय हम तँ ए बुनै छी जेहेन अपन रैषी तेहने अन्करो । तहिन नै हमब छ्वात्रासक नाँ चले । केते छ्वात्रास खुजल आ रँग भेल । झुदा हमब छ्वात्रास दनदनागत अछि । तहमे अखनि राँवहमीक परीक्षा चलि बहल अछि से आरो कड़ाग क२ देने छी । हम कोनो झुर्थ नै छी । पवान एम.ए. छी ।
- चन्द्रशे- नम्मा भाय, अहाँक रँहूत-रँहूत धन्यवाद ।
- नम्मा- अछुकेँ रँहूत धन्यवाद ।
(दुनु गोरे मोरौगतसँ गप रँग केननि ।)
- चन्द्रशे- ज्ञानंद आ चन्द्रप्रभाक मम्मी, अहाँ सभ मोरौगतपब अराज तेज स्नरै केलिई सभ गप । अही सभ दुआरे अराज तेज क२ देने बही ।
छ्वात्रासक रैरस्थसँ अहाँ सभ संतुष्ट कछी काने ?
- मनीषा- हँ, संतुष्ट छी ।
- ज्ञानंद- संतुष्ट तँ छी झुदा ।



- चन्द्रशे- झुदा की ?
- ज्ञानानंद- झुदा अरु जे चन्द्रप्रभाक डमेरो रिखाह गोज होगत हेते ।
- चन्द्रशे- है, अठावहसँ कमी रैसी । अ तँ रिखाहक निम्न सीमा अछि । झुदा पठ-रिनाकेँ रिखाह कइ कूठित नै रैना दी । जे जिनगीमे किछ कबए चोए, ओकरा प्रातःसाहित कबक चाही । हमब रैष्टीक पठ-अपब रँड जेब छै आ हमरो प्ररन अछि जे ओकरा डाकूँव रैनारी तथा जातिमे बाजा खनदानमे रिखाही ।
- ज्ञानानंद- भैया, रैसी डमेबमे रिखाह करैमे नडाँ का-नडाँ कीक कष्ट-छष्ट हुअ नगै छै से ?
- चन्द्रशे- उ होग छै, निठन्ना सबकेँ रा अमकथ सबकेँ । योग्यकेँ योग्य चाही । अ, सब चाह छै आ डागमे समाए नगै छै । तहिन एकठ्ठा रातक पियान अरँस बथक चाही जे सब किछक तूक होगत अछि ।
- ज्ञानानंद- सएह कहनौं भैया । ओना अपने तँ बुनबुक छीह । आरँ भैया जेरौक आत्ता दिअ । केँक ठाँग भइ गेलौ ।
- चन्द्रशे- जाड, अहाँकेँ अरैव भइ जाएत ।
(ज्ञानानंदक प्रस्थान ।)
- नम्रमा- (नेपथ्यसँ) हेन्रो, भाय चन्द्रशे ।
- चन्द्रशे- हेन्रो नम्रमा भाय । कछ, की हार-चार ?
- नम्रमा- पहिने अपने मिठाग नइ कइ दबिभंगा जावदी आड ।
तहिन हार-चार बुनबँ फनिँ ।
- चन्द्रशे- कनियौं अशीवा कक ने ?
- नम्रमा- गप एतेक स्मर छै जे अरै तहने कहँ ।
- चन्द्रशे- कम-सँ-कम गपक रिषय कहि दिअ आ कहए पड़त ।
- नम्रमा- नै मानरँ तँ गपक रिषय बुनि लिअ, परीष्कार बिजल्ल ।
- चन्द्रशे- रैस, हम दूनु पवानी आरौ आकि असगरे आरौ ।
- नम्रमा- दूनु पवानी आरौ तँ घाँसँ टिकन । नै असगरे आरौ तँ डुहो रँटाँ याँ ।
- चन्द्रशे- दूनु पवानी आरौ बहल छी । डुहो रँट दिनसँ कह छेली जे दिबभंगा जाएँ दबिभंगा जाएँ ।
- नम्रमा- आड, दूनु पवानीकेँ स्रगत अछि ।
(दूनु पवानी दबिभंगा जाए बहल छथि ।)



चन्द्रशे आ मनीषा अन्दर जा कऽ रहरैथि । मचपब घुमि बहर छथि ।
अन्दरमे नम्मा रैसन छथि । पर्दा हटैए । नम्मा ठाढ़ भऽ छनि
जागए ।)

नम्मा- नमस्कार चन्द्रशे भाय ।

चन्द्रशे- नमस्कार, नमस्कार नम्मा भाय ।

नम्मा- नमस्कार मैडम ।

मनीषा- नमस्कार नमस्कार । (तीनु रैस जाग छथि ।)

चन्द्रशे- कछु भाय, किछए रैजेनौ ?

नम्मा- पहिने मिठाग बाड तहिन कहै ।

चन्द्रशे- नै मानता भाय । दियन बखने छी से ।

(मनीषा नोबासँ मिठागक डिब्बा निकालि नम्माकेँ देलनि ।

नम्मा- आरै भेल । आरै सुन । अहाँक चन्द्रप्रभा हमब छत्रासक दु सए रिटार्थीमे
पहिन स्थानपब बहनी राबहरीक परीक्षामे तथा कौनेजमे तेसब स्थानपब
बहनी ।

चन्द्रशे- आ डिरीजन कोन भेलनि ?

नम्मा- डिरीजन फसल भेलनि ।

(चन्द्रशे आ मनीषा हसकी दग छथि ।)

चन्द्रशे- कनी रैषीकेँ रैजरियो तँ ?

नम्मा- चन्द्रप्रभा, चन्द्रप्रभा, चन्द्रप्रभा ।

चन्द्रप्रभा- (अन्दरसँ) जी सब, अरै छी ।

नम्मा- मम्मी-पापा एना हेल । कनी जल्दी आउ ।

(चन्द्रप्रभाक प्रवेश । तीनुकेँ एब छुरि गोब लगली । चन्द्रप्रभा अति प्रसन्न
छथि ।)

अपन मम्मी-पापाकेँ परीक्षाक विजल्ल रैतरियन ।

चन्द्रप्रभा- राबहरीक परीक्षामे हम फसल डिरीजन केनौ छत्रासमे पहिन स्थान आ
कौनेजमे तेसब स्थानपब छी । मेडिकलक विजल्ल अही रीचमे अरैरैना
अछि ।

नम्मा- पहिने विजल्लक खुशीमे सब कियो मिठाग खाग जाउ । तहन अगिला
कोनो गप कबर ।

चन्द्रशे- भाय, अपनक जे रिचाव ।

नम्मा- रिचारे रिचाव ।



- (ओही डिर्बामे सँ सभ कियो मिठाग खा बहर छथि । सभ एक-दोसबरकेँ मिठाग खुआ बहर छथि ।)
- रैष्टी, कनी पानि नैन खाड ।
- चन्द्रप्रभा- जी सब, तबत खनलौं ।
- (चन्द्रप्रभा खन्दबसँ पानि खनली । सभ कियो हाथ-झूँह धोतनि ।)
- रम्भामा- भाय, हमबा पूर्ण आशी अछि जे चन्द्रप्रभा मेडिकल सेहो निकालि लेती ।
- चन्द्रशे- रैष्टी, परीक्षा नीक भेल छेलह ?
- चन्द्रप्रभा- परीक्षा मेडियम भेल छल पापा । ई रैक्का क्रेचन रँड हाडि छल ।
- उम्मीद तँ छै । झुदा होग जे ।
- (पेपबरौता नुठनक प्रवेशी ।)
- नुठन- पेपब पेपब, ई पेपब । आम्का ताजा समाचार । नरका समाचार ।
- मेडिकलक बिजल्लै ।
- रम्भामा- एगो पेपब देरौ रौखा ।
- नुठन- जी सब । अरस्स लेल जाड ।
- (नुठन रम्भामाकेँ पेपब दह पाग लह प्रस्थान ।)
- (रम्भामा आ चन्द्रप्रभा गौबसँ बिजल्लै देखि बहर छथि ।)
- चन्द्रप्रभा- सब, हमब बिजल्लै छै पाँट नमबमे ।
- रम्भामा- एएह छी ने ?
- चन्द्रप्रभा- जी सब ।
- (खुशीसँ रिबोव छथि चन्द्रप्रभा । हेल सभकेँ पएव छुरि गोब लगै छथि ।)
- रम्भामा- जाड, चन्द्रशे भाय, अहाँ जीतलौं । पहिल थपमे मेडिकल-एजिनियरिंग निकालनाग लोहाक चना चिरेनाग छी । अहाँ रहत भाग्यशाली छी । जाड, अहाँक रैष्टी आरि डाक्टरब भह गेली ।
- चन्द्रप्रभा- अथनि कोन आशी पापा ? बस्ता रँड नमह छै ।
- रम्भामा- बस्ता केतरौ नमह छै । झुदा हमबा रिसरास अछि किने ? हमब रिसरास जलदी फेल नै करैए ।
- चन्द्रशे- आगु की केना खर्च लगते भाय ?
- रम्भामा- आगु खर्च तँ छैहै रैसी । झुदा जिनगीओ रनि जाग छै किने । कहल जाग छै, मनी रिगेष्ट्स मनी । यानी धनसँ धन कमाएल जाग छै । की अपने सम्भल नै छिई की ?
- चन्द्रशे- एकठा किछु अँदज अपने रता देतौं । तँ रँटा याँ बहते ।



लक्ष्मी- कम-सँ-कम दस लाख तँ मानरै करियौ ।
चन्द्रशे- चरु तहन देखन जेते । रीसो धरि खचा हेते तँ चिन्ता नै । ओगस
आगु सोचा पड़ा ताए । रीस तँ अथनि हमरा एकाडन्टमे अछि ।
चन्द्रप्रभा मम्मी एक रैब दिन थोनि कऽ हँसु । गमसम किछ रैसन छी ।
अहाँ डाक्टरक मध भेलै । ओ रैड पैघ गरिक रीत छी । एक रैब
हँसु ।
(मनीषा हँसरी ठहका मारि कऽ ।)

पठारुप ।



सातम दृश्य-

- (स्थान मंगलक घब । मंगल पथिया आ मवनी कोनियाँ रीं न बहल अछि ।)
- मवनी- दुखन राँउ, काहि हम मणिकान्त मानिकक अंगना गेल बही कोनियाँ-पथिया नह कइ । मानिक अपन रैष्ठपव खासियाग डेनथिन जे तीन रैबसँ मैथ्रिक बहल करै छै । तू केहेन सडल रिद्धाखी छै । केते पाग तू खबच केनेँ हेल । देखली तँ डोमोनक रैष्ठकेँ । सौसे असकृतमे नाँउ केतक । सएह देखलक । पागरनाक पिया-पुता पठरै ले करै छै आ गरीरलक पिया-पुता पठरै ले डो-डो करै छै । हँ, पागरनामे चन्द्रशे मानिकक रैष्ठ कहांदुन रँड नीक जकाँ पठरै छै ।
- मंगल- कह छै, बूढ़रक मुगला अनका खातिब । अपन काज कब आ अपन चिन्ता कब ।
- मवनी- से तँ ठीके कह छलक ।
(मवनी आ मंगल अपन-अपन काजमे लगि जाअए ।
दुखनक प्रवेश । माता-पिताकेँ पएब छुरि कइ गोब लगैए ।)
- मंगल- रौखा, की रात छिई ? आग रँड खुशी छै ।
- दुखन- राँउ, हम दुगो परीक्षामे पास भेलिख ।
- मंगल- कोन-कोन दुगो परीक्षा ?
- मवनी- तू बूमरलक से ?
- मंगल- ले बूमरै तँ ले बूमरै । कोग पछते तँ कहरै किने ?
- मवनी- तोबा मने ले बहतह ।
- मंगल- ले मन बहते तँ तोरे रँजा कइ नह जेरौ कहले । रौखा कोन दुगो परीक्षा पास केनेँ ?
- दुखन- राबहरी आ अंजिनियरिंग ।
- मंगल- की कहलिही ? राबमी आ अंजिनिग ?
- दुखन- ले राबहरी आ अंजिनियरिंग ।
- मंगल- की होग छै अ दुनु परीक्षा पास कए कइ ?
- दुखन- अंजिनियर रने छै । हम अंजिनियर रनरै ।
- मंगल- कहिया रनरिही ?
- दुखन- अथनि रँड देवी छै । पहिने कोनेजमे नाँउ लिखेरै । पास कवरै । तेकब पछाति अंजिनियर रनरै ।
- मंगल- नाँउ लिखैमे हेल पाग लगते ?



- दूधन- हँ, पहिने हजारमे नगौ छेलै । झुदा आरि नाथमे नगते ।
(माथपव हाथ बथि मंगल गन्म भ२ गेलथि ।)
- मवनी- किथए गन्म भ२ गेलहक ? कम-सँ-कम गपो तँ बुमि नहक । नै हेतह
तँ छोडा दिहक । रौखा, केते पाग नगते सभल मिला क ?
- दूधन- रँड कम तँ२२ छह नाथ ।
- मंगल- छ नाथ छ नाथ, छ नाथ ।
(मंगलकेँ चोन्ह आरि जाग छन्हि । थसि पडि छथि । मवनी खँचबासँ
मंगलक झूठपव हरा दगए । दूधन अन्दबसँ पानि आनि झूठ पोछैए ।)
(कनीकान पछाति मंगल हेशिमे अरैए ।)
- मवनी- तोबा चिन्ता किथए होग छह ?
- मंगल- चिन्ता किथए नै हएत आ चोन्ह किथए नै आएत ? छ नाथ ठाका कम
भेलै । रौप रे रौप, छह ना२२थ ।
- मवनी- नै हेते नै तँ होसनी रैचि देरै । आ डीहो रैचि देरै ।
- मंगल- नै प्रबते तँ देखन जेते । जगक मानिक जगदीशि होग छै । तँ
चिन्ता नै कबह । रौखा, गंजीयव भ२ जेरही तँ पाग केते कमेरही ?
- दूधन- कम-सँ-कम पचास हजार महिना । नाथो भ२ सकै छै ।
- मवनी- तँ तँ हिमत नै तावरी । तूझ हिमत नै तावह दूधन रौड ।
- मंगल- खाली कहनासँ हेतो आकि उपाए सोचरिही ।
- मवनी- नै हेते तँ होसनी रैचि नैर, दु-चाबि धुव डीह छोडा क२ सभल डही
रैचि नैर आ तछसँ नै हएत तँ रौखाक रिखाहक गप क२ नैर धनिकहा
कहुँमसँ । रिखाह गंजीयव रैनना रौदे हएत । तगले ओपीनदव हमव
छैहै ।
- दूधन- माए, एकव माने नै बुमनिथौ ।
- मवनी- एकव माने आ भेल जे ओपीनदवक सागवसँ रिखाहक गप क२ नैर आ तारै
ओकव सम्भव तोहव पढ़ाक रौकी खच देखिन । गंजीयव रैनना पछाति
तोहव रिखाह ओपीनदव सागवसँ हेते ।
- दूधन- आ जौँ भरिसमे रिखाहमे कोनो तबहक रैरधान आरि जाए तँ की
हेते ?
- मवनी- की हेते । किछ नै हेते । ओपीनदवकेँ समना-बुमना क२ कहरै एना-एना
रैरधान छै, से की केना कवरहक । कोनो नै कोनो उपाए हेरैरै कबते ।
- दूधन- रौड किछ रँजिते नै छथिन आ तोहव रिचाव हमवा नीक नै नगैए ।



- मवनी- एकठा कब रौंखा, दून् माय-पूत मणिकान्त मातिक ईठाम चर । हुनकेसँ रिचाव पुछरनि । रैड कारिनि आदमी छथिन ।
- दूथन- चर माथ, हुनके लग । अपन गाममे रूज्झा आदमी मानल जाग छथिन ।
- मवनी- दूथन रौं, तूँ गामेपब बहल । हम दून् माग-पूत कनी मणिकान्त मातिक ईठाम अरै छी ।
- मंगल- रैस, तूँ सब जे, जल्दी अछिहै । हम जाग छियौ सुतेले । हमरा मन खबार नगै छै ।
(मंगलक प्रस्थान । मवनी आदूथन मणिकांत ईठाम जा बहल अछि । अन्दबमे मणिकांत रैसल छथि । पर्दा हठैए । गप सप शुक होएथ । फेर पर्दा अछै ।)
- मवनी- मातिक, गोब नगै छी । (दूथन सेहो पएब छुरि प्रणाम केतक ।)
- मणिकांत- कछु डोमीन, आग की रात छै जे दून् माग-पूत ईठाम हैन ?
- मवनी- रौंखा कोनदीन परीक्षा पास केतक । ओगमे नाँउ निरैए चाहै । सएह रिचाव पुछैए अनियनि हैन ।
- मणिकांत- कथीमे नाँउ निखरैए चाहै छीही रौंखा ?
- दूथन- अंजनीयबिगमे । पाँचम रैंक अछि ।
- मणिकांत- (उठि क२ पीठ ठोकेत) राह । राह । राह रैछी । । रैहूत सुनब । ई समाजकेँ तूँ प्रतिष्ठा रैठ १९ देहलीन । तएले हमब हार्दिक असीबराद आ हार्दिक शुभ कामना । आर रौंज, तैवा समस्या की छै ?
- दूथन- मातिक, समस्या तूँ रैड पैघ छै । एडमिशन आ पठ १९क खर्च । गाबजियन कह छथिन- होसनी आ डीह रैठि देखौ । तएसँ नै हेते त२२ कोनो धनिकता हूँमसँ रिखाहक गप क२ हुनकासँ पाग न२ क२ पुरैरौ । रिखाह पठ १९क राद हेते ।
- मणिकांत- (किछु सोचि क२) ताबत नईआ नईका रिछै । मजबूरीमे किछु भ२ सकै छै, किछु कबए पड़ै छै । झुदा हूँमसँ पाग न२ क२ पठनोग नीक नै होग छै । काबि एगो थिसा मन पड़ैए । एक आदमीकेँ अपन रैछैकेँ मेडिकलमे नामांकन करैरक बह । पागक अतारमे उ हूँमसँ रिखाहक नाँउपब पाग न२ क२ नामांकन करैतक । पठ १९ पुरो नै भेलै आकि ओग भारी डाकूबकेँ रिखाह कबए पड़ै । पठ दिमसँ ओकब धियान कमलै । पविषाम भेलै जे उ परीक्षामे फेर भ२ गेल । हूँम खर्च देनाग रैन क२ देलनि । उ डाकूब नै घरक आ घाँसक बहल । हाबि-थाकि क२ हूँम



कथए रैब खर्चा देननि आ कथए रैब रैन केननि । रौबह नाथ रुईम खर्चा
केननि । पछेतीमे थूकम-फुल्लम भेल । नडा की छोड़ १-छोड़ १ भेल ।
केशी-होदारी भेल । अन्तमे नडा कीकै ओकरा बाथए पड़लै ।

दूधन- फेब ७ पठनकै की नै ? डाकूब रैनलै की नै ?

मणिकार्ति- हँ रैनलै ।

दूधन- केना रैनलै ?

मणिकार्ति- सबकारसँ ज्ञान न२ क२ ।

दूधन- की हमबा ज्ञान भेटै सकैए छै ?

मणिकार्ति- हँ, खरसँ भेटैते । ज्ञानक निथम छै तँ किथए नै भेटैते ? झुदा शुक्रमे
नै भेटै छै । किछु रौदमे भेटै छै । हमब रिचाब गहए जे पहिने
जेना-तेना एडमिशन न२ ले । हँब ज्ञान न२ क२ पठ १ग पूर्ण करिहै ।
झुदा रिखाक चक्रबमे नै पड़ आ नै रुईमसँ पाग न२ क२ पठ । ३
जोगाब रौड नहवारना होग छै । ईसँ आगु अपन रिचाब ।

दूधन- अहीक रिचाब बहते । मानिक, हम सब जाग छी ।

(दूधन झूहसँ प्रणाम केनक । दूनु माग-पूतक प्रस्थान ।)

मणिकार्ति- ३ छोड़ १ गदवीक नान छी । पठक एहेन सुनब जित्तासा भगरान
केकरो-केकरो दग छथिन । आरँ १ ७ गंजीनियब हेरैरै कबते । हमबा
सब एतए पचास घब छी तगमे एकांठा हाकिम-हुकूम नै छथि । झुदा दु घब
डोममे एगो गंजीनियब बाथु भागए गेल । हमबा सरैक पिआ-पूता
बगसीमे चुब बहए । तहन एहेन नम्र्य धरि केना पहुँच सकत । **थेब,**
भगरान सबकै भना कबथुन ।

पठाम्फेप ।



आठम दृश्य-

- (सथान- चन्द्रशेक हरैली । चन्द्रशे दुनु पवानी रैष्टीक सरिन्धमे गप-सप-
क२ बहत छथि । सिकरैष्ट धवा क२ पीरै छथि ।)
- चन्द्रशे- चन्द्रप्रभा मम्मी, रूचि एत दुब पढ छति गेली जे मन होए छै छै कबी
तँ झुकिर । कनी दुब छै रैष्टीव । रौप रे रौप, जागत-जागत-जागत
पतन पड़ि गेल । छैनमे रैसत-रैसत सतराग उथरि गेल । तथनि
एगो छि जे मोरौगत द२ दैरि छैन । ओगसँ गप-सप होगत
बहत ।
- मनीषा- मोरौगत तँ भने द२ दैरि छैन । झुदा२२२ ।
- चन्द्रशे- झुदाकी ?
- मनीषा- झुदा एत जे मोरौगतक प्रयोग लोक अथनो-सँ-अथनो काजमे करैए
जुगसँ केतेछाम केते बगक दृष्टिना भेल ।
- चन्द्रशे- सभ कियो अपन-अपन रूषि-रिरेकक अन्साव मोरौगतक प्रयोग करैए ।
तगने केते सद्द उषर । हमबा अपन रैष्टीपव भरोस छि जे उ
मोरौगतक गत प्रयोग नै कवती । की अहाँकेँ ओकवापव भरोस नै छि
की ?
- मनीषा- हमब रैष्टी डाकूबी पढ १ग पढ १ए । कोनो अमकथ छि जे उ अथना
काज कवत । हमरो ओकवापव पूरा भरोस छि ।
(मवनीक प्रवेश ।)
- मवनी- मातिक, गोब नगै छी । मरिकागन, गोब नगै छी ।
- चन्द्रशे- राज की रात छै ?
- मवनी- मातिक, हमब छौड़ १ पढ १ खातिव हमबा परेशान क२ देखक । कोनो दशा
रौकी नै छि । हेल क२ छै कोनदीन पढ १ग कवर ।
- चन्द्रशे- कोनदीन पढ १ग नै, गंजीनियबिगक पढ १ग ।
- मवनी- हँ हँ, सध ।
- चन्द्रशे- सनलो तँ रैड मन प्रसर भेल । झुदा सोचलो तँ सोचि ते बहि गेलो जे
ओते पाग उ सभ केतएसँ खानत जे रैष्टीकेँ गंजीनियबिग पढ १एत ।
- मवनी- तहीने एलो मातिक । की उपाह हेते ?
- चन्द्रशे- उपाह हम की रता देरौ । हम जे कहौ से तँ सभ थोड़हे कवमै ।



- मवनी- मानिक, रिचाव लेरौक चानी दससँ । झुदा कबक चानी सोचि-रिचावि क२
अपना मनसँ ।
- चन्द्रशे- सुन, तँ सब ई पठ १गक नपौड़ १मे नै पड़ । रँड खर्च छै रँड । हमब
रैष्टी डाकूँबी पठ १ग पठ १ए । से, हमबा सबकेँ डुपब-नीचाँ सुमागए ।
आ तौबा की हेतौ ? तौहब रैष्टी तेज छै । कोनो तबहँ कोनो पंग
गामेमे कबा दही । रँडि याँ पाग कमा क२ देतौ । नै तहसँ होग छै
तँ एगो कब ओकबा पैजोर-दहोरी पठा दही, रँड पाग कमा क२ देतौ ।
दुगए-चावि रँथमे धनिक भ२ जाग जेमेँ ।
- मनीषा- ठके तँ कह छथि । पहिने पेष्ट देखरँ की पठ १ग देखरँ ? हम जाग छी,
रँबतन-रौसन ओहिना छट्टि । (प्रस्थान ।)
- मवनी- मानिक, नै हेते नै तँ होसरी रैचि लेतथि ।
- चन्द्रशे- तगसँ केते हेतौ । नाँउ लिखरँ जोग नै हेतौ ।
- मवनी- कहाँदिन चानी रँड महग छै, तैयो नै प्रबते ?
- चन्द्रशे- नै प्रबतौ । जदी डीहो रैचि लेरँही तँ कहना प्रबतौ ।
- मवनी- मानिक, हम सब अमकथ छी । नख-छथ किछो नै रूने छिथि । नै हेते
तँ, कनी बाथि डीहो रैचि देरँ ।
- चन्द्रशे- जदी से रिचाव छै त२२२ घबरना आ रैष्टी दुनूकेँ रँजा खान । १ सब
काज झँजरांनी नै होग छै ।
- मवनी- रैस, रँजेने अरँ छथि । (मवनीक प्रस्थान ।)
- चन्द्रशे- जूब्रम भ२ बहन छट्टि । डोम भ२ क२ गँजीनियब रँनत । ई गलाकामे
एकठे गँजीनियब नै छै । डाकूँरो हमरैष्टी रैष्टी रहत । साँठि-सन्तवि घब
झाँझ छट्टि । केकरो कोनो नाज नै जे पिया-प्रतारै पठ १एत-१ नखाएत
आ कारिन रँनाएत । कह जाग जाएत हम रँडका जाति छी रँडका । झाँझ
छोड़ १ सबकेँ देखै छिथि भाँग खागत, दक पीथित, गाँजा पीथित, तशि-
तशि खेलेत । नाजसँ अपने झड़ १ घुमा नग छी । कहरँ तँ नगड़ १
रहत । एहेन काज किअ कबरँ । खास क२ झाँझ छैनमे देखै छी जाति
डुँच आ कर्म नीच ।
(मंगल, मवनी आ दुखनक प्रवेश ।)
- मंगल- मानिक, गोब नगै छी ।
- दुखन- मानिक प्रणाम ।
- चन्द्रशे- की रौखा, तूही गँजीनियबिगमे एडमिशन कबरँ छौ छै ?



दूधन- ज़ी मानिक ।
 चन्द्रशि- मंगल, तौहब घबनी हमरा तग हौमनी रून्क बखने छौ । उ रैचते आ
 डीहो रैचते एकवा एडमिशन नेन । ठीके रात छौ ?
 मंगल- ठीके छिई ।
 चन्द्रशि- रिचाव पक्का छौ किने ?
 मंगल- हँ मानिक । खाली डीहमे सँ पाँच धुव बखरै ।
 चन्द्रशि- पाग केते नेरैनी ?
 मंगल- जगसँ एकव पठ १ग पूरा भइ जाग ।
 चन्द्रशि- ओगमे कम-सँ-कम सात-आठ नाथ चाली । दूनु मिला कइ ओतेक चीज कहाँ
 छौ ? हम रैड रैसी तँ दू नाथ देरौ ।
 मंगल- ईमे केना हेते मानिक । अपने गामक मानिक छिई । गरीरपव दया
 कबियो । कम-सँ-कम पाँचो दियो ।
 चन्द्रशि- नै, ओसँ रैसी नै हेतौ । रैड कबमै रैड कबमै तइअ अठ १ग दइ
 देरौ । उ स्वर्गव थोरैहवरीना जमीन के नेतौ गइ ?
 मंगल- मानिक, ओहीक रंगलमे चाबि नाथ ठीके कइ रिक्की हन ।
 चन्द्रशि- जो, ओकरे दइ दिह ।
 मंगल- सभ दिन हम अहीसँ नेनी-देनी केरौ । हम अहाँ छोट्टा केकरो नै
 देरै । किछु आरो किवपा कबियो माँ त्रक सोना कठेवा जमीन छै ।
 दूधन- मानिक, उचित आ उपकार दूनु रहत । चाबियो पूरा दियो ।
 चन्द्रशि- तँ कह छै तइअ तीन कइ दग छियो ।
 दूधन- माँ त्रक, अपने पठ १गक महत रूने छी । तँ ने रैसी चन्द्रप्रभाके एते
 धुव एते पाग अर्च कइ डाकूनी पठ १ग कबरी बहन छी । उ हमरे
 क्वासमेतलो बहए । हमरू रैंगलमे एडमिशन कवा बहन छी । मानिक, ई
 मजबूतपव दया कबियो ।
 चन्द्रशि- तँ रात हेहेन राजि देरौ जे हमरा किछु सोचहे पड़त । **खै**, हम चाबि
 पूरा देरौ दूदा अपने सौसे डीह निथए पड़तौ ।
 मंगल- तँ हम सभ बहरै केतए मानिक ?
 चन्द्रशि- से तँ तँ रूमरिनी । नै हेतौ तँ सबकारी गाछीमे बहिरै ।
 मंगल- माँ त्रक, अपनेक सगह रिचाव ?
 चन्द्रशि- हमही की कबरै ? हम तँ पाग देरौ । तँ कम-सम नै । पूरे चाबि
 नाथ । हमरा तँ समान चाली । ईसँ आगू तँ तँ सभ रूमनी ।



- मवनी- दह देखुन । हम सब ओही सबकारी गाछीमे कहूना बहरै । की दूखन रौं ?
की दूखन ?
- मंगल- ठीक छै ।
- दूखन- ठीक छै ।
- चन्द्रशे- जौं सरहक रिचाव छौ त२२२ तँ सब एगो कागतपब दसखत आ निशान
दह दही । तहन पाग देरौ । जूग-जमाना नीक नै छै ।
- मंगल- नाउ माँ तिक, कागत आ कजरौष्टी ।
(चन्द्रशे अँदब जा क२ कागत, कजरौष्टी आ पाग अनगथि । तीनुसँ दसखत-
निशान लेनि आ चाबि नाथ ठेठका मंगलकेँ देनि ।)
- चन्द्रशे- बिथरिही कहिया ?
- मंगल- अहाँ जहिया कहरै तहिया ।
- चन्द्रशे- ठीक छै । एडमिशनरँना काजसँ निचेन हो । तेकब पछाति देखन जेते ।
- मंगल- ओम्हबसँ आरँ दिक । अहाँ जथनि कहरै हम तैयाव छी । आरँ हम सब
जाग माँ तिक ?
- चन्द्रशे- जौ ।
(तीनु गौष्टे चन्द्रशेकेँ प्रणाम क२ प्रस्थान ।)
चन्द्रप्रभा मम्मी, चन्द्रप्रभा मम्मी ।
- मनीषा- (अन्दबसँ) अरै छी । तुबन्त एनौं ।
(मनीषाक प्रवेश ।)
की कहनौं ?
- चन्द्रशे- मंगलारँना हौसरी आ डीह अपन भ२ गेल । कागत रँनि गेल छै । रँड
नहकामे बहनौं । अथनो भजअरँ तँ दस नाथ हेरँरे कबते । से चाबि
नाथमे लेनौं । ओकरो रँड जकबी छेलै । रैष्टक नाँ बिथेरँक छेलै ।
तँ रैचनक । नै तँ किअ रैचितए ?

पठाम्फेस ।



नखम दृश्य-

- (स्थान- सबकारी गाछी । मंगलक सिबकी । दुनु पवानी कोनियाँ-पथिया रीने छथि ।)
- मंगल- दुखन माए, रौखक नाँउ तँ लिखा गेलौ । दूरे रँड छै । तीन दिन जागमे आ तीन दिन अरैमे नगर । कह तँ छियौ कोलज तेतेछै छै से का कहरौ । राप जनमे ओतेछै मकान नै देखने बहिँ । रिद्यार्थी सब बग-रिबगक गाड़ सँ पढाँले अरै-जाग छै । नगै छेलौ जेना उ सब मासुब होग । एगो झुंशीसँ प्रछनिँ तँ उ कहक रिद्यार्थी सब छिँ ।
- मवनी- ओते रँडका लोक सरकक रीचमे दुखन केना बहते आ केना पढते-लिखते ?
- मंगल- बसे-बसे सब ठीक भइ जेते । अपने सब गब नगि जेते । (मणिकार्तिक प्रवेश ।)
- मणिकार्तिक- का हो मंगल ? तूँ तँ तेते कातमे चलि एतह जे दूर बुनागए ।
- मंगल- का कहरौ मारिक ? लिखनाहकेँ के मेछेते ? अही कहने बहिँ रौखक नाँउ लिखरैले । ओहीमे हमब डीहो रीक गेल । चन्द्रशे मारिक लेलनि ।
- मणिकार्तिक- भगरान गाम नै गेलथिन हन । कनी दिन आरौ कष्ट कष्ट । रहुत जल्दी तोहब दिन-दुनियाँ रँदलि जेतौ । ई समाजमे तेहब हाथ पकड़ रँना कियो नै बहतौ ।
- मंगल- अहाँक झूठमे अमृत रँसए । मारिक, आग हम केना मन पड़लौ ?
- मणिकार्तिक- मन नै पड़लह । जकबी छल । तँए एलौ ।
- मंगल- का जकबी छल मारिक ?
- मणिकार्तिक- एगो पथिया लेरौक छल । केते पाग दियो ?
- मंगल- अहाँकेँ जे देरौक अछि से दियो आ नै तँ सेहो ठीक ।
- मणिकार्तिक- रिकार छै केतेमे ?
- मंगल- एक सए-सरा सएमे रिकार छै । अहाँकेँ जे देरौक अछि से दियो आ जे पसीन होगए से लिख ।
- मणिकार्तिक- हेहँ सब सए ठीका लेह आ एगो चिक्कन पथिया दैह । (दाक पी कइ नुमेत-नामेत बरीयाक प्रवेश ।)
- बरीया- भैया रौ, हम दुनु पवानी रिचाब केलौ जे भैयाकेँ अपने ईठाँ बथि नी, रँड दिक्कत होगत हेते गाछीमे ।



- मर्गन- बरीया, रिचाव तँ रँड रँटा याँ छौ, मिन्नतर्ना छौ । झुदा तोरो तँ रँड दिक्कत छौ । एक दिनका तँ रात नै छै जे दिक्कत-सिक्कत बहि जाधर । छोड़, प्रेम छै तँ सब किछ छै । हमबा एते बहए दे । अहिना पियान बथिहे । ओहए कम नै भेलै ।
- बरीया- भौजी, ओग दिन हमबा दुनु भाँगेमे डुँठम-पठका भइ गेल बहए । कोनो काबज नै बहए । दुनु भाँगे खेने-पीने बही । तहीमे भइ गेल बहए । निसाँ छुँठन तँ सोचनौ । रँड तकनीक भेल भौजी ।
- मवनी- नै पछैए तँ किछ पीरै जाग छी ?
- बरीया- हे भौजी, माह कबियो । रँड गनती भेल हमबासँ ।
- मवनी- माह तखने कबर जखनि फेब एहेन गनती नै हएत ।
- बरीया- भौजी, दाक-ताड़ १ तँ हम पीरै कबर । तखनि मगड़-दन नै कबर, से गछै छी ।
- मवनी- रौखा, एम्हब-ओम्हब केनाग छोड़, आ पिया-पुताक पठ १ग-निखापब पियान दियो । पठन-निखनक जुग एलैए । रिन्न पठने केकरो गुजागशि नै हेतै ।
- बरीया- अ रैह भौजी, अहाँ रँड चलाक छी । अपने जकाँ रौनक पता तोड़रैने चाँह छी । एहेन सड़न काज हम नै कइ सकै छी । पिया-पुताकेँ पठ १ग खातिर डीहो रैचि नी । अ कोनो नीक काज नै ।
- मवनी- बुँमनौ, अहाँ रँड नीकरानी छी तै सबकाबी गाछीमे सिबकी तनने छी । अहाँ अपन नीक अपने नग बथु ।
- भैया, हम जाग छियो । तोरा सभकेँ कोनो तबहक दिक्कत हेतौ तँ हम ओकर रैरस्था कबर । रैष्टा, तैयाव छै ।
- (बरीयाक प्रस्थान ।)
- मवनी- दुखन राँड, देखहक, भना जुग समाव नै ।
- मर्गन- तोरा कोन जकबी छौ ओतेक नरब-नरब करैक । बाबकेँ सुख रँनए होग छै । पीनहाकेँ दिन-दुनियाँ दोसब होग छै । उ हबिदम पी कइ बूछ बहए । ओकबासँ रँसी राते नै कबक चाही ।
- मवनी- ठके कहनहक ।

पठाम्फेप ।



तेसब थक- पहिल दृश्य-

स्थान- रंगबूक एकठा पार्क । साँमक समथ । डाक्ठब पार्कमे घुमि बहली
थछि । पार्कमे किछ त्रोक घुमि बहल थछि आ किछ त्रोक रैस क२ गप-
सप्प क२ बहल थछि ।)

डाक्ठब- हमब पापाक उदेस पूर्ण भेल । हम आग डाक्ठब रैनलौं । बिजलठे नीक
थछि । भगरतीसँ प्रार्थना करै छियनि जे हमब सेरा नीक बहल । सेरा
पेघ धर्म होअ । हे भगरती । हमबा उ शक्ति दिअ जअसँ हम
जनसेरामे नीक प्रतिष्ठा पारि सकी ।
(गंजीनियबक प्रवेश । डहो पार्कमे घुमि बहल थछि । दुनु एक-दोसब दिस
ताकि-ताकि ठहलि बहल थछि । दुनु एक-दोसबकेँ ने चिन्हए, भठकि बहल
थछि ।)

यौ रिद्यार्थी, यौ रिद्यार्थी ।

गंजीनियब- का ? (दुनु एक-दोसब दिस ठक-ठक ताकि बहल थछि ।)
का कहलौं ?

(डाक्ठब किछ ने राजि बहली थछि । ।)

किअ ठेकलौं ? किछ किअ ने रजै छी ?

डाक्ठब- (झुस्की दैत) हम अहाँकेँ चिन्ह छी आ भठकेँ छी । अपनैक परिचय ?

गंजीनियब- हमब नाँ दुखन मल्लिक, पिता श्री मंगल मल्लिक ।

डाक्ठब- रैस कक, रैस कक । रूमि गेलौं, चिन्ह गेलौं ।

गंजीनियब- तहन हमछँ चिन्ह गेलौं । अहाँ चन्द्रप्रभा छी ने ?

डाक्ठब- अरैस छी । चिन्हल त्रोक केतौ अनचिन्हल होअ ।

गंजीनियब- पबिस्थिति अनचिन्हल रैना दग छै चन्द्रप्रभा ।

(डाक्ठब सगी शीति पार्कमे घुमे आ दुनुपब पियान बथैए ।)

डाक्ठब- दुखन, मनुक्ख पबिस्थितिक दाम होअत थछि आ पबिस्थिति अन चिन्हारोकेँ
चिन्हल रैना दैत थछि । स्थिति-पबिस्थितिक गप छोट दुखन । एकब
स्केत्र रैड पेघ छै । आरै अपना सब किछ अप्पन गप-सप्प कबी ।
आग-कान्हि का सब करै छै ?



- गंजीनियब- गबरीं खादमी की क२ सकेए चन्द्रप्रभा ? कौहुना जरीं छी । तौरा द२ तौरा पापा कहने छैनखुन जे रँगनुबमे डाकुखरी पठ १ग पठ १ए ।
भरिसक तौरा पठ १ग खतम भ२ गेन हेते ?
- डाकुब- एम.बी.बी.एस. पूर्ण भ२ गेन । कम-सँ-कम एम.डी. अर्रस कबरं खा तू अपन कह ने, की क२ बहर छै ?
- गंजीनियब- हमरा गंजीनियबिग पूर्ण भ२ गेन एते । हमर घबक स्थिति एतेक खराब छि जेकर बर्णन नै । तूछूँ बूमिमे हेरैही । माता-पिता केना बहत हेथिन से नै कहि । हमर पठ १ग खातिर हमर डीहो रीति गेन । तारे पापा जेनखुन ।
- डाकुब- हमरे पापा जेनखिन ?
- गंजीनियब- हँ, हमरा सामनेक गप छि । हुनका कागतपब माता-पिताक संग हमछूँ दसखत खा निशान देने छी ।
- डाकुब- हमरा पापा जे छथिन, से खजरीं किसिमक लोक छथिन ।
- गंजीनियब- नै चन्द्रप्रभा, जुगक अनुसार ठीक छथिन । आग-कान्हि एहेने लोकक पुछ होग छै ।
- डाकुब- तौरा खगिला रिचाव की केना छै ?
- गंजीनियब- नोकरी-चाकरी भेट जेते तँ क२ नैरै । मतो-पिताकेँ ने देखराक छि ? हमरा खातिर हुनका सबकेँ केते तकलीफ भेल हेतनि आ केते होगत हेतनि ?
- डाकुब- से तँ ठीके । माता-पिता अपन रार-रँछा जेन की की ने करैए । रार-रँछा नमहर बेलापब ओकरा सबकेँ रिसवि जाए ।
- गंजीनियब- ओतरे नै, माररो-पठरो करैए । देखे आ सुने छी तँ होए माता-पिता पिया-पुताक जनम किछ ए दग छै ?
- डाकुब- नगैए जेना तेँ मातृभक्त आ पितृभक्त होग ।
- गंजीनियब- माता-पिताक पिया-पुता जदी डाकुब-गंजीनियब भ२ गेलै तँ उ पिया-पुता माता-पिता भ२ गेलै आ उ माता-पिता पिया-पुता भ२ गेलै की ?
- डाकुब- से केतौ होग ।
- गंजीनियब- एगो रात बूमि चन्द्रप्रभा, मातृदेरो भरः । पितृदेरो भरः । गब देरो भरः । खतिखि देरो भरः । जदी ई सबपब गर्भवतापूर्क रिचाव कबरीही तहन बहस्य स्पष्ट हेतौ । चन्द्रप्रभा, एते कार हम तौरा सम जेनियो । तगले म्मा चाँहि छियो । काब सम मुन्यरान होग छै ।



- डक्ठर- से तँ होग छै । झुदा सभ ठाम नै होग छै । एतए नै हेते । काबू
अपना सभ जीरनोपयोगी गप-सप सकेनौं । ओना तोबा रैसी जकरी छै
तँ जा सकै छै ।
- गंजीनियब- जकरी नै रँड जकरी अछि । हमब हरेक काज समेसँ होगए । आर
जेरौक आछा दे ।
- डक्ठर- रैस जो । झुदा ।
- गंजीनियब- झुदा की ?
- डक्ठर- झुदाक जरारँ रौदमे । अथनि तोबा समेक अछार छै ।
- गंजीनियब- समेक अछारमे झुदाक जरारँ हमबा अथनि दे । नै तँ हमबा नील नै
हएत ।
- डक्ठर- तोहब गप अतिभारपूर्ण होग छै । मन होगए सुनिते बड्ड ।
- गंजीनियब- आरँ दामब दिन चन्द्रप्रभा । अथनि चरनियो ।
(गंजीनियबक प्रस्थान ।)
- डक्ठर- दुखन गंजीनियब रैनर । आ पाथवपब दूरि जनमेनाग भेल । एते गरीर
रिद्यार्थी गंजीनियब रैनर । आ रँड पैघ रौत भेल । धन्यवाद ओकब माता-
पिताकेँ जे एते पैघ काजक रौड १ उठा आकेबा सहन केनक ।
- शाति- (झुसकागत) की चन्द्रप्रभा, मामना किछ गडरँड छै की ?
- डक्ठर- किछ गडरँड नै शाति । तोबा शिक केना भेलौ शाति ?
- शाति- शिक किअ नै हएत ? रँड १ कारसँ तँ सभ गप करै छेलै ।
- डक्ठर- उ हमब नैगोष्टया संगी छन । मैथ्रिकक पछाति पहिन रैब भैल छन ।
तँ रैसी कार गप-सप भेल ।
- शाति- उ करै की छै ?
- डक्ठर- गंजीनियब अछि ।
- शाति- जोड़ १ तँ रँड नीक छै ।
- डक्ठर- (झुसकागत) तूँ खू छै । जे रौत हम सोचनौं नै बहिँ से रौत आग
हमबा सोचैसँ मजबूब करै छै । आ हागर ममी-पापाक छिँ । ईमे हमब
कोनो डिसीजन नै ।
- शाति- से किअ ? तँ रँछा छिन की ?
- डक्ठर- ममी-पापाक नजबिमे रँछा छिहे ।
- शाति- झुदा तँ अपन नजबिमे आकि हमबा नजबिमे कथी छिन ?
- डक्ठर- डक्ठर छी ।



- शाति- तोहब डमेब केते छो ?
- डाक्ठब- पछासि मानि ले ।
- शाति- खाँवाबहसँ सात रेसि भेलौ । कानूनक नजबिमे सेहो योग्य छै ।
- डाक्ठब- हमछुँ ग्रा सब बुनै छिँ । रँछा जकाँ नै बुना । छोड़ ग्रा गप-सप ।
जापबि सबकारी नोकरी नै कबर तापबि हम ई बिषयमे किछ नै सोचर ।
- शाति- भगरान कब, तोबा सबकारी नोकरी जन्दी होड आ ओग नडकारै सेहो
होग । सर्गि-साथी छै । तँए मज्जाक केरियो । माफ कबिहँ ।
(डाक्ठब आ शाति हँसए लगैए ।)

पठाम्फेप ।



दोसब दृश्य-

- (स्थान- रेतमन्त्री नित्यानन्द मिश्रिक आवास । आवासपब नित्यानन्द आ
अंगवस्त्रक रक्षा ना रेत मन्त्रालयक सरिन्धमे गप-सप क२ बहन छथि ।)
- नित्यानन्द- रक्षा, जखनि हमरा रेत मन्त्रालय भेटैत तखनि रैड प्रसन्नता भेल । झुदा
आरै तंग छी ।
- रक्षा- से किछ मन्त्री साहिरै ?
- नित्यानन्द- मन्त्रालयक अन्दरमे रैड घुसखोरी छै । तेहेन तेहेन पैबरी अरैए जे
नहियौं चाहि क२ ओकर काज करब पड़ैए । रैदनामे पाग केते होग
से अहाँ बुझिते छिई ।
- रक्षा- से किछ नै बुझै । काबण रैदना काज हमरो हाथसँ होगए । की कवरै
साहिरै सब मन्त्रालयक ओरु स्थिति छै । कोनो उल्लस छै त कोनो रीस ।
- नित्यानन्द- हँ, से त छै । झुदा तकलीफ ओतए होगए जेतए योग्यक काज नै होग
छै आ अयोग्यकेँ भ२ जाग छै । ए सब मानक कमान छिई । कখনो-
कখনो होगत बहए जे जनप्रतिनिधि भ२ क२ पर्रनिक संग रैड गद्ददारी
करै छी । खेब जनिते छी जे द्रोभ पापक काबण होग छै ।
- रक्षा- अछू की कवरै ? ए मोक्या रैब-रैब भेटैरै कबत, से कोनो निश्चित
छै । नै, अनिश्चित । तहन जे अरै छै आरै दियो ।
(अंजीनियरक प्रवेश ।)
- अंजीनियर- (नित्यानन्दकेँ) सब प्रणाम ।
(नित्यानन्द डुपब-निच्छाँ निहावि क२ ग्रम्म छथि ।) (रक्षाकेँ)
सब प्रणाम ।
- रक्षा- की रात हड, राजह ?
- अंजीनियर- रेतरेक अंजीनियर नेन एगो पैबरीक जकबी छेलै ।
- रक्षा- साहिरै रात कब ।
- अंजीनियर- सब, रेतरे अंजीनियरक पीछी आ मेन्स निकालि गेल अछि । जूरागनिंग
नेन दु लाख ठंका माँगै छथि । हम गरीब लोक । ओते पाग केतएसँ
खनरै ?
- नित्यानन्द- पढ़ने केना ?
- अंजीनियर- माता-पिता डीहो धरि रैटि देनथिन । एगो सबकारी गाछीमे सिबकी तानि
बैत हेते ।



- नित्यानंद- नाम की छियौ ?
- गंजीनियब- दूखन मरुनिक ।
- नित्यानंद- कोन मरुनिक ?
- गंजीनियब- डोम मरुनिक सब ।
(नित्यानंद आ रक्काक नाक-भौं सिफुड़ा जागए ।)
- नित्यानंद- अछुटा, हुनकासँ गप कब । हम कनी अरै छी ।
(नित्यानंदक प्रस्थान ।)
- गंजीनियब- सब, एकठा गबीरपब छपा कबितिई ।
- रक्का- हम का किवपा कबी । किवपा तँ उपवरैला कबत हग । गबीर आदमी
गंजीनियब रनख ता । रिन मातके कमान कैसे होग ? तहमे डोम री ।
जातो गमाग, सुआदो ना पाग । ग कैसे हो सकथ तँ ?
- गंजीनियब- अछु सभ जाति त-पाति आ ऊँच-नीचक भेदभार बथे छिई सब ? भावत
धर्म निवपेसक बाँध अछि । ई बाष्पक शीर्षपब रैस एकब गबिमा नष्ट क
बहत छी ।
- रक्का- हमबा एतना भाषा अछुटा नही गगत हग । अपन-अपन जाति ने सभ
हवान हग । कम-सँ-कम एको नाथ हउ तँ तोहब काज होग जाग ।
- गंजीनियब- सब, ने छै ।
- रक्का- कोग उपए देखथ, तँ होग जाग ।
- गंजीनियब- सब, हमबा कानो उपए ने छै । सब एगो गबीरकेँ कल्याण क दैतिई ।
आजीवन छतछ बहिरौ ।
- रक्का- रँक रँक काहे कबह ता ? ठाका ना, नोकबी ना ।
(नित्यानंदक प्रवेश । दूखन नित्यानंदक पए पकड़ा गए)
- नित्यानंद- की भेलौ रौखा ? की दिकत छै ?
- गंजीनियब- सब कहतथिन, कम-सँ-कम एक नाथ ठाकाक ओबियान करैले । तहिन
हएत । सब, हम एक नाथ ठाका केतएसँ आनर ? डीहो रीकि गेल
अछि । कोनो आशि ने अछि ।
- नित्यानंद- गबीर छै तँ ए एके नाथ । ने तँ ई नोकबी ने दस-दस नाथ ठाका पछी
पए पब बथि जागए ।
- गंजीनियब- सब, लोक सभ रँजेत बह छै, एकठा घर डयनो रँकस छै ।
- रक्का- जा, डयने रँकस देग । हमबा लोगन डयन ने न री ।
(गंजीनियब कनेत-कनेत प्रस्थान ।)



सोहरै, ठाढ़ि कन तेज रौ। लेकिन गरीर रौ। अपने लोगन के भी पेट
हंग, रौत-रौचा हंग।

(चन्द्रशे आ चन्द्रप्रभाक प्रवेश।)

चन्द्रशे- मंत्री सोहरै प्रणाम।

नित्यानंद- प्रणाम प्रणाम। कछु की रौत ?

चन्द्रशे- अहाँक समझिक साबछक भाए हमब नंगोष्टिया संगी। ओह पछेवधि जे मंत्री
सोहरैके हमब नाँउ कहैनि। भइ जेते पैंवरी। हमब रैष्टी अहाँक रैष्टी
छी। (चन्द्रप्रभा कब जोड़ा प्रणाम करैए।)

नित्यानंद- की पैंवरी अछि रौजू ?

चन्द्रशे- ग हमब रैष्टी छी। एम.बी.बी.एस. कम्प्लीट भइ गेल छन्हि। एम.डी. करैले
छाँह। झुदा नोकरी करैत। रेलवे डाक्टर्बक पी.पी. निकलि गेल छन्हि।
मेन्स आ जूरागन लेल पैंवरी। आव किछु नै।

नित्यानंद- अपनेक नाँउ ?

चन्द्रशे- चन्द्रशे न्या।

रक्षा- न्या हइ सरजातीय हइ तँ पैंवरी काहे नै होग ? तोहार पैंवरी ना होग
तँ केकब होग।

नित्यानंद- रक्षा, अन्दबसँ चाह आनि कइ दियन ब्रह्मकेँ।

(रक्षा अन्दब जा कइ चाबि गो चाह अनक। चाक गोष्टे चाह पीए।)

चन्द्रशे रौरु, अपने रक्षामँ गप कक। हम कनी अरै छी।

चन्द्रशे- हम तँ गरीर छी। कमाग छी तँ थाग छी। राप-दादरौ जमीन रैचि कइ
रैष्टीकेँ डाक्टर्ब रैनैलौ। अहण्ठा सतान अछि। प्ररैल अछ्छा छन रैष्टीकेँ
डाक्टर्ब रैनारी।

रक्षा- रैष्टी, डाक्टर्ब रौ। ग कम भारी रौत रौ। दस-दस लाख ठका भैत
हंग। तँ अप्पन लोग हइ। कम-से-कम एक लाख तँ लगै कबी।

चन्द्रशे- सब, हम नै सकरै। कनी मंत्री सोहरैकेँ रैजुरियन। हुनकासँ भैठ कइ छनि
जाएँ। रैकाबमे एलौ।

(रक्षा नित्यानंदकेँ अन्दबसँ रैजा अननि।)

नित्यानंद- की कहता ? कहनि अहाँले कम-सँ-कम एक लाख। नै बाधकेँ मन घी
हेतनि आ नै बाधा नचती।



(नित्यानंदक पएव पकड़ि) मंत्री सहरि, पएव पकड़ि छी । छुपा कएन
जाड । रँड आशिसँ आएन बही । अपने कहुँ छी । स्रजातीय छी । रँड
गवीर छी । एकठा गवीरकेँ ताड़ि यो सहरि ।

नित्यानंद- खच्छा पएव छोड़ू ।

चन्द्रशे- पएव तँ नै छोड़रँ । जापरि हँ नै कहरँ ।

नित्यानंद- कहुँ आ स्रजातीय छी तँ हँ कहि दग छी । रक्का राबूकेँ किछ दह
देरनि । (चन्द्रशे नित्यानंदक पएव छोड़ि देरनि ।)

चन्द्रशे- जे सकरनि तंगमे कोताही नै कवरनि ।

नित्यानंद- हम जाग छी । जकरी खडि ।

चन्द्रशे- प्रणाम मंत्री सहरि ।

(नित्यानंदक प्रस्थान ।)

रक्का राबू, एक हजार ठाका मिठाग खागले लेन जाड ।

रक्का- वारँह । तँ जीत गेवर । रँड ी भाग्यकेँ तेह रह । जातिक नाम पव
जीत गेवर । (चन्द्रशे रक्काकेँ एक हजार ठाका देरनि ।) तँ सब जा ।

चन्द्रशे- रक्का राबू, प्रणाम ।

(चन्द्रशे आ चन्द्रप्रताप प्रस्थान ।)

रक्का- एमे पूवा घाँठ रा । **खैर**, जाति रा ।

पछाँसेप ।



तेसर दृश्य-

(स्थान- गंजीनियबक डेवा । साँमक समय । प्रसन्न झुझामे गंजीनियब रैस क२ भरिसक सरिन्धमे सोचि बहल छथि ।)

गंजीनियब- जग देशिक मंत्री घुसखोब बहते आ जाति-पातिपब चरते, ओग देशिक कल्याण केना संभर छै । उ देशि गर्तमे जेरे कबते । धूर सत्य छै । काबण उ घुस न२ क२ अपनारके नीक रैनेते । काज अपना हेते । प्रायः सब सरकारी तंत्र सब फेर भ२ बहलै । खाली कागत ठाँगठ बहल । जगहपब किछुछो होउ परितिक जानल । केना ओकरा राजन गेलै, ठाँका ना, नोकरी ना ।

खै, नै बेनरै तँ माकतीए कंपनी सही । नै सरकारी नोकरी तँ प्रांगरेष्टे नोकरी सही । एक-सँ-एक प्रांगरेष्टे कंपनी छैल नाथ-नाथ ठाँका तनखा छै । ओकर तुलना कहियो सरकारी नोकरी कबते । खाली एस-आबाम छै सरकारी नोकरीमे । तँए लोक एते हवान बह ।

(डाकूबक प्रवेश)

डाकूब- की तार-चार छौ दूधन ?

गंजीनियब- ठीक छौ । केम्हब-केम्हब एनै हेल झनहाबि साँममे ?

डाकूब- एकठाँ ठाँका खुशखरबी देरौक बहल तोबा । तँए एनौ ।

गंजीनियब- की ?

डाकूब- बेनरै डाकूमे हमबा भ२ गेलौ । पापा आग्र छेरथिन । मंत्री साँहरसँ गप भ२ गेलौ ।

गंजीनियब- की केना मार गेलौ ?

डाकूब- किछु नै, मात्र एक हजार ठाँका ।

गंजीनियब- मँगनीमे भ२ गेलौ । नगैए राँभन छेलै तँए तोबा भ२ गेलौ चन्द्रप्रभा । काबण मंत्रीओ साँहर राँभने छथिन ।

डाकूब- से तँ हुनकब रँडीगाडो ब्राह्मणे छथिन । हँ, तँ ठीके कहलै । हमबा ब्राह्मणे दुखारे भेल । तँ केना बूमनिही आ भाँज ?

गंजीनियब- हम ओकर भुक्तभोगी छी । हमबा ओह मंत्री साँहर डोम दुखारे नै करथि । अपन सब मजदूरी सुनेलियनि । पएब धरि पकड़लियनि । झुझा ठस-सँ-मस नै भेला । रँडीगाडि कहनि “ना ठाँका, ना नोकरी ।” तनखा केते भेँठेतौ तोबा चन्द्रप्रभा ?



- डक्ठब- अठावह हजावसँ रँहानी छै ।
- गँजीनियब- तहने हमछँ कोनो रँजाए नै छी । हमछँ माकती कपनीमे जूरागन क२
नेलौं खाग ।
- डक्ठब- तोबा केते भैठेतौ ?
- गँजीनियब- पैंतानीस हजावसँ रँहानी अछि । झुदा नोकरी प्रागरेष्ट अछि । तूही ठीक छै
चन्द्रप्रभा ।
- डक्ठब- तूही ठीक छै दुखन ।
- गँजीनियब- तूही ठीक तँ तूही ठीक । यानी सब ठीक ।
- डक्ठब- दुखन, अपना-अपना जगहपब कोग केकरासँ कम नै अछि । **थैब**, ग रात
आरँ छोड़ । आरँ हम एगो नरँका रात कहए चाँह छियौ ।
- गँजीनियब- अरँस कह ।
- डक्ठब- कँहक हिममत जे नै होगए ।
- गँजीनियब- एहेन कोन गप छै जे कँहक हिममत नै होगए ?
- डक्ठब- जिनगीसँ सँनधिअ अछि । (झस्फबाए नगैए ।)
- गँजीनियब- जिनगीमे कोनो एगो गप अछि । अनन्त गप अछि । तगमे कोन ?
- डक्ठब- मय्या-पापाक डब होगए । हुनका सबकेँ हमबापब रँड रिसरास दुनहि ।
- गँजीनियब- पहिने रात थोनि क२ राज नै, तहन रिचाव हेते ।
- डक्ठब- हमब सँगी पार्कमे तोबा द२ किछ-किछ कहँ छन । सएह गप ।
- गँजीनियब- की कहँ छेअखू ? हमबासँ किछ गतती भेलौ हैन की ?
- डक्ठब- नै नै, गतती-सहीरँगा गप नै छै । दोसब गप छै ।
- गँजीनियब- कोन दोसब गप छै ?
- डक्ठब- कोनो गप नै छै । (झस्फबाए नगैए ।)
- गँजीनियब- नै कोनो गप छै, तँ जो अपन डेबापब । बाति भ२ गेलौ ।
- डक्ठब- तूही जो अपन डेबापब । बाति भ२ गेलौ ।
- गँजीनियब- रँताहि भ२ गेलौ की ?
- डक्ठब- तूही रँताह भ२ गेलौ ।
- गँजीनियब- हम रँताह नै भेलौं । हम तँ पूवा ठीक छी ।
- डक्ठब- हमछँ तँ पूवा ठीक छी ।
- गँजीनियब- चन्द्रप्रभा, एकठा डक्ठबकेँ एते रँसी निममक शोभा नै दग छै ।
- डक्ठब- से तँ हमछँ बुनै छी । झुदा गपे तेहने छै । (झस्फबाए नगैए ।)
- गँजीनियब- आरँ हम निकनि जेरौ डेबासँ ।



- डक्ठब- हमरू निकलि जेरौ तारे संग । (नजबिसँ नजबि मिनरैए वगन ।)
- गंजीनियब- तोहब नजबि हमबा एकठा नर सदेशे द२ बहन थडि ।
(डक्ठब गंजीनियब दिस एकठक तकेत गम्सुम थडि ।)
सदेशे दुष्टा दिनक मिनान नगैए । की हमब खनुमान सत्य थडि ?
- डक्ठब- (झुड़ १ डोतरैत) छू । (हेब नजबिसँ नजबि मिनरैत)
- गंजीनियब- थारौ राज ने ?
- डक्ठब- थारै रैजेए पड़त । रैड समए नष्ट भेल । रैड बाति भ२ गेल । डेरो जेरौक थडि ।
- गंजीनियब- रात तँ रूमाए गेल । तेयो जे किछ रैजरौक छौ से जल्दी राजि दही
था चलि जौ ।
- डक्ठब- किथ, हम तोबा जानपब छियौ ?
- गंजीनियब- (झुस्फरा क२) ने ने, से रात ने छै । थारै नगै छौ हमबा२२२ ।
(गंजीनियब डक्ठबसँ नजबि मिना बहन थडि । दूनु एक-दोसब दिस एकठक तकेत गम्सुम थडि । दूनु उठि जागए ।)
थाग थाग थाग । (हाथ फैला क२ ।)
- डक्ठब- न२ २ २ २ २ २२ । (हाथ फैला क२)
- गंजीनियब- यू । (दूनु एक-दोसबसँ थाग तर यू थाग तर यू कहि टिपकि गेल, हेब दूनु ठष्ट गेल ।)
- गंजीनियब- जा, ए की भ२ गेल ? की क२ वग जाग गेलौ ?
- डक्ठब- होनीकेँ कियो बोकि सकलौ हेल ? होनी तँ हाथ धवा क२ होग छै ।
दुखन, थारै हमब एकठा रिचाव थडि । से कहियौ ?
- गंजीनियब- थरंस कही ।
- डक्ठब- हमब रिचाव थडि जे दूनु गोठे गाम जगतौं था अपन गौथाँ-समाजकेँ दर्शन कबितौं ।
- गंजीनियब- रिचाव तँ उभम छौ । मतो-पिताकेँ देखना रैछ दिन भ२ गेल । तोरो रैछ दिन भ२ गेल हेतौ । जेरैही केना ?
- डक्ठब- संगे चनरै ।
- गंजीनियब- गामसँ दूब तँ ने कोनो रात । झुदा गाममे कियो संगे जागत देखता तँ की कहता ?
- डक्ठब- के की कहता ?



- गंजीनियब- लोक सभ कहता जे चन्द्रशे रौरूक रैषी मंगला रैषी संगे एले । डोमसँ
ब्राह्मणी छुथा गेली । लोक सभ एहो कहि सकै छथि जे जे दुनु एक्के
संग किछ अछल । दानिमे किछ काबी छै । (दुनु रैसन)
- डाक्टरब- गाम-घब तँ ए ने एते पछुआएन छै । लोक सभ हबिदम अन्नकब अना-
मीनामे नगन बहै । अपना दिस तँ केक खुबसत ने बहै छै ।
- गंजीनियब- चन, देखन जेते । हाथी चनए रज्जव कृता भुक्तए हज्जव । एगो कह तँ
चन्द्रप्रभा, अपना सरहक जोड़ १ केहन हेते ?
- डाक्टरब- लोककेँ तँ रड़ खबार नगते । ह्मदा हमबा रड़ नीक नगत आ तौबा ?
- गंजीनियब- हमबा नीक ने नगत ।
- डाक्टरब- से किछ ?
- गंजीनियब- काष हम डोम छी आ तँ ब्राह्मणी छै । तँ छुँ छै हम नीच ।
- डाक्टरब- एह मानसिकता समाजकेँ डाँड़ तौबि कहबा बहनए । अहीपब कारू पेनाग
छै । तहन ने समाजक विकास छत । समाजक विकाससँ बाष्पक विकास
छत । देशक बग-बगमे छुँच-नीचक भारना थोमियाएन अछि । ए भारना
नष्ट दह ने हष्ट सकै । बसे-बसे हष्टत । देखनी, रीड १ उठेनिहारकेँ
कनी रैसी भीव होएते छै ।
- गंजीनियब- अपना सरहक जोड़ १ तँ सच्छुच रड़ नीक हेते । खैब, गाम चन । देखन
जेते । हमबा तँ एक्क सप्तहक छुँछी अछि आ तौबा ?
- डाक्टरब- हमरो तँ सए छै । चन, हब जन्दी एरौको छै । देखनी दुखन, जापबि
सभ जाति एक ने छत, छुँच-नीचक भारना ने हष्टत तापबि लोकमे
अध्या-धमक भारना जकड़न बहत । तगसँ मानरता हष्टत आ देशक विकास
बकत ।
- गंजीनियब- गप तौहब ओवाएते ने छै । आरँ छोड़ रौदमे हेते । कान्हि सरैरे
निकरौक छै ।

पठाम्प ।



चाबि दृश्य

(स्थान- चन्द्रशेक हरेली । चन्द्रशे आ मनीषा चन्द्रप्रभाक रिखाक सँनधमे गप-सपप करै छथि ।)

चन्द्रशे- चन्द्रप्रभा मम्मी, आग चन्द्रप्रभाक अरैया अछि । आरै जौं आकेवा देखै तँ चिन्हौ नै कवरै । दोसरे बग भऽ गेलथ । रँगनूव हम गेल बही ई रैव तँ चिन्हमे हमरो धोखा भेल । ओतुक्का जतराहा अपना गुँवसँ अलग छै ।

मनीषा- तहन तँ ओकर रिखाक सेहो जल्दी कब पड़ते । काब सभ किछ समेपव नीक होग छै । डमेरो छै आ सबकाबी नोकरी सेहो छै । झुदा एगो रात पुछी ?

चन्द्रशे- पुछ नै ।

मनीषा- डाकूँव रँव चाही रा अँजनीयव रँव चाही रा कोनो आग.एस. ऑफीसव ।

मनीषा- झुदा ई रँव सरँक माँग केते हएत, से बुनै छिई ?

चन्द्रशे- केते हएत, दस पेँपीसँ डुपर हएत । तेकर चिन्ता हमरा अछि नै ? काब रँकमे ओते बाखन छै ।

मनीषा- ब्रॉङ्गामे दहेज रँड रँसी होग छै । जौं रँस पेँपीमे ओहन रुद्ध पकड़ एत तँ की कवरै ?

चन्द्रशे- जमीन रँचि कऽ तगा देरै । जौं ओसँ आगु रँटते तँ कोनो जमीनदारे घरमे कऽ देरै । हमर रँष्टी ओग घरमे बानी रँनि बाज कवती ।

मनीषा- तहन डाकूँव भऽ कऽ कोन फेदा ?

चन्द्रशे- हुनर केतो रँर्थ गेलथ । गामेपव क्लिनिक खोलि लेते । खु पाग कमेते । रँड प्रतिष्ठा भेँटेते ।

(डाकूँवक प्रवेश । मम्मी-पापाकेँ पएव छुरि प्रणाम कऽ मम्मी तग रँस गेल । मम्मी डुपव-निछाँ निहाबि बहन अछि ।)

मनीषा- (चन्द्रप्रभाक देह सहारैत) रँष्टी, तूँ तँ दोसरे बग भऽ गेलही । पापा कह छेलखुन । हमरा रँसरस नै होग छन । केना एहन भऽ गेलही ? कथी आग छेलही ओतए ?

डाकूँव- मम्मी कथी खेरै । जे तूँ सभ आग छीह, सएह । ओतुक्का जतराहा दूखारे एहन पविरतन भेलै हन ।

मनीषा- आकि कोनो दराग आग छेलही ?



- डाक्टर- नै गै मय्या, सब किछु एतुक्क जकाँ छेलै । एकदम साधारण बहन-सहन
छन ।
- चन्द्र- रैष्टी, सरिसक हात-चात कह ।
- डाक्टर- पापा, हाँसपिठनमे रैड प्रतिष्ठा छि ।
- चन्द्र- रैष्टी, एकठाँ रिचाव पुछै छियौ ?
- डाक्टर- अरस्स पापा ।
- चन्द्र- तोहब रिखाहक सँनधमे किछु सोचत जाय ?
- डाक्टर- ओ रात तँ मय्यासँ पुछक चली ।
- चन्द्र- नै रैष्टी, तँ सब तबहसँ नम्रव छिनी । जदी हमवासँ कोनो अनचित निषेध
भे जेते तँ हम पाँडत जायँ । जखनि रैष्टी-रैष्टी अठावहसँ ठपत तखनि
ओकासँ मियरत रैरहाव हेराक चली ।
- डाक्टर- से तँ ठीके ।
- चन्द्र- रैष्टी, हमब शुकसँ रिचाव छि जे तोहब रिखाह जातिमे बाजा क्रममे
करी । आ तोहब रिचाव ?
- डाक्टर- हमब रिचाव छि सीता आ सारिनी जकाँ रिखाह करी ।
- चन्द्र- जेना सीता आ सारिनी अपन मन-पसीन रँवसँ रिखाह केनी तहिना होगते
तहन नीक बहते । जाति-पाति कोनो रैड पैघ चीज नै छि । अस्मन
जाति एकठाँ छि, मनुख जाति । खाली रैरहाव नीक होगक चली, रिचाव
नीक चली आ कर्म नीक चली ।
- चन्द्र- तोहब कहँ गह नै छै जे डोमोक रैरहाव-रिचाव-कर्म नीक होग
तहँ ओकासँ ब्रह्मा रिखाह कइ सकै । सएह नै ?
- डाक्टर- सोनहली । भगरान राम शिरवी अँठाम अँठार रैव खने बहिन की नै ?
- चन्द्र- हँ, से तँ ठीके छि ।
- डाक्टर- से किछ ? रीना कावणे । शिरवीमे प्रेम-अह्माक गुण छेलै । उ गुण
भगरानकेँ आकर्षित केनक आ उ आकर्षित भेला ।
- चन्द्र- भगरानकेँ तँ लोककेँ तारेक बँह छन्हि । तँ उ किछ कइ सकै छथि ।
रूदा हम जे हुनकर देखोस कवरँ से हमबा रूते संभर नै छै । हम
अपना जकाँ कवरँ । जातिक प्राथमिकता हम देवरँ कवरँ । हम सबसँ
पैघ जाति छी ब्रह्मा । जदी हमही छसि जायँ तँ दुनियाँ अनहेब भे
जेते । कस्ता-पेरा लोक चले दैत । हमबा जे एते प्रतिष्ठा छि से
माँसमे मीति जायत ।



- डक्ठर- पापा, अहाँ भगरानकेँ मानै छिई की नै । (ह्रस्वबागत)
- चन्द्रशे- नै किथए मानरै । हुनकेपव तँ दुनियाँ चले छै ।
- डक्ठर- जखनि अनेक जाति भगरान रा भगरतीक पूजा करै छथि तँ कहाँ कियो कोटा या भ२ जाग छथि रा कियो बाजा भ२ जाग छथि ?
- चन्द्रशे- तूँ जनमन हमरे सीथरै चलेनै ।
- डक्ठर- नै पापा, से रात नै छै । (ह्रस्वबागत अछि ।)
- पिया-पुता केतरोँ कारिन भ२ जाए ह्रदा माए-रौपक आगुमे ओ रँच्चे बहते ।
- चन्द्रशे- (प्रसन्न भ२) हँ, ओ तोहब कहँ जागज छौ । जे रँसी कारिन बह छै, ओ तीनठाम गूँह मथै छै, पएब, हाथ आ नाकमे ।
- डक्ठर- से सभसँ भ२ सकै छै । अह्रसँ भ२ सकै छै ।
- चन्द्रशे- (थिसिआ क२) रैष्टी, हेब तूँ ह्रसि बहन छै । हमबासँ ह्रसन काज नै भ२ सकै छौ, नै भ२ सकै छौ, नै भ२ सकै छौ । रैष्टी, तोबा डक्ठर रँनरैमे हमबा की खबच अछि से हमहँष्टी बूने छी । गूबक माबि धोकबा जने छै । तोबा नोकबीने हमबा मंत्री सहिरक पएब पकड़ए पड़न जे तोबा सामनेक गप छै । आग हमब कहन करैने तैयाव नै छै । रौपक तूँ अरहेनना करै छै अरहेनना अरहेनना अरहेनना ।
- मनीषा- (गंभीर ह्रदामे) रूँच्ची, कनी चाह रँनेने आड ।
- (डक्ठरक प्रस्थान ।)
- चन्द्रप्रभा पापा, रैष्टी डक्ठर अछि । ओकबापव ओते किथए थिसिआ जाग छिई ? जूग ठीक नै अछि । आ जूँ तामसे-पित्त किछ क२ निथए ।
- चन्द्रशे- ओहीक डरे हम खाली थिसिआ बहन छी । नै तँ मारैत-मारैत माबि दैतिई आ माष्टिक तबमे गाड़ी दैतिई । ह्रदा दब-दुनियाँमे अछि तँ एगो ।
- माया-मोह घेब नथए ।
- चन्द्रप्रभा मम्मी, हमबा नथैए ओ केतौ ह्रसि गेल अछि रा ह्रसएरानी अछि । तँए ओकब एहेन रात होग छै । चाह न२ क२ आरँए दियो । हम चाह पी क२ अँदब चलि जाएर । अहाँ ओकबासँ पियाबसँ मनक रात नैर ।
- मनीषा- हमबा कहते से ? आरँ ओ रँच्चा नै नै छै ।
- चन्द्रशे- रैष्टीकेँ माएसँ रँड सिनेह बह छै । अहाँकेँ भेद कहि देत । हमबा पूवा रिसरास अछि ।



- (डाक्टर्बर्के चाह न२ क२ प्रवेशे । मम्मी-पापार्के चाह देली । दून् पवानी चाह पीई छथि । शीघ्र चाह पी क२ कप बखनि ।)
- चन्द्रप्रभा मम्मी, हम कनी खरै छी । एक गोबरक हिसार देखरौक छि ।
- मनीषा- रैस जाड । तारे हम दून् माग-धीन गप-सप्प करै छी ।
(चन्द्रशेख प्रस्थान)
- बूछी, पापा नकीबक हकीब छथुन । पहरका गपके बीतिक मेठेबी जकाँ डूँ छथुन । आर ओग मेठेबीके डूँमेमे फेदा नै छै । अ समेक फेड छिई । जदी तूँ आनो जातिसँ रिखाह क२ जेरै छी तूँ कोनो खनबगर नै हेते । खाली नडा का गृगव होग ।
- बूछी, तोबा नजबिमे जदी कोनो गृगव नडा का छै तूँ राज । हम तोबा पापार्के समना-बूमा क२ कहैनि । आशि छि जे ओ मनि जेत ।
- डाक्टर्ब- मम्मी छै । तोबासँ की छपेरै आ केते दिन छपेरै । उगर सकजके रादर केते दिन चापि सके ?
पापार्के नै कहैनि तूँ कह छियौ ।
- मनीषा- पापासँ केते दिन छपेरैनि ? रात रैठा गेला पछाति जदी ओ बूमथिन तहन तूँ ओ ओरो आशि रैबूला भ२ जेथुन । तूँ साँच रात राज । हम हुनका मना जेरैनि ।
- डाक्टर्ब- कह तूँ राज होगए । (हसकियाव नगैए ।)
- मनीषा- राजसँ काज नै चरतो । डाक्टर्ब भ२ क२ एते राज ।
- डाक्टर्ब- रात कहैत तूँ तोबा घृणा बूमेतो । ओना हमरा घृणा नै बूमागए आ नै छि । हेरौको नै चली ।
- मनीषा- तूँ हमरो ओमवारँ नगरै । रैसी ओमरोठ नीक नै नगै छै । (थिसिआ क२) कहैरौ छै तूँ कह । नै तूँ बूमली आ तोहव पापा बूमथुन ।
- डाक्टर्ब- मम्मी थिसिया नै, कह छियौ । (हसकी दैत ।)
मम्मी, हमरा हमरा, दूखन दूखन, से सँ ।
- मनीषा- राज नै, राजक रात नै छिई । जिनगीक रात छिई ।
- डाक्टर्ब- हमरा दूखनसँ नर भ२ गेल छि । (हड १ नुका नगए ।)
- मनीषा- दूखन के छिई ?
- डाक्टर्ब- खपन डोमीनक रैछ । अंजनीयव छिई । माकती कंपनीमे पैंतालिस हजार तनखा पेरैए । दून् गोरे सँगे गाम एनौ ।



- मनीषा- किछु छै । झुदा छै तँ डोम । केतए बाजा भोज, केतए गंगु तेनी ।
पढा-निथि क२ तूँ खनदानक नाक कछेलै । तूँही कह ब्रौह्ममे डाकूँब-
गंजनीयब नडा कक अत्तार छै ?
- डाकूँब- मम्मी, अथने तूँ कहलै जाति-पाति कोनो चीह नै छिई आ तुबन्त गप
पतई क२ कछु छै जे ब्रौह्ममे डाकूँब गंजनीयब नडा कक अत्तार नै
छै । एकब माने तौबा मनमे कछुबी छै ।
- मनीषा- हम की जानए गेलिई जे तूँ पढा-निथि क२ एते नीच थसि पड़्यै ।
मम्मी छियौ, तँए घछेसि नग छियौ । झुदा काज नीक नै केले ।
जिनगीक हिसरा सोचि-समसि क२ नेरौक चाही ।
- डाकूँब- मम्मी, हम रँड सोचि-समसि क२ अ हिसरा नेरौ । आथिब अ हिसरा
हमरे जिनगीकेँ उगाएत-डुमाएत किने ? से कोनो हम नै बुनै छी ?
- मनीषा- तूँ नाव बुनकबि छै किने नाव बुनकबि ।

पठाम्फेप ।



पाँचम दृश्य-

(स्थान- चन्द्रशेक हरेली । दूनु पवानी रैष्टीक सरिन्धमे रिचाव-रिमर्श क२ बहल छथि ।)

- चन्द्रशे- (प्रसन्न मने) चन्द्रप्रभा मम्मी, किछ बहस्यक भाँज नगर की नै ?
 मनीषा- नगर तँ, झुदा२२२ ।
 चन्द्रशे- की झुदा ?
 मनीषा- रँजैरँगा गप नै छै । रँड छसि गेल अछि ।
 चन्द्रशे- से की ?
 मनीषा- कहत तँ राज होअ । झुदा कहै नै तँ बुझै केना ?
 चन्द्रशे- एते कियो गपकेँ चौथाव । जे बहस्य छै से रँजु ।
 मनीषा- चन्द्रप्रभाकेँ डोमनक रैष्टी दूधनसँ प्रेम भ२ गेल छै ।
 चन्द्रशे- (आँखि नार-पिखव करैत) अथनि रँजा आनु तँ पाँती-पाँती अही रैतसँ दागि दग छिई ।
 मनीषा- अहाँकेँ कह छेलौं तँ हमर गपक कोनो मोजरे नै दग छेलौं । कह छेलौं, हमर रैष्टी रँड बुझक अछि । आरँ की भेल ?
 चन्द्रशे- हम की जानै गेलिई जे रिद्यार्थी राहव पढ़ले जाअ आ छौड १-छौड १क खेत करै । (कनीकान गम्भ भ२ जाअ छथि । फेब थिसिआ क२ ।)
 डाक्टर भ२ गेल तँसँ की ? झुदा हमरा ओहन रैष्टी नै चही, नै चही, नै चही । जे हेते से हेते । झुदा ओकरा जीख नै देरै । लोक प्रतिष्ठा लेल हवान अछि । रँड १ कठिनसँ प्रतिष्ठा भेलै । तेकरा आ छौड १ माँटमे मिला देलक । कछ तँ, लोक हमरा मानिक कहै आ ओग मानिकक रैष्टी एना कव ? धनि हम जे उ डोमरा छौड १ गंजीनियव रँनर आ हमर रैष्टीपव हाथ फेब देलक । ओछु सावकेँ नै जीख देर । नै बहते रँस आ नै रँजते रँसरी । (थिसिआ क२ उठि अन्दर जाअले तैयार भेला ।) पहिले ओग छौड १क जान लेरै । तहन ओग छौड १क ।
 मनीषा- हाँ हाँ हाँ हाँ । ओगताड नै । बुझि-रिरेकसँ काज निख । धैर्यसँ काज निख । (चन्द्रशे ककि गेला ।) गाडन झुदकेँ किअ उखाडि छी ? ओगपव ओरो माँट दियो ।
 चन्द्रशे- अछा, एगो गप कछ तँ उ छौड १ डोमरा गाम एले हेल की नै ?
 मनीषा- हाँ, एले हेल चन्द्रप्रभा संगे ।



- चन्द्रशे- आँगा, लोक देखने छत तँ कि कहत ? अछ्छा, ओग साबने किछ उपए सोचए पड़त ।
(ब्रह्मानंदक प्रवेश । चन्द्रशे आँखि तान-पीछव करैत ग्राम भँ रैसन छथि ।)
- मनीषा- रैसु रौखा । (ब्रह्मानंद रैसना ।)
- ब्रह्मानंद- भोजी, भैयाकेँ रँड तमसएन देखे दियनि ?
- मनीषा- हँ, रैष्टीपव थिसिआएन छथिन ।
- ब्रह्मानंद- की भेलै से ओकरा अरिते-अरिते ?
- मनीषा- अहाँ अप्पन लोक छी तँ कहए पड़त । ओना ओ, सब गप ग्रप्त बहरौक चाही । केतौ रँजरे नै ।
- ब्रह्मानंद- एहनो केतौ रँजत जाग ।
- मनीषा- हमर रैष्टी रँगबुरेमे मंगला डोमरौक रैष्टीसँ फँसि गेल अछि । कछ तँ २२२ केतए ब्रह्मण आ केतए डोम ? कनियोँ मेर खाग छै ।
- ब्रह्मानंद- एको मिसिआ नै । कछ तँ दुनु पठन-लिखत छै । तछमे डाकूब- गँजीनियब । लोक पढ़ा-लिखि क२ ओव रैकुप रँनि जागए । ईसँ नीक थमकथे ।
- चन्द्रशे- रौखा, आरँ की हेतै ? (शित भँ क२ ।)
- ब्रह्मानंद- एकव किछ काबगव उपए सोचए पड़ते ।
- चन्द्रशे- हमर रिचाव अछि ओग डोमरौकेँ मरबा क२ सिस्मे खतम क२ दिई । नै बहते रँसि आ नै रँजते रौसबी ।
- ब्रह्मानंद- ओ कनी रैसी भँ गेलै । मंगला गबीर आदमी छै । उजड़न-उपष्टन छै । एक्क गो रैष्टी छै । तेकरा रँड १ कठिनसँ पढ़ १-लिखा क२ गँजीनियब रँनौक । हमरा रिचावसँ ओग छोट १केँ कनी रैसी पीछाग देन जाग जे ओकरा मन बहते आ फेब एहेन गतती नै कबते ।
- मनीषा- हमरा रिचावसँ ओ नीक नै हेतै । काबण सौसे गाम हत्ता भँ जेतै । गाम-गाम रात पसरि जेतै । तहन आरो अपना सरँक प्रतिष्ठापव पड़त । ईसँ रँडि याँ केस क२ दियो ।
- ब्रह्मानंद- नै भोजी, केसमे दुनु पाछी पेवाग छै । रैसी मानेरना पेवाग दै । काबण पुनिसकेँ मान चाही मान । उ रेचावा घब-घबाड १ रैचि रैष्टीकेँ गँजीनियब रँनौक । सेहो जेहन चलि जाएत । ओकरासँ पुनिसकेँ की



भैरैते ? किछु नै । दोसर गप उ हविजन छिई । हम जे कहलौं
पीछैरैना गप, सएह कक ।

चन्द्रशे- ओगमे जदी उ केस क२ देत तहन ?

ब्रह्मानन्द- ओत पीछैरै नै कवरै । रचा क२ पीछैरै जे देखाव नै होग आ छेष्ट खुम
बैह । तगमे त्राम-कचहरीसँ काज चलि जेते । सबपछ तँ त्रामीश होग
छथि किने । उ ममिला सगष्टिया लेखिन ।

चन्द्रशे- तहन केना जोगाव सैष्ट हेते ?

ब्रह्मानन्द- जोगाव जोगाव छै । पाँच-सात गोरे चनु ओकरा ईठाम । तीन पवानी
खडि । उकछै-पुकछै रात रजुरै, गावि-कम्मति देरै । ओगपव कनियारै
नै कनियौं थिसियाएत । तहीपव धुन देरै । मगड १ हँसेनाग तँ अपना
हाथमे छै ।

चन्द्रशे- रैस तँ खहाँ जाड चावि-पाँछा खच्चव छौड कँ रजने आड ।

ब्रह्मानन्द- ओकरा सबकेँ किछु मात्र-पानी दिख पड़ छै ।

चन्द्रशे- से लिख । (एकछाँ पाँचसौखा जेरसँ निकालि क२ चन्द्रशे ब्रह्मानन्दकेँ सिकरै
पीरै नगैत ।) (ब्रह्मानन्दक प्रस्थान ।)

आग साबकेँ रापसँ छैष्ट करैरै । साबकेँ कनियौं आँथिमे पानि नै जे ओही
मानिकक किबपासँ हम गंजीनियव रैनलौं आ हुनके रैष्टीपव हम केना हाथ
फेरै छिई ।

(ब्रह्मानन्दक सर्ग नरेश, भद्रशे, उग्रेश, सुरेश आ महेशक प्रवेश । छु
निसाँमे चुब छिई ।)

ब्रह्मानन्द- चनु भैया । आग साबकेँ छठी बातिक दुष रोकैरै । रड आगि झुतेए
साव ।

चन्द्रशे- चले चनु । (चन्द्रशे ब्रह्मानन्द, नरेश, भद्रशे, उग्रेश, सुरेश आ महेशक
प्रस्थान । फेब मनीषाक प्रस्थान । अन्दबमे मंगल आ मवनी अपन रैष्टीसँ
गप-सप क२ बहल छिई पद उठैए । तीनु पवानी आगु रड जागए ।
फेब पद थसैए ।)

मवनी- रौखा, हम तँ तौवा कालि चिन्हौ नै केरियौ ।

मंगल- हमरुँ अकचकाएले बहि गेलौं । जखनि गवसँ देखलौं तँ रूमरिई हमरे
रौखा छी । एतने दिनमे केना एहेन भ२ गेलही ?

गंजीनियव- एतुक्का पानि आ ओतुक्का पानिमे रड अँतव छै । शुक्रमे ओतुक्का पानि हमरो
नै नीक नगै छल । रादमे नीक लागए नगर । सब पानिक कमल छी ।



- मवनी- नोकरी-तोकरी भेलौ की नै ?
 गंजीनियब- भेलौ की ।
 मवनी- केते महिना कमाग छिनी ?
 गंजीनियब- माए, तौवा सरहक अमिबरदस पैंतानिस हजार महिना कमाग छियौ ।
 मवनी- एतही तँ राउक हाथमे पाग कहाँ देतही ?
 गंजीनियब- बखने ि छुई । आग दह देरैनि ।
 मंगल- आरौ घबपव पियान नै देरैही तँ केना हेते ? आरँ तँ हकीम भेलही ।
 कए आदमी एते-जेते तौवा गर । की कह जेते ?
 गंजीनियब- से तँ ठाँके । केते नीक ठाम जमीन भँजियाड । हम पाग पठा देरँ ।
 अहाँ जमीन कीनि ओपव रँदा याँ घब रँना लेरँ । राउ, अहाँ ए काज
 छोटा दियौ आरँ ?
 मंगल- से किअ रौथा ? अपन काज करैमे कोन हवजा ?
 गंजीनियब- से हवजा कोनो नै । झुदा अहाँ सभकेँ उमेव रँसी भँ गेल । लोक की
 कहत जे गंजीनियब भँ कँ माए-रौपकेँ खँरै छै ?
 मंगल- रौथा, रँसावी भँ जाएरँ तँ मन आ देह असोथकित भँ जाएत । बग-
 रँबगक रँसावी हएत । तगसँ सभ पवानी परेशान बहरँ ।
 गंजीनियब- एहो गप तँ कँरैरँना नै अछि । तँ एगो हएत जे कोनो पँधे थोति देरँ
 आ ओहीमे नगर-भँडन बहरँ । अपन काजमे राज किअ ? झुदा उमेव
 भेने हन्रको काज भारी भँ जाग छै । रँस काँटि कनहापव आनरँ से
 आरँ अहाँ रँते पाव नै नगत ।
 मंगल- ठके छै । कोनो पँधे थोति दिहँ ।
 (चन्द्रशे, सभ कियोक प्ररेश । गंजीनियब ब्रवसीपव सँ उठि गेलथि । मंगल
 आ मवनी सेहो उठि गेल ।)
 गंजीनियब- मानिक प्रशाम । (चन्द्रशे ग्वम छथि ।)
 रँसज जाड, मानिक सभ । गरीरँ आदमी देरौन रँवरँवि ।
 (मवनी अन्दवसँ चँगा आनि रिँडा देलक ।)
 मंगल- मानिक सभ प्रशाम । आग केमहव सकज नगलौ हन ? रँस जाग जाड,
 मानिक सभ । (कियो नै रँजे छथि ।)
 चन्द्रशे- (थिसिआ कँ ।) मंगला, पहिने तँ अपन रँषाकेँ पूछ-की केनको हन ?
 मंगल- की केनही मानिककेँ ?
 गंजीनियब- हम कहाँ किछ केनियनि मानिककेँ ?



- ब्रह्मानन्द- मानिककेँ नै, मानिकक रैषीकेँ ?
- गंजीनियाब- से मानिक, अपन रैषीकेँ पुछथुन जे ककब दोथ ?
- ब्रह्मानन्द- केकरो दोथ छै नै बड ?
- गंजीनियाब- प्रेमसँ केकरो दोथ नै होग छै । जेतए प्रेम छै तेउँ गप्पिब छै ।
- नरेश- हमछँ एतए एकबा माएसँ प्रेम कबरै । तँ गप्पिब बहते नै ?
- ब्रह्मानन्द- अथनि प्रेमसँ तोबा रौपक झूठपब दु चष्ट दिई । तँ गप्पिब बहते किये ?
- उद्देश- प्रेमसँ केरो रहुकेँ न२ क२ भाषि जाग । तँ गप्पिब बहते किये ओत ?
- सुरेश- हम तोबा रौपसँ रिखाह क२ जेरो । तँ गप्पिब बहते की नै ?
- मंगल- मानिक सभ, अहाँ सभ एना किअ रौजे छिई अर्ब-रर्ब रौताह जकाँ ।
- महेश- जखनि हम सभ रौताहे छी तखनि हवामी रौचा गंजीनियाबराकेँ दु चष्ट दिई तँ केहेन मन हेते सारकेँ ।
(महेश कहत मातब गंजीनियाबकेँ दु चष्ट गानपब रौसा देलक । सभ कियो ब्रह्मणि गेल । चन्द्रशे आ ब्रह्मानन्द ठाढ़ छथि । मबनी हमबा रौषाकेँ माबि देलक माबि देलक टिछिआ बहल अछि । गंजीनियाब रौहोशि भ२ खसि पड़ल । तेयो मानाग नै छोड़ जाग । रौटा याँ जकाँ माबि भ२ बहल अछि ।)
- चन्द्रशे- मंगला दुनु पबानीकेँ छोड़ि दग जाली । एकबा सरहक कोनो दोथ नै छै । (दुनु पबानीकेँ कियो नै मारै । गंजीनियाब मबनासन भ२ गेल ।)
आरँ हवामीकेँ छोड़ि दही । सारकेँ कनियोँ दिमाग हेते तँ आरँ एहेन काज केतो नै कबत । हवामी रौचा, जही पातमे थेनक ओही पातमे छेद केनक । (सभ कियो छोड़ि देलक । सभ हकमि बहल अछि ।)
- महेश- रौकारे मारै जाग गेलही । सब अही रौतूथे मबि जेते । आरँ हमबा एकबापब रौद दया अरौ छै ।
- चन्द्रशे- मबए दही, हवामी रौचाकेँ । अपना सभ चले चल ।
(सातो गौष्टेक प्रस्थान ।)

पठाम्फेस ।



छत्र दृश्य-

- (स्थान- मंगलक घब । मंगल आ मवनी चिन्तित झुट्टामे रैसन छथि ।
 गंजनीयब रोगी जकाँ रैसन छथि ।)
- मंगल- रौआ, कान्हि एना किछ भेलै, से किछ नै बुझ सकनिई ? की केने छेलै
 हुनका ?
- गंजनीयब- हुनकर रैसैसँ हमरा प्रेम भऽ गेलै ओव कोनो रात नै ।
- मवनी- ओ नीक रात तँ नै भेलै । उ जौल्ल छथिन आ अपना सब डोम । उ रँड
 थमीव छथिन आ अपना सब रँड गरीव छी । अपना जातिमे नङा की नै छै
 जे तू ओते छँच जातिमे पैसेलै ।
- गंजनीयब- माए, प्रेममे छँच-नीच नै देखल जाग छै ।
- मवनी- हो दूखन रौड, उ जे अपना सबकेँ एते मारक हेल से हमर रिचार छल
 जे थाना जाग आ तोहक की रिचार ?
- मंगल- कक, हम कनी मणिकान्त मारिककेँ रजेले अरै छी । एहेन तबक कोनो
 काज रिना सोचने-रिचारने नै कवरक चाहि । तू दू माग-पूत गप-सप
 कव आ हम अरै छी । (मंगलक प्रस्थान ।)
- मवनी- तू जे कहलै प्रेममे छँच-नीच नै देखल जाग छै, से किछ ?
- गंजनीयब- काब आनहव होग छै ।
- मवनी- लोक पिआ-पुतारकेँ अहीने पढ़रै-लिखरै छै ?
- गंजनीयब- नै माए, प्रेम झुठेमे होग छै । प्रेमक कोनो सीमा नै छै ।
- मवनी- ईसँ फेदा की छै ?
- गंजनीयब- ईसँ मानरता अरै छै । छँच-नीचक भेद-भार हलै छै । रँडका-छेष्टका
 एक हेलै । तर समाजक विकास हेलै ।
- मवनी- एकव चिन्ता तोरे किछ छै ?
- गंजनीयब- जारै एकव चिन्ता केकरो हेलै नै आ उ रौड । उल्लेख नै तारै समाजक
 विकास केना हेलै ?
- मवनी- रौड । उठरैक हल भेलै नै । रँड याँ भेलै नै ?
- गंजनीयब- कोनो रौड । उठरैक हल भेलै आ सब परेशानी केनै पढ़ छै । महत्मा
 गांधीकेँ देशे स्तुति कवरैमे कोन-कोन परेशानीक सामना कव पढ़लनि ।
 (मंगलक संग मणिकान्तक प्रवेश ।)



मानिक प्रशाम । रैसन जाड । (गंजीनियब कबसीपव उठि निचाँ रैसनथि आ मणिकाँत कबसीपव रैसना ।)

मणिकाँत- कह रौथा, एना किथे भेलौ?

गंजीनियब- चन्द्रशे मानिकक रैषी आ हम रँगनुबमे बह छी अपन-अपन डेबामे । दुनु गोठे एक दिन अचानक पार्कमे मित गेलौ । गप-सप्प भेल । डुहो प्रेम सरनपी नै, एकदम सामान्य । तू की करै छै तू की करै छै ? हेब हम अपन डेवा चलि गेलौ ।

दुब दृष्टि बहने एक दिन उ हमरा डेवापव पहुँच प्रेम सरनपी गप-सप्प कबह लगली । हमहुँ दुब दृष्टिक आदब करैत ओकवा हँ कहि देखि ।

तेकरे सजा हम भोगि बहल छी । अस्मर गप अह छै ।

मणिकाँत- रात रूमा गेल । तौवा सरहक रात रूमए रैना समाज अथनि नै भेलौ हेल । बसे-बसे हेते । तू सब जाति-प्रथाकेँ तोड़क दृष्टि बधि आ काज करै जाग गेलौ । की हमब अनुमान गरत छै ?

गंजीनियब- हण्ड्रेड पवसेन्ट सत्य । अपने सब रँड अनुभरी छि । अही सब जकाँ जौ समाजक कर्णधार हथै तू समाजक आशीर्वाद कल्याण हथै ।

मणिकाँत- तू सब भविसक रँडका यानी उँच आ छोटका यानी नीचकेँ एक करैक पवियास कइ बहल छी ।

गंजीनियब- जी, जी । नहो, अपने अंतर्दामी होग ।

मणिकाँत- नै नै । अंतर्दामी तू अग्निय छथिन । समाजक जे समस्या देखै सनै छी आ अनुभर करै छी । तग अभावपव रँजलौ । मंगल, एकवा सरहक पवियास एकठ पैघ रीड । छै उ रीड । भविसक नेन नीक छै । आर की कहि छह से कहह ।

मंगल- मानिक, दुखन माएक रिचाव छै जे थाना जाग । अहाँक की रिचाव ?

मणिकाँत- हमरा रिचारे थानाक चक्रबमे नै पड़ह । गरीब आदमी छह । हवान-हवान भइ जेरह । उ सब पागरना छै । सबकेँ जहल थै दैतह । उचित-अनुचितक हेलसना होगमे रँड समथ नहो छै । उजड़ल-उपठल छह । कनी रँदशि कइ कइ चलल । समाजमे सबपच सौहरस हेलसना कवा नैह । डुहो रँड अनुभरी छथि । एम.ए., एल.एल.बी. छथिन । तँ नै अपन बामनगव पाँचागतमे निरिरोध चलल गेलथिन । दुध-पानि रैवरैक उद्धृत श्रमता हुनकामे छन्हि । अपन पाँचागतक टी.एन.सेशन छथिन ओ । ईस आगु तौवा सरहक अपन रिचाव ।



- मंगल- मानिक, हम अपनेके सभ दिन मानैत बहलौं आ मानैत बहरैं । अपनेक देखाएन बस्तापब चनलौं । तँए रैखा, आग गंजीनियब छट्टि । हम अहाँक कहन अरैस्स कबरैं ।
- मणिकार्त- तहन कालि पछेती कबा लेह ।
- मंगल- रैस मानिक । झुदा पछेतीमे अहाँ बहरैछौ कबरैं ।
- मणिकार्त- रैस, कालि अरैस्स बहरैं । अथनि जाए दैह । (मणिकार्त दासक प्रस्थान ।)
- मंगल- दुखन माए, आरैं कालि देखही की होग छै ?

पठाम्फेप ।



सातम दृश्य-

- (स्थान- गामक मिडिन सुकूनक । पंचैतीक तैयारी । सुकूनपव मंगल, अंजनीनियब, बरीया आ मणिकांत उपस्थिति छथि ।)
- मणिकांत- की हो मंगल, नख रंजक समथ छेलै आ साठे नख रंजि बहन छट्टि ।
अथनि धवि ओ सभ कहाँ कियो एता । सबपट सहिरै सेहो नै पहुँच सकला ।)
- मंगल- कहने तँ छियनि आ हुनो कहने छथि जे अरंस आधर ।
(सबपट सहिरै-मोतीनारक प्रवेश । सभ कियो उठि गेला । प्रशाम-पाती भेल । मोतीनार कबसीपव रैसना । मणिकांत सेहो कबसीपव रैसना ।
मंगल, अंजनीनियब आ बरीया निच्छाँमे रैसना ।)
- मोतीनार- मंगल, हम अदहा घंटा जेठ छीथ से हमबा माफ कबिहथ । की कबरै, रँड हागर बह छै । हुँहुँनमा रकबीसँ उनछै कतम थिआ नेलकै आ कतमरँनारकै मावरौ केनकै । तहीक पंचैतीमे देवी नगि गेल ।
ओग पाछाँकेँ नै देखै छिथ ।
- मंगल- की जानए गरिथ, ओ सभ किअए नै आधन ?
- बरीया- भैया बौ, नै बूने छिहिन दोब केतो अजोत सह ।
- मोतीनार- केतो किछ नै राजि दी । अरिते हेता । कोनो जकबी काजमे रामि गेल हेता ।
(चन्द्रशे आ ब्रह्मानंदक प्रवेश । प्रशाम-पाती भेल । दुनु आदमी कबसीपव रैसना ।)
- चन्द्रशे, रँड देवी भेल ?
- चन्द्रशे- ब्रह्मानंदक पनीकेँ रँछा होगरँना छै । पनीकेँ अस्पतार पठरँक जोगारमे आ नागर बहथि । कह छना, हम अस्पतार जाधर । हम हिनका जरबदस्ती अनियनि ।
- मोतीनार- हिनका नै अन्क चाली अहाँकेँ । काबण हिनका कोन जकबी हेतनि कोन नै । आथिब पति छथिन नै ?
- चन्द्रशे- ठीक छै हिनका जल्दीए छोड़ा देरनि ।
- मोतीनार- चन्द्रशे राबू, ओब कियो एता अहाँ दिसक ?
- चन्द्रशे- कहने तँ कएक गोठेकेँ छियनि । रुदा ओगमे जे सभ अरथि ।



- बरीया- सबपट सहरि, उ ग्रंदा साब सभ कहाँ एने जे हमबा भैया-भोजी आ
भतीजाकेँ अधमोगति कऽ माबनक ?
- मोतीनार- चूप बुबरक, पछेतीमे लोक अष्ट-सष्ट ने रजे छै ।
- बरीया- हँ यौ सबपट सहरि (झुडी डोना कऽ) हम डोम छी, छेष्टका छी तँ रड़
बुबरक आ जे हमबा घर पैस हमबा सभकेँ माबनक-पछेनक से रड़
कारिन ।
- मोतीनार- ने रौआ, से रात ने छै । असम रात अ छै जे कर्म ग्रंथे लोक
बुबरक-कारिन होअ छै ।
(बामानंद, धर्मानंद, चन्द्रकांत, उमाकांत, शोभाकांत आ अनंद नावायणक
प्रवेश । सभ कियो प्रणाम-पाती कऽ निछाँमे रैसना ।)
उब कियो एता, चन्द्रशे राबू ?
- चन्द्रशे- आगरौ सकै छथि । तारे पछेती शुक कक । रड़ छेष्ट भऽ बहन अछि ।
अछुकेँ रड़ हाअर बैअ ।
- मोतीनार- आर पछेती शुक कएन जाअ ?
- सभ कियो- जी, कएन जाअ ।
- मोतीनार- मंगल, तँ पछेती किअ रैसैनक ?
- मंगल- चन्द्रशे मानिक हमबा सभ पबानीकेँ पाँचठाँ ग्रंदासँ पछेरौनथि आ अपने ठाढ़
बहथि । हमब रैष्टाकेँ अथनि धरि होशि ने अछि । पकड़ा कऽ अनरौ
हैन ।
- मोतीनार- की यौ चन्द्रशे राबू, ठीक रात छिई ?
- चन्द्रशे- रिक्कर ठीक अछि । झुदा, मंगलासँ प्रडियन जे ओकर रैष्ट हमबा रैष्टासँ
प्रेम करै छै । से किअ ? अँ यौ सबपट सहरि, धनि हम जे आकर
रैष्ट पढ़ा -लिथि कऽ अँजीनियर रनि सकन आ से हमरे रैष्टीपब हाथ होब
दिअ ।
- मंगल- सबपट सहरि, हिनका प्रडियन जे हमबा रैष्टाकेँ अँजीनियर रनेमे केते पाअ
अपना दिससँ मदति केनथिन । हँ एगो ग्रंथ ने रिसवरनि जे रैबपब किछ
समान नऽ कऽ जाअ छेनथिन तँ उचित सँ रड़ कममे जकर नऽ नअ
छेनथिन ।
- चन्द्रशे- हम तँ उचितसँ रैसी दअ छेनिई । झुदा एकबा कम बुनाअ छेलै । तहन
हमबा अँठाम किअ अरै छन ?
- मंगल- हमब पसाबी छथिन आ गामक माँ नक छथिन तँअ ।



- मोतीनार- अहाँ सभ आ डकठा-पैठा छोट्टा जाग जाउ । मंगल, तोबा रैठासँ प्रुठे छिथ जे उ हिनका रैठासँ प्रेम करै छै की नै ?
- आँजीनियब- जी करै छिथ ।
- मोतीनार- चन्द्रशेखर रैठा तोबासँ प्रेम करै छह की नै ?
- आँजीनियब- आ जराँ हिनकर रैठासँ नेल जाए श्रीमान् ।
- मोतीनार- चन्द्रशे, अपन रैठाकेँ रजामेन जाए ।
- चन्द्रशे- ब्रह्मानन्द अहाँ घब चलि जाउ । रूँछाकेँ किनको सँगे जल्दी पठा देरँ आ अहाँ असुपतार चलि जाएँ ।
- ब्रह्मानन्द- रैस हम जाग छी । (ब्रह्मानन्दक प्रस्थान ।)
- चन्द्रशे- सबपट साँहर, कछ तँ, केतए ब्रह्मा आ केतए डोम । जमीन असमानक हबक छै । हमब प्रतिष्ठा आ मंगलक प्रतिष्ठा दुनु कहियो एक बग भइ सकैए ? डोम आ ब्रह्मामे रिखाह केकरो सोहेते ? तंगमे हमब जातिमे केहेन लगते । उ सभ हमबा जीख देता ? जाति प्ररन होग छै आ प्रतिष्ठा रूँछा कठिनसँ भेटै छै ।
- मोतीनार- अच्छा, रैठाकेँ आरए दियन । स्थिति-पबिस्थिति करुनर तहन नै कोनो निष्कर्ष निकलत । उना आजुक समाजक जे रैसथा छै, तंगमे अहाँक कहँ ठीक अछि । ममिता तँ अहाँ आ मंगलरना नै छै । अहाँ दुनु आदमी समाजक रैसथा रूँछे ठीक छी । झुदा दुनु रैठा-रैठामे कोन तबपेस्की छै, से तँ दुनु प्रत्यक्ष हएत, तहने रूमरै । (डाक्टर आ डाक्टरक पितियोत रहिन डमक प्रवेश । दुनुकेँ मोतीनार हबसीपब रैसक आदेश देलनि । दुनु हबसीपब रैस गेली ।)
- रूँछा, अहाँ आ दुनक बीच कोनो सरनष अछि ?
- डाक्टर- जी, उ हमब प्रेमी छथि ।
- मोतीनार- एकतबहा आकि दूतबहा ?
- डाक्टर- दूतबहा । कोण केकरोसँ कम नै ।
- मोतीनार- तहन ओग रोचावार्केँ किअ पाँठरौनिथ ?
- डाक्टर- (अकचकागत) हम, नै तँ, नै, हमबा किछ नै रूमन अछि ।
- मोतीनार- की दुन, रात सत्य छिथ ? हाथ एकरे भइ सकै छै ?
- आँजीनियब- रात तँ रिक्कर सत्य छै । झुदा चन्द्रप्रभाक हाथ नै भइ सकै छै, नै भइ सकै छै, नै भइ सकै छै ।
- चन्द्रशे मादिकक प्रत्यक्षक घटना छी ।



- डक्ठब- हमर पापा एहेन घष्टिया काज केरथि, एहेन घष्टिया काज केरथि, एहेन घष्टिया काज केरथि ? नीक नै केरथि, नीक नै केरथि, नीक नै केरथि ।
(अचेत भ२ थसि पड़' छथि । चन्द्रशेखर समाधि चन्द्रप्रभावे गणि जाग छथि ।
दूधन चन्द्रप्रभाक झूठपव अपन रौपक गपछासँ होकैए गगै छथि ।
चन्द्रशेखर दूधन आँखि तार-पीथव क२ बहरथ । उमा पानि आनि आकब झूठ पोछैए ।
कनीकान पछाति चन्द्रप्रभा होशिमे एनी । की भेलै, की भेलैक हल्ला शीत भेल ।)
- मोतीनार- बूछी, आरं ठीक छी ?
- डक्ठब- (झड़ १ डोला क२) है ।
- मोतीनार- किछु ओव सरावक जरार द२ सकै छी ?
- डक्ठब- जी, रैदाँ याँ जकाँ ।
- मोतीनार- अहाँकेँ ओना किथए भ२ गेल छल ?
- डक्ठब- ओ घष्टना जे हमर पापा दूधवा कएल गेल, हमरा एक्का बन्नी पसीन नै ।
हमर दिन ओकरा रैवदास नै क२ सकल ।
- मोतीनार- अहाँ सब डक्ठब-अंजनीयब छी । जातिक रा आर्थिक दृष्टिसँ रैवत डूँच-नीच छी । तएमे प्रेम किथए भेल ?
- डक्ठब- श्रीमान् प्रेममे जाति-पाति रा अमीब-गरीब नै देखल जाग छै ।
- मोतीनार- किछु उदेस अछि की ?
- डक्ठब- रैव पौघ उदेस अछि । रैव पौघ रौड १ अछि ।
- मोतीनार- की उदेस अछि ?
- डक्ठब- जाति-प्रथाकेँ खतम केनाग ।
- मोतीनार- दूधन, अछूक किछु उदेस अछि ?
- अंजनीयब- जी, अरुम्स अछि । डूँच-नीचकेँ एक केनाग ।
- मोतीनार- रौत रूमा गेल । ओ सब अही दूधारे प्रेमक दुनियाँमे पएव देलक हेल ।
आरं अगिला कार्यक्रम की अछि ?
- अंजनीयब- अगिला कार्यक्रम हमरा सरलक रिवाज अछि ।
- मोतीनार- की बूछी, अहाँकेँ ओ उचित रूमागए ?
- डक्ठब- उचिते नै, महा उचित ।
- मोतीनार- की चन्द्रशेखर रौव ? अहाँ किछु नै रैजै छी ?
- चन्द्रशेखर- की रौजी, किछु नै बूबागए ।
- मोतीनार- बूछी अहाँ आ दूधन अपन-अपन घब जाड ।



(डाकूँव, उमा आ दुधनक प्रस्थान ।)

चन्द्रशे रौरू, ममिना रूँड गडरूँड अछि । आ सब नै मानैरैना अछि । एकबा सरहक सर्ग कोनो पबियास काज नै कबत । रैकाबमे रैज्जति छैत । कानूनो एकरे सर्ग देते ।

चन्द्रशे- किछु हेते, हम एकबा नै मानरै, नै रैवदस क२ सकरै ।

मोतीनार- तहन पँचैतीक कोनो महत नै । सह नै ?

चन्द्रशे- नै, महत तँ रूँड छै । अपने रूँज्जा छिई, रूँड अनभरी छिई । उचित हैसना कबिउ ।

मोतीनार- देखियो, हम तँ अपना भवि उचितोचित हैसना कबरै । पाँछैकेँ पीक नहो रा अपना, ओगसँ हमबा कोनो मतनरै नै ? की नै मँगन, तोहब की रिचाव ?

मँगन- मानिक, नख कबिई आकि छुख कबिई । सब मँजूर ।

मोतीनार- आरै हम हैसना देमए चाँह छी । ई रीचमे किनको किछु राजरौक अछि तँ राजि सकै छी ।

(कनीकान कियो किछु नै रैजै छथि ।)

अथनि धवि अहाँक हैसना सवाहनिय बहन अछि । अहाँपब सबकेँ रिसरास छन्हि ।

चन्द्रकाँत- अहाँक हैसनामे दुध-पानि रैबा जागए । अहाँक हैसना जे काँठत, से दोखी भ२ सकैए ।

बरीया- अहाँक हैसना ने लोक केतए-केतएसँ अरैत बहए । रिना कावणे छैछी नै नहो छै ।

मोतीनार- तहन हमब हैसना सुने जाग जाड ।

जाति एक्कठा अछि, मनुख जाति । रैत्रानिक लोकनि एकबा होमोसेपिअन्स कह छथि । हम सब अपन रचिस्र नेन जाति अलग-अलग रैनरै छी

जेगमे अपन-अपन सूर्य नेन हविदम नगड होगत बहए । जाति-प्रथाम मानसिक तनार रूँटए आ समाजक विकास करैए । कर्मक प्रधानता छै ।

कर्मसँ ऊँच-नीच होग छै । जग मनुखक कर्म नीक छन्हि, ओ गुणगव छथि, ओह ऊँच छथि । गुणक प्रधानता बहक चाही । डाकूँव आ गँजनीयबक सोच

ऊँच छन्हि । तँ दूक प्रेमकेँ हम स्रागत करै छथिनि । सहर्ष दूक रिखाह हेरौक चाही ।

(थोपवीक रौँडाव भ२ बहन अछि ।)



झुदा रिंखाहोपवाँत दुनूक सरिन्ध बाय-सीता जकाँ हुंथ। निथो-हैको पेन जकाँ नै। (थोपवीक रौछाव भेल।)

धनिक लोक यानी ऊँच लोक गरीब लोक यानी नीच लोकक परिश्रमसँ ऊँच होग छथि। रँदनामे उ गरीबक शोषण करै छथि। ए मानरताक रिकछ भेल। हमबा रिचारे ऊँच-नीच दुनू एक-दोसबक उपकारकेँ मानथि आ अपन-अपन अधिकार-कबतरमे तिरौष्टी नै कबथि। तहने समाजक विकास संभल रहत। (थोपवीक रौछाव भेल।)

मंगल दुनू पवानीकेँ चन्द्रशि पीठरैतथिन। ए हिनकब गतती भेलनि। ई प्रेम प्रसंगमे मंगल दुनू पवानीक कोनो दोष नै छन्हि। ई गतती लेल चन्द्रशेकेँ ज़ुर्माना लगतनि।

(थोपवीक रौछाव भेल। चन्द्रशेक झुड़ १ निच्छाँ भइ जाअ।)

बरीया- सबपट साँहर, पीछेती खतम भइ गेल नै ?

मोतीनार- नै कनी ओव छै।

बरीया- कनी जल्दी कबियो। हमबा कनी पोथवि दिस जाअक अछि।

मोतीनार- तँ पहिने पोथवि दिससँ भइ आरँह। तहन पीछेती सुनिअथ।

बरीया- साब सबकेँ ओकागत बँह छै नहियेँ आ पड़ १-जिनेरीक भोज कबत। सड़नाहा डनडामे पड़ १ छानत तँ कमो-समो थाएँ तँ पेष्ट खबारँ हेरै कबत। अहाँक पीछेती सुनेमे रँड नीक लगै छै। जापवि रँवदाशि रहत अरँस सुनरँ।

मोतीनार- देखिअथ, धोतीमे नै भइ जा।

पीछेतीमे उपस्थित महानुभाससँ हमब आग्रह जे हमब हिसरापब जदी कियो छिपपणी कबता हुनका हम स्रागत कबरँनि।

बरीया- सबपट साँहर, हमबा कहनिँ कनी ओव दै, से कहाँ कहनिँ ? ओग दुआरे हम पोथवि दिस नै जा बहन छी।

मोतीनार- हँ, ज़ुर्माना की केना लगतनि ? से छुँलै अछि आ हिसराक कागत रँनेनाग छुँल अछि।

किनको कोनो तबहक रिरोध रैकत कबरँक हुंथ तँ रैहिक रैकत कबी। (सब कियो ग्रम बँह छथि।)

की चन्द्रशि, अपनेकेँ ए हिसरा मान्य अछि ?



- चन्द्रशे- (कनीकान ग्राम भ२) बहरै तँ समाजेमे । जदी संपूर्ण समाजकेँ मान्य छन्हि
तँ हम केना कहि जे हमबा अमान्य छि । हमरो मान्य छि । (झुड़ १
मुका नग छथि ।)
- मोतीनार- तहन रिखाहक की केना कबरै ?
- चन्द्रशे- अपने जे जेना कहि ।
- मोतीनार- मंगल, तँ रिखाहकेँ की केना कबरैहक ?
- मंगल- हम किछो नै राजरै, सबपट सहै । अपने सरैहक रिचारे रिचाव ।
- मणिकान्त- श्रीमान् अपने जे कहै, ओकर आदर सब क्रियो कबता ।
- मोतीनार- तहन हमर रिचाव छि जे डाक्टर-गंजीनियरक रिखाह आगए, अथनि आ
एतु भ२ जाए ।
(थोपरीक रौछाव भ२ गेल ।)
- दुनु पक्ष तकोर कम-सँ-कम खर्चमे निमहि जेत । भोज-भात
रिखाहोपरान्त करै जाग जेत । (थोपरीक रौछाव भेल ।)
- झुड़ा एकठा आरक्षक रात चन्द्रशे राबूकेँ कहए चाँ छियनि । ओ आ जे
ग्रंगर रैषेकेँ ग्रंगर रैव भैठेलनि तँ आ डालीमे एककड़ा रीस-डीह दिख
पड़तनि ।
(थोपरीक रौछाव भेल ।)
- ओव जूमानिमे ओपव काज चलैरैना घब रैनाए पड़तनि । (थोपरीक
रौछाव भेल ।)
- गोव नगागमे अपन जमाएकेँ जे देखुन रा नै देखुनहम किछ नै कहैनि ।
की चन्द्रशे, मनोमान छि किने ?
- चन्द्रशे- श्रीमान् जागतो गमेरौ, सुआदो नै पेरौ ।
- मोतीनार- असुर सुआद तँ अहाँ पेरौ आ पए । योग्य रैषेकेँ योग्य रैव
भैठेलनि । आ सबसँ पैघ सुआद भेल । दोसब समाजमे मानरता एतु ।
हुँहो सुआद कम नै बुनियो ।
- चन्द्रशे- जे कहि अपने ।
- मोतीनार- उपचारिक तैवपव एगो कागत रैनेनाग आरक्षक छि जे दुनु पक्षकेँ
समैपव काज आए ।
(मोतीनार कागत लिखनि । दुनु पक्षसँ हस्ताक्षर/निशान लेनि । किछ
गराहीक हस्ताक्षर/निशान सेहो भेल । एक प्रति कागत चन्द्रशेकेँ देलनि
आ दोसब प्रति मंगलकेँ देलनि ।)



- दनु पम्क रिखाहक तैयारी कर । छै मंगनी पठ रिखाह ।
(मंगल आ चन्द्रशेख प्रस्थान ।)
- जापवि समाजमे आ सभ परिवर्तन नै छैत तापवि समाज पढ्खाएन बहत ।
आ समाजे पढ्खाएन बहत तँ देशे कहियो आगु नै रँटि सकैए ।
- बरीया- सबपट सहरि, आरँ रँवदशि नै छैत । कनी अरै छी पोखवि दिससँ । चाह-
नाशिता हमरोने बहए देरै ।
- मोतीनार- जा, जगदी आरँह । (बरीयाक प्रस्थान । मंगल मवनी आ अंजनीनयक
प्रवेशे । चन्द्रशेख आ ज्ञानानंदक प्रवेशे । चन्द्रशेख पम्कमे चाह-पान-जगथेक
जोगाव अछि । डाक्टरक संग उमा, आ चावि-पाँचैण दाग-मागक प्रवेशे ।
रँव-कनियाँ कबसीपव रँसगथि ।)
- चन्द्रशेख रौरू, आरँ अपने सभ अगिला कार्यक्रम देखियो । हमरा चतराक
आज्ञा देन जाए । कबीमनगर जेरौक अछि पँचैतीमे ।
- चन्द्रशेख- आ नै भँ सकैए । अहाँकेँ बँह पड़त ।
(पवमानन्द आ पृष्णानंदक प्रवेशे ।)
- मोतीनार- जदी हमरा बँह पड़त तँ जे कवरँ से जगदी कर ।
- चन्द्रशेख- ज्ञानानंद, जगथे चलाउ ।
(ज्ञानानंद, पवमानंद आ पृष्णानंद जगथे चला बहन छथि । फेब पान
चलन । चाह चलन । बरीयाक प्रवेशे ।)
- बरीया- सबपट सहरि, हमरो ने छे आकि सपि गेलै ?
- मोतीनार- तूँ रँड देवी नगा देवरक । नगैए सपि गेल तेते ।
- बरीया- अँध यो, भवि मन पोखैरो दिस नै केनौ आ नशितो छुटि गेल । एहने
रँसगथि ?
- मोतीनार- चन्द्रशेख रौरू, एगो जगथे छुटि गेल अछि ।
- चन्द्रशेख- के छुटन छथि ?
- बरीया- हम छुटन छी ।
- चन्द्रशेख- ज्ञानानंद, बरीया जगथेमे छुटन छथि ।
(पवमानंद बरीयाकेँ जगथे देननि । आगते-आगते कछमझागत धौतीक
ठेका पकड़ि बरीयाक प्रस्थान ।)
- मोतीनार- चन्द्रशेख रौरू, आरँ रँड देवी भँ बहन अछि हमरा । अगिला कार्यक्रम जगदी
कएन जाए ।
- चन्द्रशेख- जनानी सभ, जयमारा कवरै जाग जाउ ।



ब्रह्मानन्द, अहाँ सभ पान चलाउ ।
(जनानी सभ जयमाता कवरै छथि । ब्रह्मानन्द परमानन्द आ धर्मशानन्द पान
चरै छथि । जयमाता भेल । थोपरीक रौद्राव भेल । बरीयाक प्रवेश ।
चन्द्रशे-मंगल आ ब्रह्मानन्द-बरीयामे हूँ-हूँ समधी मितन भेल । थोपरीस
सभा गुंजि बहल अछि । रैब-कनियाँ श्रेष्ठ जनकै पएव छुरि प्रणाम
केलनि । सभ क्रियो असीबराद देलथिन । रैब-कनियाँ दर्शककै कब जोड़ा
प्रणाम क२ बहल छथि ।)

पठाक्षेप ।

अति शुभम् ।

ए कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा):लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनूवाद रिलीज
उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासंस्कृत)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला मा द्वारा मैथिली अनूवाद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनूवाद श्रीमती कपा धीर आ श्री धीरेन्द्र
प्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देशे-भ्रम



४. तुकाबाम बामा शैष्टिक कोकणी उपन्यासक मैथिली अन्वराद डॉ. शिबु क्रमाव सिंह द्वारा
पाथनो

रानानां धते

रंछा लोकनि द्वारा स्वरणीय ग्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्मद्वर्त (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दूनु हाथ देखराक
चाही, आ ग्लोक रंजराक चाही ।

कवात्रे रसते नक्ष्मीः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्ष्मी रसित छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मुनमे ब्रह्मा स्थित छथि ।
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसराक काल-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।

दीपात्रे शिखरः प्राकतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे
शिखर स्थित छथि । हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्वतरौक काल-

बामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्यं वृकोदबम् ।

शयने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सभ दिन स्वतरौसँ पहिने बाम, क्रमावस्यामी, हनुमान्, गकड आऽ भीमक स्मरण करैत
छथि, हुनकव दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहरौक समय-



गङ्गा च यद्गने टैर गौदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

हे गङ्गा, यद्गना, गौदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी पाव । एहि जनमे
अपन सन्निधि दिख ।

३. उतर्ब यस्मैद्वय हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रश्मि तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्गदक उतर्बमे आऽ हिमानयक दक्षिणमे भावत अस्ति आऽ उतका सन्तति भावती
कहरैत छथि ।

३. अहर्णा द्रौपदी सीता तावा मल्दादवी तथा ।

पञ्चकं ना स्मरेन्निर्ग महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहर्णा, द्रौपदी, सीता, तावा आऽ मल्दादवी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक स्मरण
करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१. अश्विथोमा रैत्रिरासो हनुमाश्च रिभीषणः ।

हृपः पञ्चवामश्च सन्तते चिबङ्गरीनः ॥

अश्विथोमा, रैत्रि, रास, हनुमान्, रिभीषण, हृपाचार्य आऽ पञ्चवाम- ए सात ठाँ चिबङ्गरी
कहरैत छथि ।

+ साते भरतु अर्पिता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा तर्ह्या यया पञ्चपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्षा सतामस्तु प्रसादान्तुस्तु पूज्यैः

जाह्नरीफेननेथेर यन्तुषि शिशिनः कना ॥

६. रानोऽहं जगदानन्द न मे राना सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे रर्ष्यामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुरास्मित मर्षेभक्त यजुर्देद अथाय २२, मंत्र २२)



आ ब्रह्मन्निवस्य प्रजापतिवृद्धिः । निर्भोकता देवताः । स्वबाहुकृतिशुद्धः । षड्जः
स्ववः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरक्षी जायतामा बाष्पे वाज्रः श्वरेऽगमरातिरापी महाब्रथो
जायतां दोग्ध्री धेनुर्वीतान्द्रानाशः सन्निः पवर्हिर्घोरा जिह्वा वथेष्ठाः सन्नेयो हारास्य
यजमानस्य रीरो जायतां निकामे-निकामे नः पुर्ज्या रर्षितु हनरत्ता नृऽवधयः पचान्ता
योगेष्कमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पुर्णाः सन्तु मनोवथाः । शिवां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयस्तुर ।

ॐ दीर्घाभिर् । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अपन देशेमे सुयोग्य आ सर्रिक्त रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ श्रुक्के नाश
कएनिहाव सैनिक उपेन्न होथि । अपन देशेक गाय थुर दुध दय रानी, रैवद भाव रहन
कवधमे सम्मम होथि आ घोड १ ह्वित कपेँ दोगय रैता होथि । स्त्रीगण नगवक नेत्र
कवरीमे सम्मम होथि आ हारक सभावे ओजपूर्ण भाषण देरैयरैता आ नेत्र देरैमे
सम्मम होथि । अपन देशेमे जखन आरथक होय रर्ष होथि आ ण्ठपिक-रुष्टी सर्रिदा
पविपक्क होगत बहए । एरु एमे सभ तवहेँ हमरा सभक कर्या होथि । शिवक
बुद्धिक नाश होथि आ मित्रक उदय होथि ॥

मनुष्यके कोन रस्तुक गछा कवरैक चाही तकव रर्षन एहि मन्त्रमे कएत गेल अछि ।

एहिमे राचकब्रह्मापमानड्काव अछि ।

अन्वय-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि गुणसँ पविपूर्ण ब्रह्म

बाष्पे - देशेमे

ब्रह्मरक्षी-ब्रह्म रिद्याक तेजसँ हकत

आ जायतां- उपेन्न होथि

वाज्रः - बाजा

श्वरेऽगमरातिरापी



अमरा- राँष चलेरौमे निपुष

हतिरौपी-शित्केँ तावष दय रँना

महाबथो-पेय बथ रँना रीव

दोष्ठी-कामना(दुध पूर्ण कबष रँनी)

धेनुर्बोठान्द्रानाशुः धेनु-गौ रा राँषी रौठान्द्रा- पेय रँवद नाशुः -आशुः -बुबित

सपुः -घोड़ १

प्रबन्धिरौ- प्रबन्ध- रारहावकेँ धावष कबष रँनी येरौ-सुनी

जिष्ठ-शित्केँ जीतष रँना

बथेष्ठाः -बथ पब सुब

सुभेयो-उत्तम सभामे

हाराशु-हारा जेहन

यजमानशु-राजाक राजामे

रीरौ-शित्केँ प्रबाजित कबषरँना

निकामे-निकामे-निश्चयहाकतु कार्यमे

नः -रुमब सभक

प्रज्ज्या-मेघ

रषितु-रषा हेध

रुनरषा-उत्तम रुन रँना

उषधयः -उषधिः

पचात्रा- पाकष



योगेष्कमो-अनन्त नन्त करैरौक हेतु कएन गेन योगक बस्का

नः'-हमबा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेतु

त्रिचिथक अन्नराद- हे ब्रह्म, हमब बाज्यमे ब्रह्म नीक धार्मिक रिद्या रँना, बाज्य-
रीब,तीबदाज, दुध दए रँनी गाय, दौगय रँना जन्तु, उद्यमी नाबी होथि । पार्जन्य
आरथकता पडना पब रर्या देथि, हन देय रँना गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति
अर्जित/संवर्धित कबी ।

रिदेह नूतन अंक भाषापक बचनानेखन-

आँखिनीकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-आँखिनी- प्रोजेक्टकेँ आगू रँढ १३, अपन स्मार
आ योगदान अ-मेन द्वारा ggajendr@videha.com पब पठाउ ।

१.भावत आ नेपाक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक लोकनि द्वारा रँनाओन मानक शैली आ
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाक आ भावतक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक लोकनि द्वारा रँनाओन मानक शैली

१.१. नेपाक मैथिली भाषा रैज्ञानिक लोकनि द्वारा रँनाओन मानक उच्चारण आ लेखन
शैली

(भाषाशास्त्री डा. बामारताब यादरक धावणाकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग नः निधायित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमस्कव आ अन्नस्राव. पञ्चमस्कवानुशात ७, ए, ण, न एरँ म अरैत अछि । संस्कृत
भाषाक अन्नसाव शिष्टक अन्तमे जाहि रश्नाक अस्त्व वहेत अछि ओही रश्नाक पञ्चमस्कव
अरैत अछि । जेना-

अर्ह (क रश्नाक बहरौक कावणे अन्तमे ७ आएन अछि ।)

पञ्च (च रश्नाक बहरौक कावणे अन्तमे ए आएन अछि ।)



खलु (ठ रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे ण् आएन खडि ।)

सखि (त रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे न् आएन खडि ।)

खलु (प रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे म् आएन खडि ।)

उपह्राज रात मैथिलीमे कम देखन जागत खडि । पशुमासक रैदनामे अप्पिकाशि जगहपव अनुस्त्रावक प्रयोग देखन जागड । जेना- थक, पच, थड, सपि, थडि आदि । रत्नाकवारिद पलित गोरिन्द नाक कहरे छनि जे करत्ना, चरत्ना आ ठरत्नासँ पूर् अनुस्त्राव निखन जाए तथा तरत्ना आ परत्नासँ पूर् पशुमासक निखन जाए । जेना- थक, चचन, थडा, खलु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि खलु आ कम्पनक जगहपव सेहो थत आ कपन निखैत देखन जागत छथि ।

नरीन पछति किछ सुविधाजनक खरथ छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रैचत होगत छैक । झुदा कतेक रैब हस्तलेखन वा झुदामे अनुस्त्रावक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि बेनासँ अर्थक अनर्थ होगत सेहो देखन जागत खडि । अनुस्त्रावक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भारना सेहो ततरै देखन जागत खडि । एतदर्थ कसँ नह कसँ परत्ना धवि पशुमासक प्रयोग कवरै उचित खडि । यसँ नह कसँ छ धविक अस्त्रक सझ अनुस्त्रावक प्रयोग कवरैमे कतहु कोनो विवाद नहि देखन जागड ।

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण “व् ह”जकाँ होगत खडि । अतः जतह “व् ह”क उच्चारण हो ओतह मात्र ठ निखन जाए । आन ठाम खाली ट निखन जएरौक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडआ, ठझ, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = पढाग, रैठरै, गठरै, मठरै, बूठरौ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपह्राज शिष्ट, सबकेँ देखनासँ ओ स्पष्ट होगत खडि जे साधारणतया शिष्टक श्रुतमे ठ आ मया तथा खलुमे ठ अरैत खडि । एएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो लागू होगत खडि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रँ कएन जागत खडि, झुदा ओकरा रँ कपमे नहि निखन जएरौक चाही । जेना- उच्चारण : रैद्यनाथ, रिद्या, नरँ, देरँता, रिष्टु, रँषि, रँन्दना आदि । एहि सबक स्थानपव क्रमशः रैद्यनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिष्टु, रँषि, रन्दना निखरौक चाही । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत खडि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।



४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखल जागत अछि, झुदा ओकरा ज नहि लिखराक चाही । उच्चारणमे यङ्ग, जदि, जझना, जुग, जारैत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएरना शिष्ट, सबकेँ क्रमशः यङ्ग, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी, यदु, यम लिखराक चाही ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखल जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सबक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कबरारक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछ जातिमे शिष्टक आवस्थामे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अनुसरण कबरै उपहाङ्ग मानि एहि प्रसुकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोनो सहजता आ दृक्कताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । खास क२ कएन, हएर आदि कतिपय शिष्टकेँ केन, हर आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएर सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।

३.हि, हु तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पवम्परामे कोनो रीतपर रँन दैत कार शिष्टक पाछाँ हि, हु लगाओल जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तकोरहि, छेष्टहि, आनहु आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एर हुक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखल जागत अछि । जेना- हुनके, अपनो, तकोने, छेष्ट, आनो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अप्रकाशितः षक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- षडान्द (थडयन्द), थोडशी (थोडशी), षष्टकोष (थष्टकोष), वृषेण (वृथेण), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।



+. धनि-रूप : निम्नलिखित खरस्थामे शिर्षसँ धनि-रूप भऽ जागत अछि:

(क) क्रियानुयी प्रत्य अयमे य रा ए वृष्ट भऽ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकर आगाँ रूप-सूचक चिह्न रा रिकारी (/ २) नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) नेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क नेन, उठ पडतौक ।

पठऽ गेनाह, कऽ नेन, उठऽ पडतौक ।

(ख) पूर्वाकारिक ध्रुत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृष्ट भऽ जागछ, झुदा रूप-सूचक रिकारी नहि नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : आए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : आ गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृष्ट भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसरि मानिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसर मानिन चलि गेल ।

(घ) वर्तमान ध्रुतक अन्तिम त वृष्ट भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक खरसान एक, उक, ईक तथा हीकमे वृष्ट भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: डियोक, डियेक, डहीक, डोक, डैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : डियौ, डिये, डही, डो, डै, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्य न्ह, ह् तथा ठकावक रूप भऽ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : डन्हि, कहन्हि, कहन्हूँ, गेन्ह, नहि ।

अपूर्ण कप : डनि, कहनि, कहनौँ, गेन्ह, नग, नहि, नै ।



६. **प्रति स्थानानुवर्ण** : कोनो-कोनो स्वर-प्रति अपनी जगहसँ हटि क२ दोसब ठाम चलि जागत अछि । खास क२ द्रस्त्र अ आ उक सँभलमे अ राँत लागू होगत अछि । मैथिलीकवण भ२ गेल शिछक मया रा अन्तमे जँ द्रस्त्र अ रा उ आरँए उँ ओकब प्रति स्थानानुवित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शिनि (शिगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माष्टि (मागष्ट), काड्ड (काडुड्ड), मास्र (माडस) आदि । झुदा तसेम शिछ सभमे अ निखम लागू नहि होगत अछि । जेना- बश्मिकेँ बगश्म आ स्वपान्शिकेँ स्वपाडस नहि कहल जा सकैत अछि ।

१०. **हलन्त ()क प्रयोग** : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आरथकता नहि होगत अछि । कावण जे शिछक अन्तमे अ उँचावण नहि होगत अछि । झुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तसेम) शिछ सभमे हलन्त प्रयोग कएल जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकेँ मैथिली भाषा सँभल निखम अनुसाव हलन्तरिहीन बाखल गेल अछि । झुदा र्वाकवण सँभल प्रयोजनक लेल अखरथक स्थानपब कतह-कतह हलन्त देल गेल अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन दुनू शैलीक सबल आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ र्ण-रिग्यास कएल गेल अछि । स्थान आ समयमे रँचतक सङ्गि हलन्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबल होरँरँना हिसारसँ र्ण-रिग्यास मिलाओल गेल अछि । रतिमान समयमे मैथिली मात्राभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ पडि बहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापब ध्यान देल गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कृषिगत नहि होगक, ताहू दिस लेखक-मन्दल सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक कहँ छनि जे सबलताक अनुसन्धानमे एहन अरस्था किन्तु ने आरँ देरौक चाली जे भाषाक विशेषता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक पावणकेँ पूर्ण कपसँ सङ्गि त२ निरूपित)

१.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निरूपित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रतिनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रतिनीमे लिखल जाय- उँदाहरणार्थ-

ब्राह्म

एखन

ठाम

जकब, तकब

तनिकब



अडि

अग्राह

अथन, अथनि, एथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकव, तेकव

तिनकव । (रैकम्पिक कर्पे ग्राह)

ईड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप रैकम्पिकतया अपनाउत जाय: भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन । जा बहन अडि, जाय बहन अडि, जाए बहन अडि । कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कव३ गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' प्रनिक स्थानमे 'न' लिखत जाय सकैत अडि यथा कहननि रा कहनहि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखत जाय जत' स्पर्शतः 'अग' तथा 'अड' सदृश उच्चारण अग्र हो । यथा- देखेत, डुलैक, रौआ, डौक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट, एहि कपे प्रयोज होयत: जेह, सैह, गेह, ओह, लैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'अ' के वृत्त कवर सामान्यतः अग्राह थिक । यथा- ग्राह देखि आरैह, मानिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखत जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकम्पिक कर्पे 'ए' रा 'य' लिखत जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जाए अलादि ।

८. उच्चारणमे दु स्वक रीच जे 'य' प्रनि स्वतः आरि जागत अडि तकवा लेखमे स्थान रैकम्पिक कर्पे देन जाय । यथा- पीआ, अटैआ, रिआह, रा पीया, अटैया, रियाह ।

९. सान्नासिक स्वतंत्र स्वक स्थान यथासंभव 'ए' लिखत जाय रा सान्नासिक स्व । यथा:- मैए, कनिए, किवतनिए रा मैआ, कनिआ, किवतनिआ ।

१०. कावकक रिभक्तिनक निम्नलिखित कप ग्राह:- हाथकै, हाथस, हाथे, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अनुस्वार सर्वा लाज थिक । 'क' क रैकम्पिक कप 'केव' बाखत जा सकैत



अङ्कि ।

११. प्रकाशिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरुय बैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत अङ्कि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ आदि निखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रँदना अनुसारा नहि निखन जाय, किंतु छापक सुविधार्थ अर्द्ध 'उ', 'ए', तथा 'ण' क रँदना अनुसारा निखन जा सकैत अङ्कि । यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अर्धन रा अर्चन, कर्ण रा कर्ण ।

१४. हर्त चिह्न निखतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक सँग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक चिह्न शिष्टमे सँ क' निखन जाय, हँ क' नहि, सँज्ञ रिभञ्जिक हेतु क' निखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रिन्दू द्वारा रञ्ज कयन जाय । परंतु ऋदणक सुविधार्थ हि समान जठिन मात्रापव अनुसारा प्रयोग चन्द्रिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अङ्कि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क' निखन जाय, रा हागहनसँ जोडि क' , हँ क' नहि ।

१९. निख तथा दिख शिष्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अर्क देरनागरी कपमे बाखन जाय ।

२१. किछु ध्वनिक लेव नरीन चिह्न रँनराउन जाय । जा अ नहि रँनव अङ्कि तारैत एहि दू ध्वनिक रँदना प्ररित् अय/ आय/ अय/ अय/ आउ/ अउ विखन जाय । अकि ए रा अ सँ रञ्ज कएन जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/१३ श्रीकांत ठाकुर ११/१३ सुरेन्द्र मा 'सुमन' ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम



२.१. उच्चारण निर्देशः (रौलेड कएव कएव ग्राह्य):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँ- जेना राजू नाम , झुदा ण क उच्चारणमे जीह मुँधमे सँ (नै सँ-तँ उच्चारण दोष छि)- जेना राजू गणेश । तानरा शिमे जीह तारसँ , षमे मुँधसँ आ दन्त सँ दाँतसँ सँ । निर्गो, सभ आ शौषण राजि क२ देखु । मैथिलीमे ष केँ रैदिक संस्कृत जकाँ थ सेहो उच्चारित कएव जागत छि, जेना रसा, दोष । य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चारित होगत छि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेश सँजोग आ

गडसे उच्चारित होगत छि) । मैथिलीमे र क उच्चारण रै नै क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होगत छि ।

ओहिना द्रष्टु आ रैशोकान मैथिलीमे पहिने राजन जागत छि कावण देरनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रष्टु आ अक्षरक पहिने निखनो जागत आ राजनो जएरौक चारी । कावण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होगत छि (निखन तँ पहिने जागत छि झुदा राजन रौदमे जागत छि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कावण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उच्चारण)

छथि- छ ग थ छैथ (उच्चारण)

पहँचि- प हँ ग च (उच्चारण)

आरँ अ आ ग जा ए ई ओ णँ अँ अः म ई सभ लेन मात्रा सेहो छि, झुदा ईमे जा ई ओ णँ अँ अः म केँ सहाजाम्बर कपमे गत कपमे प्रहाज आ उच्चारित कएव जागत छि । जेना म केँ बी कपमे उच्चारित करँ । आ देखियो- ई लेन देखिणु क प्रयोग अछि । झुदा देखिणु लेन देखियो अछि । क सँ हँ पवि अ सम्वित भेनासँ क सँ हँ रँनेत छि, झुदा उच्चारण कान हननु हाज शिष्टक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति रँनेत छि, झुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे रँजेत छी, तखनो प्रबनका लोककेँ रँजेत स्वरँहि- मनोज, रासुरमे ओ अ हाज ज् = ज रँजे छथि ।

हेव ड अछि ज् आ ए क सहाज झुदा गत उच्चारण होगत छि- गा । ओहिना म् अछि क् आ ष क सहाज झुदा उच्चारण होगत छि छ । हेव शि आ व क सहाज अछि श्रि (जेना श्रिमिक) आ स् आ व क सहाज अछि स् (जेना मिस्) । ए लेन त+व ।

उच्चारणक ऑडियो फागन रिदेह आकषि <http://www.videha.co.in/> पर उपलब्ध छि । हेव केँ / सँ / पर पूर्ण अक्षरसँ सँ क२ निखु झुदा तँ / क२ सँ क२ । ईमे सँ मे पहिने सँ क२ निखु आ रौदरँना सँ क२ । अंकक रौद ठी निखु सँ क२ झुदा अन्य ठाम ठी निखु सँ क२ जेना



**ढुल्लै रूदा सभ ठी । केव उथ म सातम बि- ढुठम सातम ले । घबरेवामे रेवा
रूदा घबरावामे रावी प्रयाज कक ।**

बह-

बै रूदा सके (उचाव सके-ए) ।

रूदा कथनो कान बह आ बै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मा जगहमे पार्किंग
कवरौक अत्रास बै ओकवा । प्रह्लापव पता नागत जे टनटन नाम्ना आ ड्रागव कनाठ
ब्लसक पार्किंगमे काज करैत बह ।

ढुल्लै, ढुल्लै मे सेहो ई तबहक भेल । ढुल्लै क उचाव ढुल्लै-ए सेहो ।

संयोगने- (उचाव संयोगने)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गहमे ले कक , गहमे क२ सके छी ।)

क (जेना वामक)

वामक आ सगे (उचाव वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (उचाव)

चन्द्रबिन्दू आ अन्नस्राव- अन्नस्रावमे कठ धरिक प्रयोग होगत अछि रूदा चन्द्रबिन्दूमे
ले । चन्द्रबिन्दूमे कनेक एकाक सेहो उचाव होगत अछि- जेना वामसँ- (उचाव
वाम स२) वामकै- (उचाव वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कै जेना वामकै भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकै

क जेना वामक भेल हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गहमे) एते चाक शिष्ट सरहक प्रयोग अछि ।

के दोसव अर्थे प्रयाज भ२ सके- जेना, के कहनक ? रिभजि “क”क रैदना एकव
प्रयोग अछि ।



नधि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उच्चारण खा लेखन - ले

अरु क रँदनामे र जेना महवपूर्ण (महवपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र
तीन अक्षरक संज्ञाक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प ण त (सम्पति नै-
कावा सही उच्चारण आसानीसँ समुन्न नै)। क्रदा सरोतिम (सरोतिम नै)।

बाह्मिन् (बाह्मिन् नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछेले/ पोछे लेल/ पोछए लेल

पोछेए/ पोछए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछए/ पोछे

ओ लोकनि (ल्हा क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहिले/

ओहि लेल/ ओही व२

जयरोँ/ रैसरोँ

पँचभय्याँ

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे ज्ञास खा दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तैँ

होएत / रुएत

नधि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौँसे/ सौँसे

रँड /

रँडी (सोबाओव)

गाए (गाए नहि), क्रदा गाएक दुध (गाएक दुध नै।)

बहलौ/ पहिबतौ



ठमही/ थही

सरै - सभ

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- राँत

रूसरै - समयसरै

रूसलौ/ समयलौ/ रूसनदू - समयनदू

ठमवा आव - ठम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

होअन/ होनि

जाअन (जानि नै, जेना देत जाअन) ऊदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पअर/ जाअर

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, केँ, सँ, पव (शेछसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेछसँ ल२ क२) ऊदा दूठा रा रैसी
बिभक्ति सग बहनापव पहिन बिभक्ति ठाँकेँ सँ ठाँडु । जेना एमे सँ ।

एकठाँ , दूठा (ऊदा क२ ठाँ)

बिभाविक प्रयोग शिछक अन्तमे, रीचमे अनारथक करै नै । आकारान्त आ अन्तमे अ
क रौद बिभाविक प्रयोग नै (जेना दिअ

, आ/ दिय , आ, आ नै)

अपेक्षार्थक प्रयोग बिभाविक रैदनामे कवरै अन्तित आ मात्र वास्तविक तकनीकी
न्यूनताक परिचायक)- ओना बिभाविक संस्कृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ
रतनी आ उचावण दू ठाम एकव लोप बँहत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप
बहिने अछि) । ऊदा अपेक्षार्थक सेहो अंशेजामे पसेसिर केसमे होगत अछि आ
होचमे शिछमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो
एकव उचावण रैजौन डेटैव होगत अछि, माने अपेक्षार्थक अरकाश नै दैत अछि



रवन जोड़ेत छटि, से एकव प्रयोग रिंकारीक रँदना देनाथ तकनीकी कर्पे सेहो
अनुचित) ।

अगमे, एहिमे/ ईमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) ये (अनुस्वार बहिता)

भ२

ये

द२

टँ (त२, त नै)

सँ (स२ स नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगने

जै/जथ जेना- जै कावण/ जगसँ/ जगने

ई/अथ जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ झुदा एकव एकठाँ खास प्रयोग- नावति कतेक
दिनसँ कहैत बहैत अथ

लै/वथ जेना लैसँ/ वगने/ लै दुखारे

नहँ/ लौ

गेलौ/ लेलौ/ लेवँह/ गेवँह/ लेवँह/ लेवँ



ऊअ/ जाहि/ जै

जहिगाम/ जाहिगाम/ ऊअगाम/ जैगाम

एहि/ अहि/

अअ (राकक अतमे ब्राह्म / अ)

अअछ/ अछि/ अँछ

तअ/ तहि/ तै/ तहि

उहि/ उअ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

भनेही/ भवहि

तै/ तँअ/ तँअ

जाअर/ जाअर

नअ/ नै

छअ/ छै

नहि/ नै/ नअ

गअ/ गै

छनि/ छन्हि ...

समअ शेरदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै तखन समै जना समैपव
अत्यादि । असगवमे छदअ आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे अत्यादि ।

ऊअ/ जाहि/

जै

जहिगाम/ जाहिगाम/ ऊअगाम/ जैगाम



एहि/ थहि/ थग/ ए

थगहु/ थछि/ एहु

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तग/ तै

जाएरै/ जएरै

नग/ ने

हुग/ हे

नहि/ ने/ नग

गग/

गे

हुनि/ हुनि

हुकन थछि/ गेव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिक्जमेस लैंग्वेज एडीटिंग द्वारा कौन कप चुनन जेरौक चाही:

रौन्ड कएन कप त्राय:

१. होयरीना/ होरैयरीना/ होमयरीना/ हेरैरीना, हेमरीना/ होयरीक/ होरैयरीना / होयरीक

२. थग/ थग



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आ

३. क' जेने/क२ जेने/क३ जेने/क४ जेने/न/व२/नय/व३

४. भ' गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव

५. कव' गेवाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेवाह

७.

विश्व/दिश्व विय,दिय,विश्व,दिय/

१. कव' रैना/कव२ रैना/ कव३ रैना कलेरैना/क'व' रैना /

कलेराव

४. रैना रना (प्रकष), राव (मूवी) २

.

आइव आग्र

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुख १

२. चलि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवखिह देवकिह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखजेह

१५. छविह/ छवहि छविन/ छजेन/ छवनि

१६. छजेत/दैत छवति/दैति

१७. एखनो

अखनो



१४.

रैठनि रैठजन रैठन्हि

१५. ७१/७२(सरनाम) ७

२०

७ (संयोजक) ७१/७२

२१. कागि/कागिं कागगि/कागगु

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवन्हि/केवनि/कयवन्हि

२५. तखनत/ तखन त

२७. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२९. निकवय/निकवय

वागव/ वगव रैहवाय/ रैहवाय वागव/ वगव निकव/रैहवे वागव

२४. ७तय/ जतय जत/ ७त/ जतय/ ७तय

२७.

की बुबव जे कि बुबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(मोन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (मोन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंसय/ हंसय हंस



३४. लौ आकि दस/लौ किंरा दस/ लौ रा दस

३५. सासु-ससुव सास-ससुव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घीकावाञ्छमे २ रजित)

३८. जरौरै जरारै

३९. कबयताह/ कबयताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४१.

. गेवाह गधवाह/गयवाह

४२. किछु आव/ किछु ँव/ किछु आव

४३. जाध छव/ जाधत छव जाति छव/जैत छव

४४. पहुँचि/ भेटि जाधत छव/ भेटि जाध छव पहुँच/ भेटि जाधत छव

४५.

जरौन (हरा)/ जरौन(हैजौ)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/व२ कय/

क२

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.

अथिके अथिके

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ



ॐ.२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

ॐ.३. तहिना तेहिना

ॐ.४. एकव थकव

ॐ.५. रहिनउ रहिनोअ

ॐ.६. रहिन रहिनि

ॐ.७. रहिन-रहिनोअ

रहिन-रहनउ

ॐ.८. नहि/ नै

ॐ.९. कवरौ / कवरौय/ कवरौअ

ॐ.१०. ठ/ त २ तय/तअ

ॐ.११. भैयाबी मे छोट-भाए/भै/ जेठ-भाय/भाअ

ॐ.१२. गिनतीमे दू भाग/भाए/भाअ

ॐ.१३. आ पोथी दू भाअक/ भाअ/ भाए/ जेठ । यारत जारत

ॐ.१४. माय मे / माअ ऊदा माअक ममता

ॐ.१५. देखि/ दअन दनि/ दअहि/ दयहि दहि/ दैहि

ॐ.१६. द/ द२/ दअ

ॐ.१७. ओ (संयोजक) ओ२ (सरनाम)

ॐ.१८. तका कअ तकाय तकाअ

ॐ.१९. पैरे (on foot) पअरे कअक/ कैक

१०.

ताहमे/ ताहमे

११.

प्रतीक



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदिक ई पत्रिका बिदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानवीयिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१२.

रैजा कय/ कय / क२

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. कोवा

१५.

दिनका दिनका

१६.

तठहिम

११. गवरौवहि/ गवरौवनि

गवरौवहि/ गवरौवनि

१७. रौव रौव

१८.

छेह छिह(अश्व)

+०. जे जे

+१

. से/ के से/के

+२. एखनका अखनका

+३. भूमिहव भूमिहव

+४. सुगव

/ सुगव/ सुगव

+५. सठठाक सठठाक +७.

छुरि

+१. कवगयो/७ करैयो ले देवक /कवयो-कवगयो

+२. प्रवावि



प्रबोध

१२. सगड १-साँष्ट

सगड १-साँष्ट

२०. पधरे-पधरे पैरे-पैरे

२१. खेवधरौक

२२. खेलेरौक

२३. वगा

२४. होध- हो होध

२५. बूमव बूमव

२६.

बूमव (संबोधन अर्थमे)

२७. यैह यधह / अधह/ सैह/ सधह

२८. तातिव

२९. अधनाय- अधनाध/ अधनाध/ एनाध

३०. निन्न- निन्द

३१.

रिन्न रिन्न

३२. जाध जाध

३३.

जाध (in different sense)-last word of sentence

३४. डत पव आरि जाध

३५.

ले

३६. खेवाध (play) खेवाध



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानवीयिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१०१. शिकायत- शिकायत

१०४.

ठप- ठप

१०५

. पठ- पठ

११०. कनिष/ कनिये कनिषे

१११. बाकस- बाकस

११२. होय/ होय होय

११३. खडबदा-

खडबदा

११४. बूमेवहि (different meaning- got understand)

११५. बूमएवहि/बूमेवनि/ बूमयवहि (understood himself)

११६. चवि- चवि/ चवि गेव

११७. थपाय- थपाय

११८.

मोन पाडवखिह/ मोन पाडवखिन/ मोन पाववखिह

११९. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाय

१२२. जवनाय जवनाय- जवनाय/

जवनाय

१२३. होयत



१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरोवहि/ गबरोवनि

१२५.

टिथैत- (t o t e s t) टिथैत

१२७. कबखयो (willing to do) करैयो

१२१. जेकवा- जकवा

१२४. तकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसब स्थानमे/ बिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरयनहुँ/ कबरयनहुँ/ कबरयनहुँ कबरयनहुँ

१३१.

हाकि (डाका हाकि)

१३२. ओजन रजन खाकसोच/ खाकसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नए/ ले

१३७. रैचा नए

(ले) पिचा जाय

१३१. तबन ले (नए) कठत अछि । कठ/ सुने/ देखे छव दूदा कठत-कठत/ सुनेत-
सुनेत/ देखेत-देखेत

१३४.

कठक गोठे/ कठक गोठे

१३९. कमाय-धमाय/ कमाय- धमाय

१४०



. वग वग

१४९. खेवां (f or pl ayi ng)

१४९.

डथिह/ डथिन

१४३.

होखत होख

१४४. का कियो / केउ

१४३.

केश (hai r)

१४३.

कस (court -case)

१४१

. रैननाथ/ रैननाथ/ रैननाथ

१४४. जलनाथ

१४५. कबसी कसी

१४०. चवचा चर्चा

१४९. कर्म कर्म

१४२. डूराँथ/ डूराँथ/ डूमाँथ डूमाँथ/ डूमाँथ

१४३. एथुनका/

थुनका

१४४. वथ/ विथ (राकाक थतिम गेह)- व२

१४३. कथक/

कथक

१४३. गथ गथ



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानवीय सहित संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१.१

. रवदी रदी

१.१.१. सुना गेवाह सुना/सुना२

१.१.२. एनाअ-गेनाअ

१.१.३.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१.१.४. नहि / ले

१.१.५.

डरो डरो

१.१.६. कठह/ कठे कठी

१.१.७. डमबिगब-डमेबगब डमबगब

१.१.८. भकिगब

१.१.९. धोत/धोथत धोएत

१.१.१०. गप/गप्प

१.१.११.

के के

१.१.१२. दवरैज्जा/ दवरैजा

१.१.१३. ठाय

१.१.१४.

धवि तक

१.१.१५.

घुबि लोष्ट

१.१.१६. खोबकैक

१.१.१७. रूँह



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका बिदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

११३. चोँ/ चूँ

११३. चोँहि/ पद्यमे त्राह्य

१११. चोँही / चोँहि

११४.

कवरौंअ कवरौंअये

११५. एकेठा

११०. कवितथि / कवतथि

१११.

पहुँचि/ पहुँच

११२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

११३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

११४.

अनि (उचावण अणन)

११५. अछि (उचावण अगछ)

११६. एवथि गेवथि

१११. रिंतोने/ रिंतोने/

रिंतोने

११२. कवरौंअवहि/ कवरौंअवनि

करेवथिह/ करेवथिन

११३. कवएवहि/ करेवनि

११४.

आकि/ कि



१११. पहुँचि।

पहुँच

११२. रँगी जवाय/ जबाए जबा (आगि नगा)

११३.

से से

११४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे ली कए)

११५. खेव खेव

११६. खणव(spacious) खेव

११७. होयतहि/ होएतहि/ होएतनि/हेतनि/ हेतहि

११८. हाथ मटियाएर/ हाथ मटियारय/हाथ मटियाएर

११९. खेका खेका

२००. देखाए देखा

२०१. देखारैए

२०२. सबवि सबव

२०३.

साहेरै साहरै

२०४. गेलैन्ह/ गेवहि/ गेवनि

२०५. हेरौक/ होएरौक

२०६. केनो/ कएवहूँ/केनो/ केवूँ

२०७. किछ न किछ/

किछ ने किछ

२०८. घुमेवहूँ/ घुमवहूँ/ घुमेनो

२०९. एवाक/ अएनाक



२१०. अः / अरु

२११. वय/

वय (अर्थ-परिवर्तन) २१२. कनीक/ कलक

२१३. मरुल्ल/ सल्ल

२१४. मिना२/ मिना

२१५. क२/ क

२१६. जा२/

जा

२१७. आ२/ आ

२१८. भ२ / भ' (' काल्पनिक कमीक हातक)

२१९. निश्चय/ नियम

२२०

लेखक/ लेखक

२२१. पहिल अक्षर ट/ रौदक/ रौदक ट

२२२. तहि/तहि/ तहि/ ते

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

ते / तँ

२२५. नँ/ नँ/ नहि/ नहि/ले

२२६. ते/ लए / एवीहें/

२२७. छवि/ छे/ छेक / छग

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. आ (come)/ आ२(conjunct i on)

२३०.



अ (conjunct i on)/ अ२(come)

२३१. कनो/ कोनो/ कोना/ केना

२३२. गेलोह-गेवहि-गेवनि

२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केनो- कएनो-कएनहूँ/केनो

२३५. किछ न किछ- किछ ले किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. अ२ (come)-अ (conjunct i on-and)/अ । आरै-आरै /आरैह-आरैह

२३८. छथ-छैत

२३९. घुमेनहूँ-घुमएनहूँ- घुमेवाटे

२४०. एवाक- अएनाक

२४१. होनि- होअन/ होहि/

२४२. ओ-बाम ओ आमक रीछ(conjunct i on), ओ२ कहक (he sai d)/ओ

२४३. की छथ/ कोसी अएवी छथ/ की छै । की छथ

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४५.

. गोमिह/ सामेव

२४६. तै / तैअ/ तथि/ तहि

२४७. जौ

/ जौ/ जौ

२४८. सभ/ सरै

२४९. सभक/ सरैहक

२५०. कहि/ कही

२५१. कनो/ कोनो/ कोनहूँ/



२३.२. कावकती भ२ गेव/ भ३ गेव/ भ४ गेव

२३.३. केना/ केना/ कना/ कना

२३.४. थः / थः

२३.५. जने/ जनए

२३.६. गेवनि/

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२३.७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२३.८. वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)

२३.९. कनीक/ कनेक/ कनी-मनी

२३.१०. पठेवहि पठेवनि/ पठेवण/ पपठेवहि/ पठेवनि/

२३.११. निश्चय/ नियम

२३.१२. हेक्टथव/ हेक्टथव

२३.१३. पहिब अक्षर बहने ठ/ रीचमे बहने ठ

२३.१४. आकावातुमे रिकारीक प्रयोग उचित नै/ अपेक्षाकारीक प्रयोग हान्तरिक तकनीकी नूनताक परिचायक ठकव रीदना अरग्रह (रिकारी) क प्रयोग उचित

२३.१५. केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२३.१६. डेहि- डहि

२३.१७. वनेथ/ वनेथे

२३.१८. हेवत/ रुवत

२३.१९. जवत/ जवत/

२३.२०. आवत/ आवत/ आवत

२३.२१.

. आवत/ आवत/ आवत

२३.२२. पिअरौक/ पिअरौक/पियरौक



२१३. शुक्र/ शुक्र

२१४. शुक्रहे/ शुक्र

२१५. अतह/ अतह/ एतह/ अतह

२१६. जाहि/ जाग/ जग/ जै

२१७. जागत/ जैत/ जगत

२१८. आव/ अवन

२१९. कैक/ कक

२२०. आयन/ अवन/ आव

२२१. जा/ जग/ जग (नानति जा नगतीह ।)

२२२. वकन/ वकन

२२३. कृआव/ कृअवन

२२४. ताहि/ तै/ त

२२५. गायरै/ गावरै/ गवरै

२२६. सकै/ सक/ सक

२२७. सेवा/सवा/ सवा (भात सवा गेन)

२२८. कहत बही/देखैत बही/ कहत छोटो/ कह छोटो- अहिना छोटैत/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कवनो काव परिवर्तित) - आव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी रुदा बुमैत-बुमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचै/ रचैक। वखरौ/ वखरौक। रिन/ रिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आर बुमवैष। हमर बुमै छी।

२२९. दुआरे/ द्वारे

२३०. भेटै/ भेटै/ भेटै

२३१.

खन/ खन/ खुना (भोव खन/ भोव खन)



२९२. तक/ धवि

२९३. ग२/ गौ (meaning different - जनरौ ग२)

२९४. स२/ सँ (रूदा द२, न२)

२९५. त्र (तीन अक्षरक मेव रँदना प्रनकञ्जिक एक आ एकठाँ दोसबक उपयोग) आदिक रँदना त्र आदि। महत्र/ महत्र/ कर्त्ता/ कर्त्ता आदिमे त्र सहाँक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै छि। **रञ्ज**

२९६. रेंसी/ रेंगी

२९७. रौना/ राना **रँवा**/ रना (बँरँवा)

२९८

रावी/ (रँदलैरावी)

२९९. राता/ राता

३००. अन्तुबहिर्द्वय/ अन्तुबहिर्द्वय

३०१. लेमए/ लेमँ

३०२. वमडका/ नमडका

३०३. वागै/ वगै (

भैलैत/ भैलै)

३०४. वागव/ वगव

३०५. तरौ/ तरा

३०६. बाखवक/ बखवक

३०७. आ (come)/ आ (and)

३०८. पश्चाताप/ पश्चाताप

३०९. २ केव रारहाव शिर्छक अन्तुमे माव, यथासंभर रीचमे नै।

३१०. कठैत/ कठै

३११.

बख (डव)/ बँह (डलै) (meaning different)



३५१. तागति/ ताकति

३५२. खवाप/ खवारै

३५३. रौअन/ रौनि/ रौगनि

३५४. जाठि/ जाअठ

३५५. कागज/ कागच/ कागत

३५६. गिले (meaning different – swallow)/ गिरए (थसए)

३५७. बाह्दिय/ बाह्दीय

DATE-LIST (year – 2013-14)

(१४२१ क्रमवी साव)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.



April 2014– 4, 9, 10.

June 2014– 2, 8, 9.

Dviragaman Din:

November 2013– 18, 21, 22.

December 2013– 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014– 16, 17, 19, 20.

March 2014– 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014– 16, 17, 18, 20.

May 2014– 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan Din:

November 2013– 20, 22.

December 2013– 9, 12, 13.

January 2014– 16, 17.

February 2014– 6, 10, 19, 20.

March 2014– 5, 12.

April 2014– 16.

May 2014– 12, 30.

June 2014– 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MTHLA (2013–14)

Mauna Panchami –27 July



Madhushr avani – 9 August
Nag Panchami – 11 August
Paksha Bandhan– 21 Aug
Kr i shnast ami – 28 August
Kushi Amavasya / Somvari Vr at – 5 Sept ember
Hart al i ka Teej – 8 Sept ember
Chaut hChandr a–8 Sept ember
Vi shwak ar ma Pooj a– 17 Sept ember
Anant Cat ur dashi – 18 Sep
Pi t ri Paksha begi ns– 20 Sep
Ji moot avahan Vr at a/ Ji ti a–27 Sep
Mat ri Navami –28 Sep
Kal ashst hapan– 5 Oct ober
Bel naut i – 10 Oct ober
Pat ri ka Pr avesh– 11 Oct ober
Mahast ami – 12 Oct ober
Maha Navami – 13 Oct ober
Vi j aya Dashami – 14 Oct ober
Koj agar a– 18 Oct
Dhant er as– 1 November
Di yabat i , shyama pooj a–3 November



Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a- 5 November

Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November

r avi vr at ar ambh- 17 November

Navanna par van- 20 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 2 December

Vi vaha Panch mi - 7 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 January

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a- 4 February

Achl a Sapt mi - 6 February

Mhashi var at ri -27 February

Hol i kadahan-Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 Apr i l

Ram Navami - 8 Apr i l

Akshaya Tritiya-2 May



Janaki Navami – 8 May

Ravi Br at Ant – 11 May

Vat Savitri –bar asait – 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Hari vasar Vr at a- 9 July

Shr ee Gur u Poor ni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सब्ठा पुवान अंक ब्रैल-रिदेह अ. तिबहुता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अर्थक ३.०पत्रिकाक पहिर -

रिदेह अर्थक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

इडियो संकलनअ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४.मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>



३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

रिदेहक एहि सब सहयोगी क्रिकपब सेहो एक रेब जाड ।

३. रिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. रिदेह मैथिली जानबुत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. रिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. रिदेहक पूर-कप "भातसबिक गाछ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०. रिदेह अडेक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. रिदेह बागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पहिन तिवहुता (मिथिलासुब) जानबुत (रेबग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिन रेब रिदेह द्वाबा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>



१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pot hi .blogspot .com/>

१७. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot .com/>

१९. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot .com/>

१५. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paint ings-photos.blogspot .com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot .com/>

२०श्रुति प्रकाशन

<http://www.shrut i -publ i cat i on.com>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३.गजेन्द्र ठाकुर अडेकर

<http://gajendrathakur123.blogspot .com>


२४. मेना झुठका


<http://mangan-khabas.blogspot .com/>

२५. रिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पौडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress .com/>



२७.  Videha Radi o

२९.  Join official Videha facebook group.

२५. बिदेह मैथिली नाष्ठ ँसर

<http://maithili-drama.blogspot.com>

२६.समदिया

<http://esamad.blogspot.com>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com>

३१.अनचिन्हार आखर

<http://anchinharakharakolkat.blogspot.com>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai.blogspot.com>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com>

३४. बिहनि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३९.मैथिली समालोचना



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

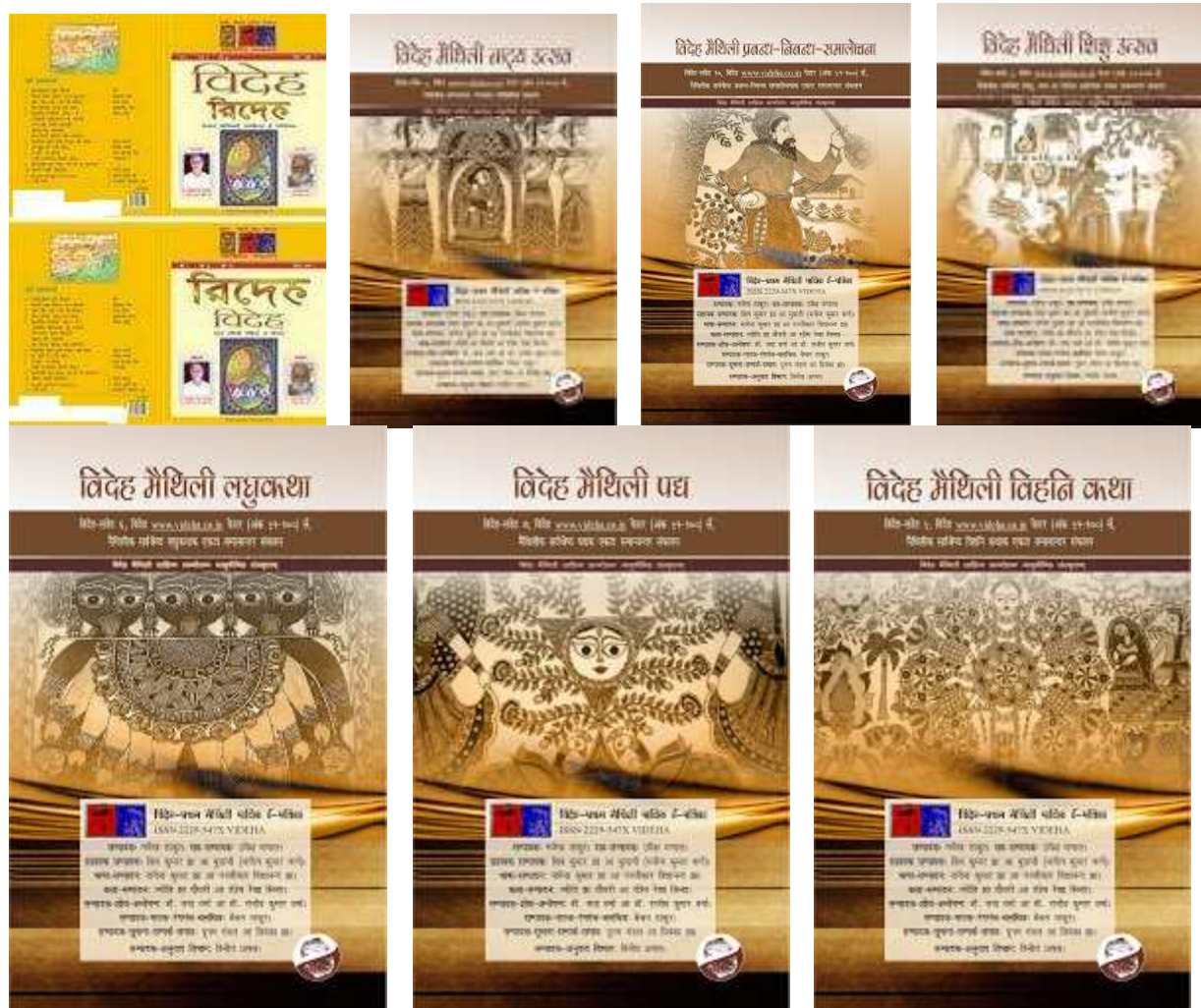
<http://maithili-samachna.blogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>





Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका विदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रिदेह:सदेह:१: २: ३: ४:५:६:१:१:२:१० "रिदेह"क प्रिंठ संस्करण: रिदेह-ङ-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क चूनन बचना सम्मिलित ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print -
version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may
write to shruti.publication@shruti-publication.com

रिदेह



मैथिली साहित् आन्दान

(c)२००४-१३. सराधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए
संपादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X
VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: डमोरी मंडव । सहायक सम्पादक:
शिर कमार सा, राम रिवस साहू आ कुराजी (मेलोज कमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन:
नागेन्द्र कमार सा आ पञ्चकवार रिद्यानन्द सा । कवा-सम्पादन: ज्ञाति सा चौधरी आ
बन्धि बेथा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अध्ययन: डा. जया रमा आ डा. बाजीर कमार रमा ।
सम्पादक- नाटक-वर्गमट-चवटिच- रेंचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद-
पुनम मंडव आ प्रियंका सा । सम्पादक- अन्तराद रिभाग- रिलीत उपेव ।

बचनाकाब अपन मौरिक आ अप्रकाशित बचना (जकर मौरिकताक संपूर्ण उतुवदायित्व
लेखक गणक मध्य छति) ggajendra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें
.doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब
अपन सम्मिलित पविचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठैताह, से आशी करैत छी ।
बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे ङ बचना मौरिक अछि, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु
रिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकाकेँ देल जा बहन अछि । मेर प्राप्त होयबक बाद
यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतब) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देल जायत ।
रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि आ ईमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह १३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना प्रकाशित कएल जागत अछि । एहि आ पत्रिकालेँ
श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ आ प्रकाशित कएल जागत अछि ।

(c) 2004-13 सम्पादिकाव स्वस्मित । बिदेहमे प्रकाशित सबैक बचना आ आकर्षक
सम्पादिकाव बचनाकाव आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन
किरा आकर्षक उपयोगक अधिकार किनराक हेतु ggajendra@videha.com पर
संपर्क करू । एहि सागठकेँ प्रतिता नारा ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ बन्नि प्रिया द्वारा
डिजाइन कएल गेल ।



सिंहिबद्ध

